

पृष्ठ	प्रकरण	पृष्ठ	प्रकरण	पृष्ठ	प्रकरण
६३	रजसहासनात्मक	७५	मूलफलमुहवास	६५	वीशोतलिकम
६४	गर्भाधानप्रकरण	७६	अशेषाकाचरत	६६	महादशाजनदशा
६५	गर्भाधानतत्वाज्ज	७७	घादराशीकोनी	६७	सूर्यचन्द्रदशा
६६	कुप्रा १६रात्रीमुन	७८	रासीस्वामी	६८	मोराभुशदशा
६७	गर्भाधानकोदीन	७९	ग्रहाकोईचितीव	६९	बुकेभुदशा
६८	गर्भाधानतीकाभा	८०	ग्रहभूमुनसंज्ञा	७०	योगीतीदशास्वामी
६९	गर्भाधानसुत्रपाह	८१	ग्रहकाजातीसंज्ञा	७१	योगीतीदशाक्रम
७०	गर्भाहगमुदी	८२	ग्रहकोस्त्रीपुरुषसं	७२	वर्षसंख्याअंतर्दशा
७१	गर्भापुसवगसंज्ञा	८३	ग्रहकोरूपवर्ण	७३	दशापरतेपूत
७२	वारफल	८४	ग्रहकोअंतर्दक्षी	७४	अंतरदशाकोषक
७३	सीमतायपतम	८५	दीशास्वामी	७५	सूर्यदीगांटीद
७४	पक्षदीदातीजी	८६	घादसलावसंज्ञा	७६	तीत्यदशाक्रम
७५	सीमसेसुरज्ञान	८७	केन्द्रादी १२स्थासं	७७	गोचाप्रकरण
७६	गर्भाध्यातीषेवमा	८८	साधनकादसरा	७८	स्थानपरतेपूत
७७	पुत्रकलाजहप्र	८९	जन्मकूमीज्ञान	७९	जिचपचकर्तवर्ष
७८	प्रसुतीस्थानेगमत	९०	प्रसवज्ञान	८०	चिन्तुवत
७९	गलकोतदारा	९१	जन्मकाहप्रका	८१	ग्रहकोनेवस्थात
८०	दंतफल	९२	विर्गासंकरज्ञान	८२	वारकोदोष
८१	प्रसुतीकामाह	९३	जातक	८३	ग्रहकोदात
८२	जन्मकाहफल	९४	तिराकाचक्रम	८४	ग्रहकोजपसंख्या
८३	गदांतफल	९५	स्त्रीजातक	८५	ग्रहपीडातीवारत
८४	तीजीहप्रगदांत	९६	अयोतरीदशा	८६	जातकर्ततामक
८५	गहनगदांत	९७	ग्रहकोअनर्दशा	८७	अवकहदाचक
८६	कृतचतुर्दशीफल	९८	सचमंभुमाहाद	८८	मंचकाराहारा
८७	अईसीफल	९९	ग्रहभुशरा माहाद	८९	दोहाहोहारा
८८	दीनसपफल	१००	वीशोतलिमाहाद	९०	दुग्धपातमुहर्त
८९	अपकातभनफल	१०१	दशाकोवर्षसंज्ञा	९१	तावुतलमारा



पृष्ठ	प्रकरणम्	पृष्ठ	प्रकरणम्	पृष्ठ	प्रकरणम्
१४५	लग्नमुद्दिष्टे	१५६	चन्द्रकोशपदेष		शुक्रसम्बन्ध
१४६	त्रीशांशादीकथन	१५७	आषादीशाचन	१६८	यात्राकोनसूत्र
१४७	आदौग्रहपदेष	१५८	शेनपूत	१६९	गर्गचार्यमुहूर्त
१४८	राशीस्वामी	१५९	आषादीकताम	१७०	वारपत्तेस्वराशुत
१४९	होराकथन	१६०	वर्गपत्तेसमसाय	१७१	पत्नीपतन
१५०	द्विष्काणकथन	१६१	लग्नसूत्रपत्तेसमसा	१७२	शरीरस्वातपत्ते
१५१	त्रीशांशापूतचक्र	१६२	गृहहाराशी	१७३	तामूलपूत
१५२	द्विशांशाकथन	१६३	अंशहीतकोप्रका	१७४	भंगपुराकोप
१५३	बीजमत्रीशांशा	१६४	धरेकोताम	१७५	ह्रीकोपंगफुफ
१५४	समत्रीशांशा	१६५	गृहकोजतअत्यदो	१७६	नत्रफुफ
१५५	षडूर्ग	१६६	वालुचक्रकोताम	१७७	प्रश्नप्रकाश
१५६	उर्ध्वकोसम	१६७	गृहारांजनाम	१७८	तिष्णादीप्रश्न
१५७	वर्गनीचार	१६८	मासपूत	१७९	दासचक्र
१५८	लग्नांशापूतम	१६९	गृहकोनागार	१८०	राशीचक्र
१५९	वर्गोतमसमसा	१७०	पुषदीशापत्ते	१८१	गार्गोहनेसीच
१६०	गोमुलीकलग्नक	१७१	गृहारांजतसूत्र	१८२	समचक्र
१६१	वज्रप्रवेसुर्ध्वमाह	१७२	वषचक्र	१८३	कपीवर्ममुहूर्त
१६२	मुद्रकोपुतवीवाह	१७३	शीलाप्याश	१८४	दीनमानरात्रीमात
१६३	उर्ध्वकोताशादी	१७४	शेषकामुष		
१६४	दत्तपुत्रमुहूर्त	१७५	दुष्टयोग		
१६५	वालुप्रकरणम्	१७६	कुर्मचक्र		
१६६	आषादीजगुक्त	१७७	लंनचक्र		
१६७	ग्रहवहगृहवर्ज	१७८	ह्रीनरापतेमुहूर्त		
१६८	गृहपुकी	१७९	तिष्णादीद्वारचक्र		
१६९	आषादीजगुक्त	१८०	गृहप्रवेसचक्र		
१७०	ग्रहजातकम्	१८१	गृहामुष्यप्रमान		
१७१	वर्गस्वामी	१८२	प्रश्नाक्षरपूत		
१७२	काकीनी	१८३	यात्राप्रकरणम्		

इत्युक्तमणीकाजी



१ प्रजव	१३ प्रमादी	२५ रवर	३७ शोचन	४९ गदस
२ वीजव	१४ वीक्रम	२६ तंद	३८ कीची	५० अमल
३ भुक्त	१५ वष	२७ बीजये	३९ वीभावमु	५१ पीजल
४ प्रमोद	१६ बीजभातु	२८ जये	४० परानव	५२ कातयुक्त
५ प्रजापती	१७ मुलातु	२९ ममय	४१ प्रवेज	५३ मीधार्थी
६ अजीरा	१८ तारतु	३० मुमुष	४२ कीतक	५४ रोड
७ श्रीमुष	१९ पायव	३१ हसतवी	४३ मोम्य	५५ दुर्मती
८ भाव	२० व्यय	३२ वीहवी	४४ शाजारत	५६ दुडुली
९ मुवा	२१ सर्वजीत	३३ वीकारी	४५ वीरोचकत	५७ हरीगोली
१० धाता	२२ सर्वचारी	३४ सावरी	४६ परीचावी	५८ रत्नाली
११ ईश्वर	२३ वीरोवी	३५ प्रव	४७ प्रमादी	५९ काचर
१२ बहुधास्य	२४ वीकृती	३६ अलंकृत	४८ आनंद	६० काय

सम्भवतः सारपत्रम्

प्रजवादी गुणकृत्वा नीनी तूतनकारयतः ॥ सप्तनी सुहेरुकागं
सर्वकृषं भुजा भुजसः ॥ १ ॥ एवं चत्पारी दुर्निक्षपं च दान्यां सु
नीनी के म ॥ शीघ्रे तु सप्त ॥ रोयं सुतपीदा तसं सयः ॥ २ ॥
प्रजवसम्भवतः देवी ईस्का तु नसम्भवतः छती गता ईदुता गारा ई ईमै माई कम्
जर्नुवा कीरुका अंकता ई ॥ लेना गदी तु नो वचत इस्को भुजा भुजा परत
जातु ॥ ४ ॥ शेषरस्मान्ने तपो दुर्भीस ५ ॥ २ ॥ रहस्यो मुनी छे ३ ॥ १ ॥ रहितवराव
रपरत अहसु न्यरहता लोकमा ईमवर्षा दा जातु ॥ जसो की कसे हे मोच्यो
नीने सम्भवतः १ ॥ २ ५ ॥ मावी क्रमता मसम्भवतः इस्को फल यसो धुता गी ॥
जुवापः ॥ तस्को क्रम यसो हो की वी क्रम सम्भवतः प्रजव देवी १ ॥ ४ ॥ छे तस्को
डुता २ ॥ नो ते म ॥ मा ३ ॥ क्रम गदी २ ५ ॥ वाच्यो ते सता ई ॥ लेना गदी दो ४
शेषरस्मान्ने सवर्म मा दुर्भक्षि यमो क्रम ते जातु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सम्भवतः राखी प्रमाद

पुगं भवे चत्सरपंच के न पुगानी व दामवर्ष च स्थानवती
तेषां मनी देवता भुक्ते म न वक्ष्यामी मुनी प्रतीताः ॥ १ ॥ वी
वाजीवः भुक्ते दह गत्व द्वा अही बुध पीताः ॥ वी भे देवा

रानी शिखर गौरी शिखर रास कुतु

[illegible]

अथादीकरसासीसुपतेनोगतवसनादीकइतिगुह्यम्

प्रतापराज

चेचाडिकर १२ मेहाको १११ कतुहुदयसाप्रकारे १२ मेहामाह रातुहुद
सादनीनदेसमादेवपीतकार्य ॥ रानीप्रसीधद

इति कृत्यकरशास्त्रः ॥

मासप्रकरण

उर्वरासीपरीत्यज्जुडतश्यातीतास्करः॥संक्रमारवास्यामासर्वध

नमोये ॥

१

॥

॥

॥

॥

॥

पुर्वीसीताई धो दी इतरसी मासुर्यगेपे संकाती नदी कहो न से सषादी क
संकाती १२ इन्वते से हाई सौरमास नखर से हाको १ कतु ३ कतुको १ अय १२
अयनको १ वर्ष जानु

शोक

दसविंशी मास मुपे तीचा दुसोर तठाना स्करा सी लो गात ॥ श्रीशदिनं साव
नमः शर्मा पीता सनमी दोन जशा म्पयामः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
शुक्रपती पदोदपी अमावास्यात क जामे कहो तिस्को नाम चादु मास ओ सुय
१ गमी लोगी दुसरा सी माग पधो सोर मास कहो न ओ २ नचन को चडम
तनो गमा नचन मास हुन

मेहाको नाम सुय ओ देवता

मधुसूता मास वसंत कश्चि शुक्र शुभो आचन लो न नमः ॥ तनुपुर्क
असहा सहस्रतपसा पम्पस्य जा क्रोतः ॥ १ ॥ असुरो माघ सुमु
ये विवेका सा तं तथा ॥ चैत्र मासे वेदो गातुर्वेसा पयवचः ॥ २ ॥ अ
वसासित नान च दुआ पो छत पेतो वी ॥ जनी सि आवे ते मास मय
माना दुपे दत्ता ॥ ३ ॥ सुवर्गारेता अयुजिका ती के च दी वा कः
मार्ग सी र्षे ते पन सी नो पवी सुः सहात ॥ इत्येते द्वादसा दी ता मा
स ता मा त्य तु क्रमात् ॥ ४ ॥ केव मार्ग री र्षे तु पोषे ता राय ते वी दु ॥
माच व माघ मासे ते जा वी द मज फा लु ते ॥ ५ ॥ चैत्र वी इतु तथा
वा ध्या दे मा षे मयु सु द न ॥ वी वी क्रमं तं चा उपे दे आ पो दे वा म
त वी दु ॥ इ आवे ते श्री चर वी धी ह पी के संतु न्ना डे के म आ श्री ने प
दु गान च ड जे दा मो द र वी दु ॥ ७ ॥ मार्ग री र्षे वी मा ता की पोषे त
व श्री अ दे व ता ॥ माघे तु र्क मती प्रोक्ता फरा ने व्वा वी ता म का ॥ ८ ॥
चैत्र मासी र मा दे वी वे सा षे मा ही ती तं चा ॥ पद्मा द्वि जे म मा से तु
आ पो छे क मे ले ती च ॥ ९ ॥ कान्ती मती आवे ते च चा डे तु अपरा
जीता ॥ पद्मावती अ श्री ते तु रा यो दे वी तु का ती के ॥ १० ॥

१२ मेहाको नाम १२ मेहाको आदीत १२ मेहाको द्वादसे देवता १२ मेहाका द्वाद
देवीको नाम आत ह ले पी मा को को द मा हे त लि स्प द मा तु म हु न

	मासताम	मासताम	मुर्घे	देवता	देवी
१	चैत्र	अजु	वेदांज	वीशु	रमा
२	वेसाख	माधव	मातु	मधुसुदन	मोहिती

३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२

१ मेहा
वहुत
हाम

मेहा
कहत
शकु
देवता
कहत
अती
नख
तामे

धानि

३	अठ	भुक्त	ईद	श्रीवीरभ	पद्माक्षी
४	आषाढ	मुनी	रवी	बामन	कमला
५	श्रावण	तन	गजसि	श्रीधर	काशीमती
६	भाद्र	जलस्प	चम	हृषीकेश	अपराधीता
७	आश्वीन	ईष	सुवर्तरता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊऊ	दीवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्ग	मह	मीन	कमल	वासुताक्षी
१०	पौष	महस्प	वीर	तारायन	सुंदरी
११	माघ	तप	अरु	माधव	रुक्मिणी
१२	फाल्गुन	तपस्प	सुय	गोविन्द	धानी

वारपरवेमासफलम्

पंचार्कवासरीगापचनोममहद्वयम् ॥ पंचार्कवासरादु
भीतिशेषवाराभुनप्रदाः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

१ मेषाभाप आहतवारप ह्योनेते रागवहुत ईतपत हुद्धेते सो ५ मंडुतवारपोमा
वहुतनय हुद्धेते सो ५ रागी आवारपोमा दुर्जी दहुद्धे वाकोरहे का ४ वार प्रतीने
हामा पापपह आये माभुन फलदी ते हुद्धे

पक्ष

पुर्वाभास इह ही पक्षो पुर्वापरेतौ सीटनीतसंज्ञो पुर्वभुदेव
स्वपराभवेन केचि कृत्सीत पंचमीतः ॥ १ ॥ मोदो मुक्तप्रव
तिव केचो कृत्सीपीमासेक ॥ २ ॥ ॥ ॥

मेषाभापुर्वदत परदत हुद्धेते सहाई पक्षन द्धते सो पुर्वदत भुन पक्ष अपरदत
कृत्तपक्ष कहिं ध अभाते सुक्त पक्ष का प्रतीप दो देवी पोये मास सभ भुक्ततप
हा कृत्तपक्ष का प्रतीप दो देवी अभा वामास सभ कृत्तपक्ष कहिं ध भुक्त जो हो सो
देवता हुक्को हा कृत्त जो हा पीनी को हा को ही आचार्य का मत सा भुक्त पंचमी देवी
कृत्तपक्ष का पंचमी सभ भुक्त पक्ष कृत्त पंचमी देवी भुक्त पक्ष का पंचमी सभ कृत्त
अगील द्धते सो प्रव भुक्त पक्ष तंदत तर कृत्तपक्ष ते सहाई अभावमा सो मेषा
भुक्त के से कामत मा कृत्त पक्ष का अतला भुक्त पक्ष हुद्धेते सो हाई पुर्णमास
तो मेषाभा न द्धते

अधिकमास

वात्रिशद्दिगते मीसेई नैचोदस नीताभा ॥ घटीकाताचतुकेन पतत्या

श्रीकृष्णसकः ॥



۱۱

1

11

57

३२ मे का १६ गीत ४ घटि अकार जबी के मे का को सखन वहु २५ यसा वसी दक
पीना दन

५५५५५५

असंक्रांती मासोऽपि मासः स्फुटं स्यादसंक्रांती मासः क्षयः
कदाचित् ॥ अथः कार्तिकादि त्रयेनामरः स्यात्तदा वर्षमासोऽपि
मासो द्वयं च ॥ १ ॥ अमावस्यादये चैव प्रतपसु त्रयं त्रयम् ॥ महमा
सम्पदी त्रयोपारः सरवनीयया ॥ १ ॥ ॥ ॥

पुनस्तत्राग्रेहीतमेकादशमासहृदयमजुतमेकादशमासमासपद
 मासयमासहृदयमजुतमेकादशमासमासपदमासपदमासपदमासपद
 मासपदमासपदमासपदमासपदमासपदमासपदमासपदमासपदमासपद

मीकान्तमीरामको

गौतम्यडालैदेभीतैसाककालेतीयोरीनदीप्यमवागाअ
सूर्य॥गजाप्रगिनुमीसायाप्रापसोऽमकुवेदुवर्षेः॥
वीजोकुमीअ॥१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पहिले पुन साकमा क्षयमास नया होला तेहासा के देवी १४१ वर्ष का जन्म क्षय
मास आईन्दा अस्य पहिले कोही १६ वर्ष मा क्षय मास आईन्दा क्षय मास १६ वर्ष दे
वी पहिले अववा अतार पती आईन्दा तेस्को (प्रत्यन्त) ईदा हरु १४ साके मा
क्षय मास चुकला अतएरी क्षय मास आयो तत्ते १११५, ११२५, ११३० साक
मा आईन्दा अस्य से देवी अधी १४१, १६ वर्ष का पछि क्षय मास आईन्दा य सो जानी
आचारगुरु

गोपीप्रकरणम्

मामन्नाइ उन्नयावदुगयेतावेदेवदु॥ मावन्तीगणया द्रानीता
वत्तमिधयक्रमात्॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

चैतने साषादि से के से कहा ही ई १२ जो मे द्रोत स्का ताई ते ही नाई को व सत्र
जस्का ला उछे तस हाई मा ल न क्ष न जानु (इदो र्त) चैत ने द्वा के चीना वेसा
पमे द्वा के बीशापा इधे मे द्वा के जहा मे ई प्रे का ते पुर्वी पाठ अवाग पुर्व
भाउ अमी ती कती का मृगा सीर्षा पुष्पा मघा पुर्व फाल्गुनी मेही के मते मे
द्वा के तक्ष न जानु मे द्वा का तक्ष न ड पीन्दी न का तक्ष न सम्ये गदा जो संखा

वन्दे ते ही संप्रदायी की जातु तदि मे ह त्रिंदा मा पोरी मा लो मे ह ही गेता
वावै गती त जा ड न्द

तीर्थोपहाती

प्रतीप सिद्धिदा प्रोक्ता दुती जा कार्य सा चरी ॥ तृतीयो रोगे
द्वितीय हाती दा की वचतुर्थी का ॥ ४ ॥ सुला सुपंचमी के
पावष्टी का व मुना मता ॥ सममी तु मुला जिया अष्टमी का
धीता ही ती ॥ ५ ॥ मूल दानी तु वही दुवदा दशमी का ॥
पकादसी तु मुला दा हासी सर्वसीद्धिदा त्रयोदसी सर्वसीद्धि
शेया चोगा चतुर्दसी ॥ पुष्टिदा पोरी मा जे या त मा वासा
मुना ती थी ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रतीप दा दो सोह दी की को मुला मुल फलान हो ले के का च के हती ते जा ती र्द

स्वामी

वन्दे वी री ची जी री जा गेरा स फवी रा पो डी व कृ न्दो ह स ॥
उवा गी को वी हरी स्म शर्व शशी चे ती पुरा न दृष्टा
॥ १ ॥ अमा प्रा पीत र प्रोक्ता स्वीती ता मन्वी पा क मा त
पही हे व ता या का १५ ती की के १६ देवता पती १७ ही चक्र वाट सष्ट मा तु मुद
स हा

मनुचन डा च जया चरी का पुरो गी ती सर्वा सी चय क ता सु ॥
कती वृ मन्व प फला च मुने क दो न व तू त म म न्य होता ॥ १ ॥
१६ ती की के स हो रो स्को मु क कृ ल नो द प ती मु म ति हो पा का को द च के द प ना हो
जा ती र्द

पालत

कृष्णा डं व हती फलानी ल व तं व र्ज ती हा म्हा त यो ते ता चा म हा
क दो व प्र व ता शी र्ध क पा हा व क म ॥ १ ॥ श्री प्या वां म म सुरी
का फ ह म यो व ता क स ह म नु ॥ धु त स्वी ज म तं क मा त प्र ती
पु दा डी व व मा पा तु श ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रासिद्धीमाजुतजुतवसुसेवतगर्तुहृत्सोपतीचक्रवाट्स्मृमात्राहुत्तजसहा
 छीरीपाततजम्बर

तीर्थीकार्यती

तदासुचीनासववास्तुतंचक्षेत्रादीकुर्वीततयेवतीलम्॥वीवाहचुपा
 राकटाव्ययतिनद्रासुकार्यारावपीपादीकाती॥१॥अपासुसं
 ग्रामबहोबपोगीकार्यतीसीअत्यपीतीमीताती॥रीक्रासुवीद्वय

शालीफल	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	तीर्थीपात
१. सीद्धि	अग्नी	तडा	असुल	सुल	कुलीराडा
२. कार्यसाध	ब्रह्मा	नडा	असुल	सुल	बनवीरा
३. आरोग्य	गोरी	जया	असुल	सुल	तुत
४. हाती	गरीस	रीक्रा	असुल	सुल	तीह
५. मन्त्र	मर्ष	पुता	असुल	सुल	अपीता
६. असुल	स्वर्ग	तडा	मन्त्र	मन्त्र	तेत
७. सुल	सुग	नडा	मन्त्र	मन्त्र	अमता
८. व्यापीता	शीव	जया	मन्त्र	मन्त्र	तरीयत
९. मन्त्र	दुर्गा	रीक्रा	मन्त्र	मन्त्र	लोका
१०. जयरा	मन्त्र	पुता	मन्त्र	मन्त्र	वीवीदा
११. शुद्धा	वीमदेव	तडा	सुल	असुल	मीला
१२. सर्वसी	हरी	नडा	सुल	असुल	मुसारा
१३. सर्वसीदी	मदत	जया	सुल	असुल	लीता
१४. ईशा	सीव	रीक्रा	सुल	असुल	सहता
१५. पुदीरा	चन्द्र	पुता	सुल	असुल	जुवा
१६. असुल	पीता	०	सुल	असुल	असुल

घाटसीदीर्घीपादीसम्यादीचयातीसीदीम्॥२॥पुर्णवसंजरे
 वीवाहवाशोपासीकरात्रीकर्णकार्यम्॥सैदेवदसेपीत
 कर्मभुक्तमात्रदीदव्याचुमेगताती॥ ३ ॥ ॥

तदातीचीनेतेको॥१॥११ ईत्यात्रातदादीककर्षदेवताहसकाईसाहवर्ष
 गहसंधीकर्मपुसरोकोहीदेवीकालकोदुसरागर्तुजग्राकाहीतदीतववहा
 गात् वजातईत्यादीकृत्यसुलफलदीतछलद्रादीतीचीको२॥१२ ईत्यावी
 वाहआनुषतगादीरचवणीइत्यादिगर्तुवारोवताईतुपोदीककर्षईत्या
 दीगर्तु जमानतेको३॥१३ ईतीजीमापुष्पगर्तुहसकाईपपागीवावा
 वदुकईत्यादीसम्ववताईतुतसहकार्यसीदीहुत्तरीक्रालतेको४॥१४
 ईतीजीमाकसेकोतासगर्तुदअचवाअनीचारादीसीदीवीषमसारादीकर्म



जगत्सिमीदीहृदपुर्णातीजीनतेको ५११११ ईतामंतकार्यवीवाह धाना
 अर्चादपरदसगमतपोदीकअर्चातवाकीकर्मइत्यादीगतुअसोमी
 आकेवतपीतुसंवर्णीकार्यगतुसंगतकार्यसर्ववातीसीदद

अमावास्यायोग

अमावास्यानेवेदोरोमदानुमीसुतस्ये॥ जारुवीस्नातमा
 चेगाडोसहस्रफलंतेत॥१॥ अमावास्यासोमवारतरवीवा
 रेतसप्रसी॥ चतुर्थीसोमवारतवीपुवत्सहस्रफलं॥२॥ सी
 तीवाहीकुहवापीयदीसोमदीतेनवेत्॥ गोसहस्रफलं
 त्वातंचेहोतीताकृत॥३॥ दधचडासीतीवालीन
 दधडाकुहसहता॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

अईसीमङ्गलवारपुनोनेतेदीतजंगामातमानगतीहजारगोपातगरेको
 फलसीह अईसीमोमवारसप्रसीआईवारचतुर्थीअईमङ्गलवारपुनो
 तनेतेवीपवतेसकातीकोफलसीह अईसीकाक्षितचतुर्दशीयेनतेपासीती
 बाहीतामगरेकाअमावास्याहृदचतुर्दशीयेतनेतकुहतामगरेकीहुतेते
 दातसडवारपुनोनेतेसदिमतवोहीस्नातगर्तसहस्रगोदानकोफलसीह

अमावास्यायावतीपाटयोग

अवतामिध्वतीयाद्रातागदैवतसस्तके॥ यद्रासारवीवा
 कोरवतीपाटसईयेते॥ १॥

अवतअईसीचतीयाआडाअशेषमसिराईतईसाअईसीआईतवाह
 पुनलोनेतवतीपातयोगहृद

अर्द्धदशयोग

माघमातीरवोदर्शवतीपातेअवान्विते॥ अर्द्धदयानीवो
 योगसुर्यपर्वशताधिक॥१॥ सयमुक्तोदीवापोमकीरीसूत
 महोदयः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

माघनेस्नामाआईतवारअईसीवतीपातअवततचनेतपुनलोनेतेअर्द्ध
 दशयोगहुदसायोग१००सुप्रहृततासाअवीकहुईतयोगमाकेहीते
 केलोनेतमहादशयोगपद

कपीतापदी

अभीतेकहापसेचपदपानोमोचरोहीनी॥ वतीपात
 सदापदीकपीतातपुनदा॥ १॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

आभी त क ह कोष धी संगत वीरो ही ती त क न वी पा र भोग से त नो न रे
क पी ता ध धी हु रे सो म न पु न द ये क हु रे

वाहूती योग

वाहूते त स मा पु न्ता म नो पु न्ता न पो द सी ॥ गंगा पा प दी त ने ट
मु र्ध ग ह से त स मा १ म ती वा र स मा पु न्ता सा म हा वा हू ती स्मृ ता ॥
सु न यो ग स मा पु न्ता हा रे रा त लि पा य दी ॥ न हा न हे ती वी र व्या
ता न्नी को टी कु ल सु दो र ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
वे न कृ त न पो र सी रा त ता को हे पु न्ता न ले ते स दी त गं गा जी को स्ता न ग स्यो
ज न वा गं गा प्रा प्री मा न नो नो र प ती १०० सु र्ज ग ह न को स मा न फ ल दी न्द स र्
वा ले पु न्ता नो त ने त हा हा वा हू ती जा नु सु न यो ग ते पु न्ता श ती म्वा वा र श ती म्
वा त स न मा प स्यो न रे मा हा वा हू ती यो ग जा नु सो ती त को टी कु ल को डी वा र

पुगा दये

१००० क व ती का ती के पु न्ता वे शो र व च त ति य का ॥ त यो द र्श यि ते
कृ त्मा त्वा द र्श य फा लु रे १ का ती के ५०० कृ त्मा र न स्ये ता र
भ लु मा च व ॥ फा लु रे द्वा प रा र न मा र ॥ अ मा धी ती क र ॥ २ ॥

का ती के पु न्ता त व ती वे स ष पु न्ता ती या आ भी त कृ त्मा र पो र सी फा गु त क र
अ र्द सी ई ४ ती यो पु गा दी जा नु का ती क र कृ त पु ग को प्रा ॥ अ वे स ष मा र वे ता
पु ग को फा गु त मा वा प को आ भी त मा क ती पु ग को श र म हु रे

पुगा दी स्वामी

क मा न्द नु र्ही र व धा पी त र स न दे व ता ॥ ती ता त र व न सो र्ते
गं ग द ॥ आ धू गा दी पु ॥ १ ॥ स ता पु गा द य पु न्ता शु
भो व र्जा म ती धी लो ॥ त वा द य त ती या तु स र्व क र्म सु रो
न ता ॥ २ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
वा गु ग को दे व ता क र्म लो श र्ती ह री उ स्या पी त् ई ४ जा नु चो पु गा दी मा
ती त पु न सु र्ग र्गो ई स त ग र्ग पु गा दी हा पु न सु न पं दी त र सु न क र्म मा
व र्ज ग र्ग प र्ग र्ग ई स्या उ द ये त ती या स र्व क र्म मा पु न जा नु

प्रपादये

आभीतवमीमुक्तामाघमासेतुमप्रमी ॥ जोडेवैत्रे तृतीयाचकार्तीकघा
दसीतजा १ आषाढदसमीप्रोक्तादेवमासेतुपौर्णिमा ॥ आषाढा
फाल्गुनीचैत्रीकार्तीकीपौर्णिमातथा २ जोडेकृत्तावमीप्रोक्तापो
षत्येकादशीसीता ॥ अमानाडपेदसासीतकाडासिजयसिप्र ॥
अत्रमासासुपेकातावीहेयाः परिकीर्त्ताता ॥ ३ ॥ ३ ॥

आभीतमुक्तावमीमाघमुक्तासप्रमीजाडमुक्तातृतीयाचैत्रमुक्तादिपा
कार्तीकमुक्तादादसीआषाढमुक्तादसमीजेठकीआषाढकीफाल्गुनीकीकार्ती
ककीपौर्णिमाजाडकृत्तावमीपौषमुक्तायेकादसीजेदेकोअउसीईतीवी
मत्यादीजानुयसापौर्णिमान्तमेकादशतगरेकोछ

४ अष्टमीसाकास्वामी

रवीः मुक्तामहीसुतुः स्वर्मातुजातुजोवीधु ॥ बुधो रहस्यतीमे

तिदीशामीशासनाग्रहा ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

पुर्वदीसाकास्वामीसूर्य आग्नेयेदीसाकास्वामीमुक्तः दक्षीतकापंगहामोऊते
कोराहुपश्चिमकाशमीश्वरः बोधेयकाचकुंताकाबुधः ईसातकारहस्यतीच
साकजहोजोवीदीसाकाः जोवीस्वामीजातु

ग्रहकोजमी

ब्राह्मिणो जीवमुक्तेचक्षत्रीयो नोमनाएकरो ॥ सोमसोमोवीशो

प्रोक्ताराहुमंदौतयापेजो ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

तवग्रहमा रहस्यतीसकः वासनाग्रहसूर्यः क्षत्रीबुधचंद्रः वेसराहुशमीमुड
राहुकेतुपतीसुडहुतयसोजातु

ग्रहकोवर्ग

रक्षावंगाकाशितोमोतोमुक्ततीशकोः ॥ राहोमोवीतवर्तोशमी

राहुसीतोमुक्तो ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

मंगलसूर्यकोहातवर्गः शुक्रबुधकोरोतवर्गः रहस्यतीबुधकोपहीहोवर्गः शमी
राहुकोस्वामिवर्गः केतुपतीस्वामिवर्गः जातु

वासाजोकोकर्मजगुहसोकरहस्य

राजानीषको र सवपातसवागोवही संवो च सस्व कर्म ॥ सुवर्त
तामो रितिकर्म का व संयात पा एपा दी रवो वी द ध्यात ॥ १ ॥

राजानीषक ताताप्रका का महेस्व सवा र का उपा वसु यात्रागर्तु रासेवा
जादिगोहकोहीत दीत वही कर्म हवन कर्म मंत्रसहको जे डायत प्रयोग कर्म औ
षधी दीतु तरवा कता पुन्यात गनु सुवर्त का गहना वताई तु हगाई तुतामाका वसु
हीन दीत ईत हे वगे को वसु चोरा को वसु का व दी वसु सी हात पराई ईत्यादी सी
चहु न्

सातवार

शरवा डामु म्भारज तेनु नो ज्यस्त्री व स क क्षा बु वी नुषताया ॥
जीत कृतु धी रवी का म्भ जी पुष्पा वरा र न गा वी तु वार ॥ १ ॥
शेषक सत मोती चादी ई बु नो ज्य पदम स्त्री नो ग व धनी न ज ह अ ह
का गार्तु व जाई तु य ह द ही ची ई गा ई नो सी पुत व स ईत्यादी कर्म श
ईवा गनु

मंडुतकार

जेदा र तसे य वी पा गी श स्र व ज्जानी धाता ह व सा ह दे ना ॥
मेता नी वे सा का चातु हे म प्रवात र का ती कु हो वी द ज्जात ॥ १ ॥
वीगा गनु म सत्य कर्म चारि वी पा दी कर्म सस्व कर्म मरुता स पु ह क प द
इ म्भ से तारा व गुरु वां गी पनु चातु सुवर्त मुगा ईत्यादी कर्म मंडुत वा गनु

बुचवार

प्रेपुण प पुण पा अ प त क हा म्भ शी ह्या दी सेवा ही पी हेषता ती ॥
चातु की पा का चत यु त्रि संची व्या पा म वा दा अ बु ज्य वी चे पा ॥ १ ॥
चातु र्य पु रा म अ ज्य ये त क हा का ही ग णि सा ह्ने स वा हे प नु त स वी पी
चतु चातु को की पा सुवर्त सं व ची कर्म मी त ता कर्म म ह त मा त वी मा
वा द ईत्यादी कर्म बुचवा गनु

गुरुवार

अ म्भ की पा पो वी क म रु वी डा मा ग ले ह मा व वे स मा वा वा



अथ नैपत्यवीनुपगादीकार्यवीदव्यात्सुरमंतीवो ॥ १ ॥
 धर्मगगर्तुपौष्टीकअर्चादसानीकर्मधरुपागादीवीद्यान्मासमंगह
 कार्यसुवर्तवस्त्रगृहसंवन्धीकर्मपागात्नअस्त्रजोषट्आभुषतादी
 कर्मवहस्पतीवागर्तु

शुक्रवा

स्त्रीगीतरायास्त्रीगीरतेजश्वस्त्रीत्सवातंकातादीकर्म॥ नृपय
 गोकोशकपीक्रीपाशसीच्यतीमुक्तस्पदितेसमस्तः ॥ २ ॥
 स्त्रीगाइतुशय्याहीराभनीवस्त्रजश्वईत्सवआभुषतपृथ्वीसंवन्धी
 कर्मगाईगोहृषडाखेतोईत्यादीकर्मशुक्रवागर्तुमुक्तहुन्द
 शरीवा

होहारमसीमत्रपुशस्त्रदासपापाततसोपवीषासवीधम
 गृहप्रवेसदीपवचदीसाक्षिरचकर्माकमुतेषुकर्जात ॥ १ ॥
 फलामपप्रसीसागडूतवाहनातोईत्यादीपापअसत्यचोरीवीषको
 अण्पतोकाहगृहप्रवेसहस्तीवचनस्त्रीकर्मईत्यादीकर्मशरीश
 रगर्तु

वारकोदेवता

सूर्यादीतारिवशीवागुहविशुकेतुकाताक्रमेनपतय
 कहीताग्रहाताम॥ वन्धुवन्धुमीहरीशुक्रराचीवीरंचीवी
 रंचीसोषांपुत्रमुतीवोरचीदेवता ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
 शिवपार्वतीषडाततवीहृषडाईदुकाताई७कहेतेआईतगारादी
 वारकोदेवताजानुअहुअगीजतनुमीहरीईदुईदुतीब्रह्माई७क
 महेआदीत्यादी७वारकाअचीदेवताजानु

वारदोषा

तवारदोषाप्रनवतीरात्रौदेवेजोदेतेजोदीवाकराताम॥
 दीवासमाकाकजन्मुतातासर्वत्रतीद्यावुधवादोषा ॥ १ ॥
 वहस्पतीवारमुक्तवारजाईतवारई३वारकोराचीमादोपेदेतसईवातमी
 वारमंगलवारई३वारकोदीतमादोसनमातुबुधवातासमगतीन्यद

साप्ताहिकारकृत्यमाह

सोमसौम्यगुरुमुक्तावासा सर्वकर्मसुलवन्तीसीद्विपुत्राणां
 तुलोमशरीवोषुचप्रोक्तमेववतुकर्मसीद्विपुत्राणां १ ॥ १ ॥
 सोमसौम्यगुरुमुक्तावासा सर्वकर्मसीद्विपुत्राणां रवीमंडलशरीरितवासा
 केरुकाकापेसात्रकोरीद्विपुत्राणां

होला न्यगा

रवीसापकांतीवीतरतीससीनुमीतये ॥ मृतीतद्वीसौम्यसुप
 तीगुरुवीतहरतमः ॥ वीपतीदैत्यानांगुरुमपीहनीगातुगमनं ॥
 ननांतैलान्यपसपदीकुहेतसूर्यततयः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 रवीवारमातेहलग्नामासतापदुस्सौमवारकांतीसंगहवासाप्रत्यूच
 वासाहनीप्राप्तगुरुवारमाचततासमुक्तावावीतोप्राप्तअसगीवासा
 तेहलगार्डकोहेसंपतीवचतेजानु

वस्त्रपरिचानम्

जीर्णवोसततमवुनीगर्दमीदौनौम्यमुच्येवुचदीनेच
 लेवेतायः ॥ जानायेसन्त्रीगीनगोप्रायसंगमायंमदेम
 लायचतवावरवांतरसातः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

रवीवाकादीतगताकपदाहगार्डकोहेचोदोपुएतुहुंस्सोमवारहगार्डनाले
 मोचकांतीमीतस्तातकाउहेतेसनेदीसोहुंस्संडुतवासाकजानुवुचवा
 चतप्राप्तीगुरुवारशातप्राप्तीसुक्तावासीचप्राप्तीअहमतीअवासातजाक
 पदाहार्डदासवैमईहहुंस्सोचकजानु

शमभु कर्म

जातुसासंक्षपयतितवासप्रमार्तेदुसुतुनौममावै
 वीतरतीसुलवाचतःपंचमासासैमप्रेवदुईशसुरगुरु
 मुक्तापकारसंतीप्राहुर्गर्गप्रनृतिमुतयःधोरकायंषु
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

रवीवारकपाहर्षईहा १ मैहाआयुतासोमवार ७ मैहाआयुवृद्धी गुरुवारमा १०
 मैहाआयुवृद्धी शुक्रवार ११ मैहाआयुवृद्धी मङ्गलवारमा ७ महहाआयुता
 राजानुचोवातगर्गहस्तगारुडजादीमुगीलेकोकर्मकावीषयमाभनेकोछु

वीधारन

वीधालसुगुरुसीतशेचनीवार्चदायीकर्तुआ

पुष्पिरामपीकोतंमुमातमचकोवतीहापुंसोन्नवतीतु

उतापंचतानसीपुत्रेदायासुतावपीचमुनयकीतयंयेव

आद्या ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

गुरु शुक्र बुध ईश्वरमावीधारनईमार्तमवीडाहुन् वींजीवीपतीहोहा
 रवीवारमासुचमसोमवारमावृद्धीजडमंगलवार शनीमत्पुचोवातगारुड
 गर्गदीलेनेकोछु

अचनसत्रप्रकरणम्

नक्षत्रातयतप्रकारमाहः

ह्रीमाघमाससिधौयुक्वीचुनोअशेषीतस्यादुदुशेषसं

ख्या ॥ माससुबुक्तादीतसुवबोच्यः कृषोदिहीतंभुनयो

वदंति ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

चैत्रादीकणमेकासासहाईदुतागर्गुईस्माभुक्तादीमासेदपीतीचीमीहाईतु
 फेरी १ कसगर्गु २ कान्तागहीतुजोसपवच्छत्योतसत्रजानु (परंतु)
 कृष्णपक्षमा २ कसगर्गु २ कान्तागहीतुजोशेषवच्छत्योपतीतसत्रजा
 नुचोवीशेषवातवसीयादीमुगीलेनेकोछु

अचमुनामुनतसत्रम्

अग्नितीतुमुनाप्राक्ता नरगीतासकारीती ॥ कार्यधीक
 तीचोकारोहीतीसीदीदानुचै ॥ १ ॥ मृगाशुनः शुनः आर्द्रा
 मध्यमसुपुनर्वसु ॥ पुराषः शुनः सार्कमनापुर्वीसुक्ता
 सप्तम्यदा ॥ २ ॥ ईतराहस्तबीत्राशुवीद्याहस्तबीशुनप्रदा ॥
 स्वातीवीशाषेत्यमुनेमैत्रंसवार्चसीदीदम ॥ ३ ॥ ज्येष्ठा
 मुतंक्रमातोअंशमतासावर्जहातीदम ॥ बीजवृक्षावैद

वसुवृक्षीवृक्षी सुष प्रदा ॥ ४ ॥ वासवं वासवं रोवं मुनं प्रदं
मृती प्रदम् ॥ उत्तराणां दुर्कं श्रीं देवती कामदा ॥ ५ ॥

अष्टमी तीज जाति देवी रेवती तं क २० तक्षत्र को फल तक्षत्र को वनास्पृशु दुर्क को व
मांजं क दुर्गुला मुन फल १६ वी २० तक्षत्रापी हेतु

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
आ	न	क	रो	म	आ	पु	पु	आ	म	पु	ई	ह	वी
मुन	नाश	कामासी	मुन	मुन	मुन	मुन	शोक	नाम	मृ	वी	दी	तक्षी	मुन
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
स्वा	वी	अ	अ	पु	पु	ई	अ	अ	अ	रा	प	ई	रे
अमु	अमु	सी	क्ष	ता	अ	क्ष	वृक्षी	वृक्षी	मुष	मुन	कला	मृ	होती

नक्षत्रपातय

नेशादहमया गी कदुगीरीशः प्रोक्ता ह्यदीत्यंगीराः
सर्पाः कव्यन जो नगोय सरवी त्वष्टा रुद्रा मास्तः ईडा
उती त्वष्टा मी दुर्गुती कती तीती रं वी मे वी वे कुं ठो वसुधा
सज्जि कवर्त हिरु अ पूषा नी जा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
अष्टमी तीज जाति देवी रेवती प्रजेत २० तक्षत्र का २० स्वामी तक्षत्र को व मोहनी हे स्पष्ट दुर्क

तक्षत्रः	स्वामीः	तक्षत्रः	स्वामीः	तक्षत्रः	स्वामीः
१ अ	अष्टमी	१० अ	पीतर	१६ अ	गीर्कती
२ अ	यम	११ पु	तग	२० पु	जल
३ ह	वृक्षी	१२ ई	अर्जमा	२१ ई	वीशे देव
४ रा	ब्रह्मा	१३ ह	रवी	२२ अ	वीची
५ म	ईड	१४ वी	त्वष्टा	२३ अ	वीशु
६ आ	शीव	१५ स्वा	वायु	२४ अ	वसु
७ पु	अदीती	१६ वी	ईलायती	२५ रा	वसु
८ पु	अगीरा	१७ अ	मीत्र	२६ पु	अजैकपात
९ आ	सर्प	१८ अ	ईड	२७ अ	अर्जु पूषा

अधोमुखा तलना ॥

मूलाग्रसुमघादीदेवन्नरीसर्पातीपूर्वात्रयज्योतीर्वी
द्वोरचोमुषहीतबकंज्ञानामोदकीतीतिंबापिकुपतरहा
जागर्तपरिरास्वातोतीचसृष्टीकोपोद्युतवीहप्रवेसज
नीतारनः प्रसीक्ष्मतीच ॥ १ ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

मूल कृती का संध्या वीराणा नारी आश्रया तीत पूर्वा ई ई नक्षत्र को अंधा
मुष तई हो ई नक्षत्र मावापी कृप तई खात दोरा बांधत गादत अस्ती का
तत जुवा बीत प्रवेस गरी तसा स्त्री रुई तपी का कार्य जो हूत सवे अंधा
मुष तक्षत्र मागर्तु

उर्ध्वमुषलक्षणातीः

पुष्पाद्राश्रवतोतराशतशीपकवाहधनीकाहृयाश्वी
स्मातोतवादीतानीमुनीनीनीषामात्ययेतेषुतु॥ प्रामा
दवृजचर्मवारणागुहृवाकारसुतोतराशोच्चापारमवीवी
हृतिनारपतेपहृनीषकादीच ॥ १ ॥ ११ ॥ ०॥

पुष्पाडातीतीनेउतरासततारकागहीतीधतीकाईतंनकाऊधनु
षसंष्याअर्हातगईहोईनतमनमोदेवातपेचजमंदपादीजहकोषतोत
चादतीबगेचागज्जालीपेकईयादीकार्यजगुभुनहुदु

निर्घण्डुरवत कथागीः

उपवादीत्यकराजी गोमूतसिद्धिपौष्या नुराजाती तत्र
 वारवाती वदंती न्यामीती मुनयुक्ती र्धनुरवागपुतुः॥
 अम्भोजो बहुलायरा सबवषार न्यादीं दांत्यमि गोः॥
 जंवी यंचरुहप्रवाहजमगारं नाः प्रसी ह्यती च॥ १॥

ॐ स्वाः पुनर्वसुः हस्ता जम्बीती मृगशिरा ५ तुला स्वाती चित्रा ईरतक्षत्र
 शीर्षा मन्त्रा ज्येष्ठा मृगशिरा ५ तुला स्वाती चित्रा ईरतक्षत्र
 कुकुट ईको ववहार गार्ग्याती माह्वतु हस्त चतुर्दश पात्रा परेदस जातु
 ईती कर्म मादाषेदत

भुवनेश्वरी



चरत सत्रा ती

बेइतक नच पुत पुत वसु माह तच चर पंचक तिद म्दती

वाजी काल पवाहता ऽ राहा या तवीची पुप्रशस्यते ॥ १ ॥

अवत जती वा सततारका पुत वसु माही ई ५ तसत्र चर सहा जालु ईत हाई
चर पती न्द २ ई मा हाती घोदा बाह २ र ३ र ३ की वधे चार वरी द तु वधे च
हगाई तु सवारी गर्तु ई सवे का म सी द हु न्द

उग्र त सत्रा ती

पूर्वी फा गी ती प मंल के म चेतु ज पंचक मी द जय गर्तु

वा शा ह्य ता रा वी प घात व च तो सा ह श स्य द ह ता दी

पुस्त त म ॥ १ ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥

पूर्वी फा गी ती पुर्वा पाठा पुर्व नाड नर ती सघा ई ५ तसत्र ई ज सहा जालु
इत हाई चर पती न्द २ ई तसत्र मा मुर ख ता गर्तु ता स गर्तु वी व प्रयो ग गर्तु
मार न मोहन बन्ध त ई सा ह व स्य दा ह ई त्या दी स पुर्त क म चो दो सी द द ये क
हु न्द

मीम्र त सत्रा ती

हय वा ह न पुत द्वा देव त मी म्र स त्र म च मी म्र क र्तु ॥ स्वा ती

धा त ऽ रा म क सा च ते की ती ता नी रा क ता ती मुरी ती ॥ १ ॥

कृती का वी सा वा ई २ तसत्र को धि प्र स हा जालु ईत हाई सा चार त पती न्द
ई त्या ता मा तु मी मी त का र्म ग ती ले क ती ई म ह त हा न हु न्द

अंघा दी त सत्रा ती

अंघ क त द तु मं द हो च ती म च्य हो च त मी त सु तो च त म ॥ रो ही

गी प्र न्द ती न च तु द य मा ही जी च ग रा ये तु त पु त ॥ १ ॥

सही ती प्र भ ती २ तसत्र को ज न म द हो च त म च्य हो च त सु तो च त ई ई सहा
क म स ग जालु ई द हा त रो ही ती अ च म्र ज ती ए मं द हो च त आ डा म च्य हो
च त पुत वसु सु तो च त पुष्प पुत अ च अ म्हा पा म द हो च त म च्य म च्य हो च त
पुर्वा सु तो च त उ त रा पुत अंघ य सा प्र का र हे २ तसत्र को ज न्ना दी क स हा जालु

तद्व वसु परी ता त सा ह



अथ हेतुतेसी धुं मद के वदी तत्र पात ॥ मज्ज क च चतु षष्ठा
 तत्रा प्रा ती सुतो च ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥

कैसे हे प्रसन्न हो पाणिउतती मेरा हरा पा को वसु के ही ते सी ह्या तब वी चर
 गर्तु अं च सं स क त क्ष व हा ग त व सु त प ज च वा अं च क त क्ष त्र मी ए च्छ क ले प्र
 मगरे को न पे व सु ज ही सी ह्य ल लु म द हो च त म ल ए ती ह दी त म मी
 ह्य ई ४ सी म मी ह्य सु तो च त म ह रा पा को न पे पा ई दे त न ती दी तु

अथ दी क हा त म

अथ के पुर्व तो व सु म द के व दी त तथा ॥ प मि त म ज्ज ते त न्च
 ई त र सु तो च ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥

प्र ह न ग र् त हो मो चे की व सु कु दी सा ह्य त व जं च क त क्ष व हा ह रा पा को न पे पु र्व
 दी सा त र्प ह्य ल लु म द हो च त म ल प द सी त दी सा म द ल लु म ज्ज हो च त
 म ल य प मि त र्प ह्य ल लु सु तो च त म ल पे ई त र त र्प ज पे को ह्य ल लु र स य
 दु द

प्रकारान्तरे त रा व व सु ता ना ता च हा त म

अं जे य द्य प्रो प ते व सु त र्प क द्या त्वा प्यं म द ते च च त इ त ॥
 इ रा त आ नं म ज्ज ते व त ल न्यं ने श्रा त वं ते व ह ल स सु ते ॥ १ ॥
 म च त क्ष त्र म ह रा पा को न प त र क्षे म पा ई ह्य म द हो च त म ल पे व द्य
 क द्य सं ग मी ह्य म ज्ज हो च त म ल पे अ ल ह रा स म नार म त्र सु ती ह्य पा
 ई त सु तो च त म ल पे र व व र प ती रा त म त्र प ती पा ई त

त ल च दे श्री जा त व सु प री हा त म

म द्य दी म र्प म तं च स मी प व सु ह्य प ते ॥ ह स्या दी व सु प र्प त म
 म ह स्य च ह्य प ते ॥ १ ॥ त रा त ह्य म तं तु स्व गं क व सु ह्य प ते ॥
 अ त्मा दी सार्प प र्प तं म द द्य दूर गं त च ॥ २ ॥ ० ॥ २ ॥ ० ॥
 म द्य पु र्व पार्श्व ती ई त र पार्श्व ती ई ती त न क्ष त्र म ह रा पा को न य अ च क
 प्र ह न ग र् त यो न क्ष त्र म रे को न पे स मी पे सा मी ह्य ल ती दी तु ह स्य ची त्रा स्वा धी
 वी सा पा म तुरा ज्ञा जे व द्य पु त पूर्वा पा दा ई त रा पा दा म व त च मी ह्य ई १ ॥ त

मज्ज क च चतु षष्ठा



क्षत्रमा हरापाको नये जठवा प्रहका लाई तो तलनने पे दुसरा कोसे का
 हात मा तो वसुध बदा कष्ट संज सी ला न तु रात तार का पुता ड रेवती अ
 मिती नरुती ई ५ तक्षत्र नये जठवा प्रहका त ये ही तक्षत्र पक्षो को नये
 तो माह जा फ तो घर मा छु सी र्छ ल ती दी तु कृती का राही ती नृग सी रा आ
 डी पुत व सु पुषा अक्षमा ई ७ तक्षत्र मा हरापा को नये जठवा प्रहका राही त
 क्षत्र पर को नये हरापा को वसु के से प ती पाई ल

अथ गत व सु स्या त मा ह

तीनी बार चतसत्र बहुरास सती तम ॥ दी क सरव्य मा ह तं
 चैव सप्रती वी न जे तु न ॥ ऐ के त न त ह ड व द य चै द्रा ड
 सं स्थितं ॥ तृ ती य ज न म न्य स्य मं तरी क्ष च तु र्ज के ॥ तु ष
 स्य पंच मे तु स्या त ष डे जा म य म न्य गं ॥ स प्र म न स्या म
 न्य स्य ही त त त्र मं ह रा म ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
 प ह ग रे का दी त को ती नी बा र त क्षत्रे प्र ह ई का स व अ डु को सं षा जं वा
 गरी १० त ग तु र ७ का क्षा ग दी तु र जो स ष व च ड ई स को फु त १ व च हो मा
 रु का पे का छ २ व नो ज ते का ही ना दा मा छ ले तु न्ब च ज ठ मा ४ व च अ तरी
 क्ष मा ५ व च क सी ग र मा ६ व च ता ग व र मा छ ल ती जा नु

अथ संधारं ल म ह त मा ह

रा ड पी चो वा रु त पो र ह ते या म्ये सा प ते क्रु ते चै व जी षा प ॥
 पु र्वा षे पु त्री ष्व पी मे ष ड क्रो म धा रं ल का ल वी वी पु रा ते ॥ १ ॥
 आ डा म धा श त तार का ते व न न र ती अ क्षे मा म ल ई ३ पु र्वा ई १० त क्षत्र मा
 म द ती का ह त आ रं ल ग तु ल ती का हं जा ले न रु वी ह स ते न ते का छ

वसु चार त त क्ष त्रा ती

रा ही ती पु कां पी च के षि ले न्य तौ रे पु च पु त र्व सु द पे र व ती
 पु व सु द व ते च ले त वु व स प री धा त मी ष्य ते ॥ १ ॥ १ ॥
 रा ही ती ही ती ह ला ची न्ना स्या ती बी सा म अ तु रा च ३ ड ता पु त र्व सु
 पु ष रे व ती च ते व्हा ई १२ त क्षत्र मा त जा व स चार त ग तु र सु न ह त



दुष्टदीनेपीवसुचारुमाह

वीप्रहयाचोहोहराहाप्रीतापीतंचयत॥ तींदीपीणये
पीवारापीवसुचारुपुत्रगुर्वुचाः॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥
ब्रह्मन्काजाहोतेवीवाहमागजाहोतेपुत्रेदीमाकोवसुचारुगदीवतीपा
तीपातादीदुष्टदीनेतपरेमापतीदोषद्वैतनीआर्यहस्तेनतेकोह

मोतीसुतमतीरनवसुचारुवीची

कासत्यपोषावसुलेकरपंचकेचमार्तिउन्नैमगुस्त्रंवीश
शोकवारे॥ पुत्रसुवर्गमतीवीदुमदंतशंपरकांवरातीवी
चतातीनवंतीसीये ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥ ० ॥ १ ॥
अग्नीतीरेवतीचतीकाहसाचीत्रास्वातीवीसाषाअतुएचाईतक्षत्र
मारुवीनैमगुस्त्रपुत्रसोमईवारमाप्रीतीसुवर्गमतीमुगाहातीदात
शंपकालपत रत्नवंस्त्रईतादीवसुधारुतगतीमुनहुह

कसीवेचनक्षत्राती

पोषावेवकराचितीचीत्रापुषेवासवसुर्वसुमेत्रासेंदेव
अवगावेचदीकाततीहृशंतीमुनयाहीसीपुतां॥ १ ॥
रेवतीअवतअग्नीतीहसाचीत्रापुषाचतीकापुनर्वसुअतुएचा
मृगसीराईतक्षत्रमावातषकोकातेहृदतुलनेतमुतीप्रमातह

अनप्रासतक्षत्राती

रेवतीमुतपुनर्वसुहसावास्तवतपचगपीदीतेयच॥ अरुपु
जदिहंहीनवाअप्रासतंतुक्षुपीलीपचगाताम॥ १ ॥ १ ॥
रेवतीअवतपुनर्वसुहसावेहीतीमृगसीराआर्द्राईतेरईतक्षत्रमा
वाहचलाईअनप्रासतंगुर्गईतमहुह

क्षौरकर्मनेक्षत्र

पुष्यपोषाचअग्नीतीचंदेवचशाकेहसाघेत्रीकेनेषदीत्य॥
क्षौरकापेवक्षवाद्यत्रेचमुक्तानैमादीत्यंजातंगवार॥ १ ॥

भोर कर्म वर्ज्य ती —

अवस्थानो र्कर्मः॥

→ अस्यापवादमाह →

राजकार्य की युक्तता का तय कांसी जीवी कां॥ १॥ शमपुरा
मगरवन्दे कासी का हवी शोचतं॥ १॥ तारा शुद्ध कोर
रवीगुह शुद्धावत दीक्षा शुक्ली शुद्धी पात्रा मां सर्व सुद्धः



राशिनि ॥ १ ॥ ० ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

राजकार्यमाजेनीयुक्तदुःखसुखं वा बहुमं विहायकोजी वगयसैदीप
 १५ दतीतलाईसो वरोम तडईत्यादीवताईकाकार्त्तविकारअवस्पष्टुय
 सोकृषीप्रमातदु) सोरकर्ममातसुत्रतागवर्तयहनगर्तलाईदीसा
 ग्रहनरवीगुरुबुद्धीयात्रागर्तदीपसुदीअरुवाकीसपुनकाकासु
 माचदुसुदीअस्पहेतुपदु

सितवस्त्रं

पेषुपेषुप्रशशतीसोरकर्मसंख्य ॥ तेषुतेष्वंवांसी
 तषदंतादीतेषतमखतं ॥ १ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

गुनदीनमादोरकर्मअधीकहाकोदईदीनमादंतावस्यतडका
 तडईसादीकर्मगर्त

मोडीवस्त्रम्

सोम्यपोषावेवासवारवेहलास्वातीलापुष्पानीनेषु ॥
 कुसुदीलांमेषलाबंनमोकोसंस्मर्यतेतूतमाचार्यवर्ये ॥ १ ॥
 मृगसीराभवतचगीकाहलास्वातीचीत्रापुष्पअंभीतीपुनर्वसुईत
 क्षत्रमाकस्यतीवाचतुजाचार्यकामतहेप्रुतहुत

वीवाहृतक्षत्रम्

मुहमेवमृगरोहीरागीकरेपौष्पांमासुतमोचोतरातीते ॥
 तीर्त्तिकातीहडुलीमृगीदशापागीपीदतवीचीवीवीयेते
 मुहअगुगामृगसीराहीतीहसरेवतीस्वातीमद्याईतरातीवे
 जयसातक्षत्रमावीवाहृतगर्तमुहहुत

अजीहोत्रचारतक्षत्राती

प्राजापतेपुषनेषदीदैवपुष्पजेवास्वेदकृतीकासु ॥ ५ ॥
 ज्याजातंमृगरातांनयेपीमेवप्रोक्तंजातंतेवीप्रमुखे
 राहीतीरेवतीवीसापापुष्पजेवामृगसीराईतराकृतीकाईत
 क्षत्रमाजगीहोत्रचारतगर्त

ॐ
वीणासतननाती

मृगादीपंचषपीनेषुमुहेहसादीकेचत्रीतयेऽमितीषु॥पु
र्वानयेचअवेनेचतद्वीद्यासमारंनमुसंतीसीधे॥ १॥०॥
मृगसीराऽर्जः पुनर्वसुपुष्यऽश्लेषा मुहः हस्ता चित्रा स्वाती ज्येष्ठी तीः २पुर्व
अवतर्हः तक्षत्रमावेदसास्यादी ज्येष्ठासर्गर्तजारस्तार्गु

ओषधीमहेतलनम

षोष्णाहमंवादीती नक्षत्रेच हस्तत्रयेच अवतत्रयेच॥ सौत्रेच
मुहेचमृगेचरासोनेषज्जकर्मप्रवदंतीसंतः॥ १॥१॥॥
रेवती ज्येष्ठी तीः पुनर्वसुपुष्य हस्ता चित्रा स्वाती अवतः ज्येष्ठा सततारका
अतुरावा मुहः मृगसीरा ई तक्षत्रमा ओषधीग्रह न गती हेचोदेरोगेडशीकुम्भ
रोगार्तपलनपमातेस्कोमुनामुनहेतुः

स्वात्माहेषारौद्रपुर्वानयेषुमुहेनौसेसूर्यजेसूर्यवारेतदा
रीक्रोषवरोगाप्रवापीर्मत्पुत्रेयः करेरेधीतापी॥ १॥
स्वाती अश्लेषा ३पुर्वः अश्लेषा ई तक्षत्रमा नौस सती रवी ई वाहसा प्रती
पदाषष्टी यकाडसी चतुर्थी तवमी चतुर्दसी ई तीथी मासे रोगार्तपल
नयेकोद्यन्तेमत्पुहृदः सैकरुचार्त शिव जीपती तेस्कोरद्यागर्तसकडेन
रोगमुक्तीप्रमातमाह

व्याप्युत्पतीर्यस्वपौष्टे समैत्रे प्रातःकालं जायते तस्य क
क्षातः॥ वैशेषे सौम्ये रोगमुक्तीस्तुमासा दीशतस्यादा
सरागांमघासु॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

रेवती अतुरावा मा रोगार्तपलनको नते तेस्को तीवातः अतः क
हृदः ई रषाज मृगसीरा ई तक्षत्रमा नयेतेस्को १ महेवावीतेपक्षी
रोगतासहृदः मघातक्षत्रमा नयेतेस्को २० दीशारोगीतासहृदः

पक्षाध्वसोवासेसदीदेवेमूलाश्विथरगीचीषोयतवा
हृतः॥ यास्येवावेदेइतेववाहृतेचनेक्रुपुंस्यान्मृतमेका
॥ दसाहृतः॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इसा रस रस रोग ईत पत्त नये १५ दीक्षा ता स हु र च तीषा सुत वीसाषा
 अन्धीगी कृतीका ई तक्षत्र मारोग ईत पत्त नये १६ दीक्षा ता स ताती
 चीना अक्षर शत तारका ई तक्षत्र मारोग ईत पत्त नये १७ दीक्षा ता स जानु
 अक्षि व ध्ये तीष्य स श पुनागे प्राजा पत्ता दीत्ययो सप्ररात्रा
 त ॥ रोगा न्ध मुक्ती जर्जयेते मानवानां ती संदीप्य ज ह्यीतं
 जर्जमुष्ये ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ईत रसा उपदा पुष्प पुर्वा फार्गु ती अन्ती जीत पुनर्वसु ईत क्षत्र मारोग
 उत पत्त होये १ दीक्षा ता स रोग को यस्तो गार्गी दी कुषीते ती संदेह नये कोष

रोग मुक्ती स्तान्ता वार तक्षत्र वर्ज

ई सो वरि नार्ग वे च ध्रुवेषु सार्पा दीत्य स्वाती युक्ते षे ॥
 पीन्ये चांते ये च कुर्यात् कदाचीनो बद्धा तं हीत रोग मुक्तस्य
 जंतो ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

रहीती ईत फार्गु ती ईत पादा ईत राउ पदा अश्लेषा पुनर्वसु
 स्वाती मघा रेवती ईत क्षत्र मा सोम मुक्त ईवार मारोग मुक्त स तुष्य
 लाई रोग स्तान्ता गार्गु

रोग मुक्ती स्तान्ते दीत मुक्ती

राजे चरे सुर्ग कुजो जर्क वारे रीक्षा तीषी के दुवले चरिते ॥
 के दुत्री को तार्ग गते च पापे स्ता न हीत रोग वी मुक्ती का ना
 म ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

शेष कर्कट तुला मकर ईत रस मंगल रवी शरी ईवा मा चतुर्थी
 तवमी चतुर्दशी ई तीषी मा चतुको वत हीत हु र के दु ज हा त रगा
 चतुर्थ सप्तम दसम तको त म ठा त तव म पंचम अर्धा त दीती यवा
 तमा पाप ग्रह नया यस्ता दी त मारोग मुक्त लाई स्तान्ता गार्गु मुक्त
 हु र

स्तान्ता जो अक्षी वक्षारो पत तक्षत्रा री ॥

सा वित्री तीष्या श्री ती वाहगा ती मूल वीशा पाच म दु अवाती ॥
 ततो पची पाद परा यने पुन मुक्ती नाती प्रदी पादी तानी ॥ १ ॥



हस्तपुष्पअम्भीती शततारका मूलवीशाषा बीजा अतुराचा मगसीरा
 रेवतीरोहीती ३ ईतगाई तलत्रमा लता जो वची वलादी रोपतु मुनहुने
कुपारसुततलचारापाह

हस्तत्रयेवासबवासुतचरो वपीअत्रीतीचे कोतराती ॥ प्रा
 आपत्येचापी तलत्रमाहु कुपारलेअवमाया मुनीका ॥
 हस्तबीजा स्वाती जेवळा तलतारका जार्जा मधा ३ ईतगा रोहीती ई
 तलत्रमा कुपवगाई तलत्रमा जेनु तारदादी मुनी मुनी लेततेकोछ
इव्यदी तुअसुरावतु

साचारतोअवबुवदासुरागेव्येची प्रोपेय दत्रद्रवी तंप्रयुक्त ॥
 हस्तगवीसेववसुप्रतव तलेतेतती पत कदाचीत ॥
 कृतीका बीसाषा ३ पूर्वा लगी मधा मुत जेवळा जार्जा असेपा ई
 तलत्रमा कसेताई धनडवराषतदी तुकी ई चतुतवतपोनतेतो
जतफीराई तुतपावस्यसोजातु

क्रुणाग्रहततलत्राती

मदुपुष्पाचीतीचेववीसाषा अवतत्रयम ॥ पुतर्वसु
 चसंशंती चतादीतीचीवर्ततम ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 बीजा अतुराचा मगसीरा रेवती पुष्प अम्भीती बीसाषा अवत
 चतीव्याशततारका पुतर्वसु ई तलत्रमा क्रुणाती तुमुतदा येकछ
अन्यदपी

हस्तोर्कवोरसंकातो यदृगां स्यात्कुलेषु च ॥ वृद्धी योगे
 तव योशय मरावेदतु कारयेत ॥ १ ॥ क्रुणां लो मेतगराही
 यातदेयं बुचवारे ॥ क्रुणावेद कुलकुर्पा सचयं सो मतद
 तम ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 हस्ततलत्रा रबीवा संकाती योगवची योग ई तमा क्रुणाती तुदीतु
 हेतसीयेदपी सजेव ठदछ असुरी तती रेदपी घटेदेता छ ॥ १ ॥ मं



गहवार मान्द्राकसे सीत तती तु अस्वुचवार मानदी तु मंगलवारमा
आदागर्तु बुचवारमा पती बुजहुद

गजमुहुर्तमाह

हस्तनेपे सोमपुद्गरी नये च पोषा ह्यपुष्प पुनर्वसु ॥
मेत्रे पीसर्वा ते पीकुंजरा तां सर्वा तीशमा मखी हाती पाती ॥१॥

हस्त नीचा साती मजसीरा म्रवत च तीषा शततारका रेवती मखी ती
पुष्प पुनर्वसु अतुरावा ईतलनमा असुरी कातीची (अर्चात) ४।६।१४ सोम
वार येती हाई छोदी हाती वेचतु खंदगर्तु हाती हाई अतंकारा दी हाती
संबंजी कर्मगर्तु पुनहुद यमा वसीव आदी कपी ते ते के कोह

अममुहुर्त

पुष्प अवीद्या म्मी ती सोमने पुपोषा ती हा दीत्य करा ह्येषु ॥
सवा हतर्ले पुवुचेः सता ती सर्वा ती कार्या ती तुंगमा ती १

पुष्प च तीषा अमी ती मजसीरा रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त शतत
रका ईतलन (री कातीची ४।६।१४ सोमवार छोदी अह वारमा चो
दाषा दगर्तु वेचतु तमे अतंकार पैराई तुछो दास वंजी कर्मगर्तु पु
नहुद यमा (मी) जो (तल्ली) का पती मी वी हुते ते के कोह

जाई आदी पसुपाल तु काही पुचाई तु

वर्जा वर्ज

चीत्रा तरा वेषा बरा ही ती पुचतु दर्शी दर्शी वाह मी ॥
आम प्रवेश गमत प्रवुच्या दी मात पसुता त कदा बी देव १
चीत्रा ईतरा म्रवत रोही ती ईतलन चतुर्दसी कर्दसी ईतीची मापसु
हाई चरवाट वाहीरती कातु वाहीर वाट चरपती त हाई तु

जो आदी पसुकी मवचे त वर्ज

थुक्रवा मवकर पुवीशा पा पुष्प वास्तु पुनर्वसु नेपु ॥ अमी
पुपन पुत पुवी मया वी क्रय क्रय वीची सुरती ता ॥१॥



ये ध्या च ती ध्या इ सा बी सा पा पु स त तार का पु त र्व सु अ श्री ती रो व ती ई
त स च मा गो को दी तु ती तु क म बी क य ती शी इ ह
त्री त का धा दी को स ग्र ह ग तु

वास वो त र द ता दी पंच के ध्या म दी ग त त गे इ गो प त म ॥ प्रे
त दा ह त र का ध स ग र श पे का दी त र गा च ब र्ज प त ॥ १ ॥

च ती धा ई त रा ई पु र्वा ना ड प द स त तार का ई त रा ना ड प द रे व ती ई त स
च मा द सी त को पा त्रा पु रा तु ध र व ग ई तु प्रे त दा ह त र पा का र को स ग र
प हं पा ट ई स वे का स पंच क ता त ग तु ले त को ह
ह त प्र वा ह त स च म :

य दु ध्रु व की प्र च रे पु म ले म धा बी सा पा स ही ते पु ले पु ॥
ह त प्र वा ह प्र च म बी द ज्वा ली रो ग मु ष्का ती त सो र न पे १
बी च ज तु रा च म ग रे व ती रो ही ती ई त रा अ श्री ती पु ष्प इ सा म
ली जी त अ व त च ती धा रा त तार का पु त र्व सु सु त बी शा पा ई
त स च मा प र्च मा ती रो जी मु ष्कर ही त न या का गो रे व ती का ह
लो मा त गा ई च ता ई त्रा मु ल ह ह
अ न्त दी वी ई रा ष ते म ह र्त :

इ सा श्री पु ष्पो त र रो ही ती पु ची च तु रा च म ग रे व ती पु ॥
स्वा ती च ती धा मु म धा मु म ले बी जा त्रि स त्कृ प ह प्र ती धा १
इ सा अ श्री ती पु ष्प ई त रा रो ही ती बी च ज तु रा च म ग रे व ती च
ती धा म ह ई त स च मा बी ई ह र्ग रो प तु ज मु ल ह ह

स र्प ले वी ष दी या को अ मु न त स च

मः कृ ती का मू ल म धा बी सा पा सा पौ त का डी मु नु ज ग द श ॥
स वे त ते मे त सु र सी ता पी प्रा प्रो ती म तो र्व इ ते म तु ष्प १
कृ ती का मु ल म धा बी सा पा सा पौ त का डी मु नु ज ग द श ॥



ई तलत्रमास पहे पापो लते जाई ती ति पती रई तस कै तत् अनी प्रा
ये त्या मनुष्य वाचै देत

गायत्रासीकते मुहुर्त

हस्तासिष्णोवासवश्रातुराजा ज्येष्ठापो हं वासंत चोत्तरा
च ॥ पूर्वाचापः कीर्तीतः चतुर्वर्ती नृत्पारं ज्येष्ठो नृत्पारं
क्षवर्गः ॥ १ ॥ ॥ शुक्ल ॥

हस्ता पुष्प चोत्तरा अतुराजा ज्येष्ठा रेवती ईतल ई तलत्रमास चतु
रमास मत्स्यराजी जाई तु वजाई तु लढा वाचत मुलहु लु ली मुती ह
सुहे कही या को ह

राजा नीष कर्ग तलत्र

मे ~~व~~ साक कर पुष्प रोही ती वै ज्येष्ठे पुती म सुतरा पु
च ॥ रेवती मगसी रा श्री ती पुच हस्ता ज्योत्सना सीषे कई
~~पुष्प~~ ॥ १ ॥ ॥ शुक्ल ॥

अतुराजा ज्येष्ठा हस्ता पुष्प रोही ती अवत ईतल ~~ई तलत्र~~ रेवती
मगा ज्योत्सना ती ई तलत्र मारा जा को राजा दी को अनी षे कती ह क
दी त मुलहु लु

राजदसर्त तलत्र

सोम्या श्री ती ष अवत श्री वा हस्ता पुच ज्येष्ठा पुषणा
ती ॥ मे ज्येष्ठा मुक्ता ती तो मगसी ती कते न्ना ती मुलप्र
दाती ॥ १ ॥ ॥ शुक्ल ॥

मगा ज्योत्सना पुष्प अवत चती वा हस्ता रोही ती ईतल चीत्रा रेव
ती अतुराजा ई तलत्र मारा जा को दसर्त गर्तु आ फुवी हो रा वी सा
रगर्तु अती कत्पा त सी ह ली मुती प्रमा त साक ही या को ह

हीती याच ठो दस फल मुदी

रोडा ही या म्पा ती लु वा सुते का त्या हु र्ज छ त्या ती तया



बहुती॥ कुवदी देवादीतीनाती तू तसे माती रोपाती
 पुतर्मुतीदे॥१॥ बहुलुचाप कुते समर्चत घपची
 पोषन्पुदीतो महर्गर्त॥ ससेपुची घोप पुस महीमा
 भुर्वदीतीसदीउचमी दं महान्त॥ २ ॥ भुन्त
 आडा ज्ञेका नरती स्वाती शतताका जे व्यायेती तक्षता
 ईजघन शहादुरोहीती ईतता बीसा पा पुतर्वसु दूसमसहाक
 हुतवृहत्सहक तुलनामासादी मोचद्रोदयेनये अदीससो
 हुतवृत्तघन ताईतलन माचद्रोदयेनये जनादी मुहुगाहुतु
 समतामुतलन माचद्रोदयेनये जनादी सुजोनु

रासीकृतचंद्रोदयफल

मीतपेवादीतः चतुः सततदक्षीणोत्तरा॥ मेषादुत्तराईत
 रायासमतावृषकुलये॥१॥ बीदुवर्तुसमेनदेदुर्नीक्षि
 दक्षीणोत्तरा॥ सुसंक्षेपमारागे मुनेराभीलचतुमा॥२॥
 चतुःपक्षकादीतीया माचद्रोदये मेषरासी नषेमा होतोचतुमाई
 क्षीततरफहुतु (फलदुर्नीक्षि) मकारपुर्णरासी माचद्रोदयेनेयेईत
 रतरईचाचतुमा (फलसुनीक्षि) क्षमजारागपजानुवृषनकुनरा
 सीमाचद्रोदयेनेये सम (फल) राजाहसकोरुगदाहुतु

पुष्पतक्षत्रकोशगुणादेष

परकक्षीतीपीतंगीहंती पुष्पातपुतुनहंती परंतुपुष्पादा
 ष॥ कुवममृतकरावृषपीपुष्पवीहीतमुपेतीसदेवक
 र्मसीक्षीमा॥ १ ॥ ॥ पुनः ॥ ॥
 पुष्पतक्षत्रजसुकोदोषतासगर्दलेकीतआफतुदोषतासगर्तुस
 नेतजसुसचकुलयेपगीपुष्पसीधीदीन

अथदपी

सीहोपनासर्वचतुष्पदातांतये वृपुष्पावहव
 तुहना॥ चतुर्विधे प्लवंगाचरेपीसीक्षीतीकार्याती



शोभे श्वरे कंच कार्ये दोम जां वार ॥ १ ॥ ॥
 तीसव ह्यचार गगने तक्षत्रे वती पुष्प ईतले न बुक सगी ई
 वार सा दोश ह्या ईती ईत्यादी व ह्यचार गगर्तु मुल ह्य
अठसतुह कंचु कचार तन

पुष्पोतरां तु राचां ले च ती ह्य श्री कर वये ॥ रोही त्या
 गुम्बुका डो दे हे दुर्ग च ती मुला ॥ १ ॥ ॥
 पुष्प ईत रा अतुरा का रे वती चेत ह्य अ श्री ती ह्य सा चीत्रा स्वाती
 रोही ती ईत क्षत्रा अतु गुम्बुका सो मई वार मो दे ह्य पर ईत्या दी ई
 दार व ह्यचार गगर्तु मुल ह्य
अच वत्र ती मुला ह

रोही ती रे वती चीत्रा अतुरा चा मग तो तरे ॥ शती ती ह्य
 बीद च्या तु तं तु ती पट सा च त म ॥ १ ॥ ॥
 रोही ती रे वती चीत्रा अतुरा चा मग ३ ईत रा ईत क्षत्र मा अह स
 ती कार दो दी का की सब वार सा व ह्य व ता ईतु आ रं न ग र्तु मुल ह्य

अच गती तार न

रात द्वेय अतुरा चा ई रोही ती रे वती कर ॥ पुष्प जी वे वुचे
 कुर्यात्पारं न गती ता दी वु ॥ १ ॥ ॥

सत तार का पुर्व ना ड अतुरा चा आर्द्रा रोही ती रे वती ह्य सा पुष्प
 बुच ग स ईत क्षत्र वार मा ग ती त वी धा प द न ता ई आ रं न ग र्त
 ते मुल ह्य

अव्या कर न प्रारं न

रोही राया पुंच के ह्य सा पु त न म ग ले ॥ ५ ॥ ॥ पुष्प
 बुके अवी दार रा द सा स प ठे सु ची ॥ १ ॥ ॥

रोहीणी हस्ता चीना स्वाती वीसाषा अनुराधा पुनर्वसु मृगशीरा
अश्विनी पुष्य हस्ता ईशान मा अश्रुक् गुह्य बुध ईशाना व्याकर
तपेय तहा ईशान गतु मुल हस्त

अचरत परीक्षा

पुनर्वसु सततारका हस्ता मृगशीरा ज्येष्ठा पुनीत म॥ रता
तामस मीनूत हीता नोम सती अर म॥ १॥ ॥

पुनर्वसु सततारका हस्ता मृगशीरा ज्येष्ठा ईशान मा अश्रुक्
चतुर्दशी ईती जीहो दी जसुती मा रत परीक्षा गतु

अचरत क्रीया

मृगशीरा रोहीणी पुष्य पुनर्वसु मृगशीरा ज्येष्ठा चीना नये
तरामूले कृत्वे सतत जीव तम॥ १॥ ॥

मृगशीरा मृगशीरा रोहीणी पुष्य पुनर्वसु मृगशीरा ज्येष्ठा शततार
रका चीना ईशान मृगशीरा हस्ता मृगशीरा जीवीका हस्ता मृगशीरा
नगर्त

अचरत दीकपाक क्रीया

मृगशीरा चीना अनुराधा सुवीशाषा मृगशीरा का मृगशीरा ईशाना रो
हीणी ज्येष्ठा रेवती पुष्य चीनीया ॥ १॥ ॥

मृगशीरा चीना अनुराधा वीसाषा कृती का मृगशीरा ईशाना रोहीणी
ज्येष्ठा रेवती ईशान मा ताता प्रकार को पका द्रव गार्ड तसी कन
ताई जारं नगर्त

अचरत सेव तम

हस्ता नये अश्विनी पुष्य अनुराधा मृगशीरा पुनीत म
गमिर्षि कनो मेजर सतत म॥ १॥ ॥

हस्ता चीना स्वाती अश्विनी पुष्य अनुराधा रेवती मृगशीरा ज्येष्ठा

अथवत्तारिकृतम्

श्रुतं कृतं अंगी तं वत चाशिशा मृग १॥

अचपक्षी कृतम्

कमरव्यागं पक्षीनां कृत्यमुत्तमम् ॥ १ ॥

अनुत्पत्तिक्रयविक्रयम्

वीसारवादीतयेतया॥ पुनर्नुमुतीनी प्रोक्तं कथवी कथं नुव

अचतप्रसाहदाहम्

कूजे के गकरे सो हागी नो षडम ॥१॥

सततारकाचीना ज्योतीनी मलवी सारवा कृतीका आर्द्रा अक्षेपा
ईत क्षत्रमार नोम सूर्यवा तवा क्रूरहगर्हरी ज्योतीत पफ
हाम्हे दाहगर्तु

अथ मन्त्रवीधा

ज्येष्ठा आर्द्रा नारी पूर्वा मूला मेषा मघा नारी च ॥ अथा पूर्णा
सुसहारे सार्क सीर्षा दये ग के ॥ १ ॥ स ते वै तैः के द्युगे सा
के मरुतो दा मुना बहा ॥ २ ॥

ज्येष्ठा आर्द्रा नारी ३ पूर्वा मूला मेषा मघा ईत च न भा ॥ अथा
पूर्णा तीर्षा मुनवा ॥ अर्क स ही त त वा सी र्षा दय ह ग मा सूर्य स ही
त मुन ग ह के द्यु मा द द प ह त मा ती वी धा सी क त आ ल ग र्नु
अथ सेतु व त्थ

श्रुत रा रो ही ती स्वाती भृगु के मं ग ले गुरो ॥ सेतु तां वं च
तं स सां बु ने त गे बु ने सी तं ॥ १ ॥
ईत रा रो ही ती स्वाती भृगु सी र्षा ईत च न र वा लो म गूरु वार मा
शुन स ग र शुन ग ह ले द पी या को न पे पु ह सां गु जा दी व ता ईत प्रार
न ग र्नु

अथ कुंभार कृतं

पुनर्वसु दये हसा न पंथो रो ही ती भृगो ॥ अतु रा वा म्बो ज्येष्ठा
स सूर्य सो म्ब वा सो ॥ त चा न रो द प प्रो क्त कुंभ कार की
या व्दे ॥ १ ॥
पुनर्वसु पुष्य हसा नी वा स्वाती रेवती रो ही ती भृगु सी र्षा अतु रा वा
श्रवत ज्येष्ठा ईत च न र सूर्य स मे त मुन वा च ह ग मा कु मा ले क
मा ह का म ग र्नु

अथ काष्ठ शीत कृतं

हस्त रवे द्यु सी ती पुष्य रेवती अ व त न ये ॥ पु न र्ने रो ही ती
पु ज्ये सु त्र चारी की यो त मा ॥ १ ॥
हस्त नी वा स्वाती वी सा पा अतु रा वा ज्येष्ठा अर्ध ती पु ष्य रेवती
श्रवत ज्येष्ठा शत तार का पु न र्वसु रो ही ती भृगु सी र्षा ईत च न र मा

मुनकारहेरी सुत्रचारी (अर्थात्) बहुहीको कामजारं नगर्तु
अचसर्गाकारकल्प

अवनयेऽधीती पुष्पमृगसुतवृषे ॥ कृतीर्कयापु
नर्वसोः शुभेत्तुगेतवावपी ॥ १ ॥ हसकारकयाशास्त्राही
तावुचशेने अरे ॥ १ ॥ ॥ ॥

अवनचतीया शततारका अधीती पुष्पमृगसीरा हस्ताचीना
स्वाती वीसाषा कृतीका पुनर्वसु ईतलत्रमा मुनतीचीहेरी सो
तारवृतीको कर्मगर्तुवुच शतीवार दोरी मुनद

अचचौरकृतम

वीसाषा कृतीका पुर्वी मुताद्वानरती मृषे ॥ अक्षेपा
उषयो मंदेनो मयोः शकुनेवले ॥ हगेवा दसमेनो
मेचो र्गसवृ मृतक्षेपे ॥ १ ॥ ॥ ॥

वीसाषा कृतीका ३ पुर्वी मृत आडा नरती शचा अक्षेपा उष
य ईतलत्र अरु शतीनो मईवा शकुनेवले गमन हजरा
मगत हवस अचवा दसमे हवस यसा काहमा चौर कामगर्तु
वधियाचतपाई नद

अचरत्तयुक्तलूपाधहृत्तम

कृतीकादीत्रयहस्तपंचके रेवती वृषे ॥ शुतीवयेपुन
र्वसोः पुष्पनेचोरी वृषे ॥ कुर्जकरत्तयुक्तलूपाधहृ
तं शुनवासरे ॥ १ ॥ ॥ ॥

कृतीका रोहीती मृगसीरा हस्ताचीना स्वाती वीसाषा जुराचा
रेवती अस्वीनी अवचतेका शततारका पुनर्वसु पुष्प ईत ईतलत्र
मार नोमः सूर्यजादी शुनवार मारत्तयुक्त आलुषतवताई नसारं नगर्तु
ईती तलत्र प्रकार न समापत

योगप्रकरणम्

श्लोक ॥ वाक्पेतार्कतन्त्रं श्रवणं च दृष्टिं च गन्धं
तद्युतीं कर्पाद्विद्योगस्या दशशेषतः ॥ १ ॥

पुष्पतन्त्रं दृष्टिं सूर्यतन्त्रं संसृजतीः अक्षयवर्तुदृष्टिं दीप्ततन्त्रं
संसृजतीः दुर्वेसंस्था सक्त्रगर्तुः २७ कान्तागर्तुः वाकी संप्रवेकोथा
जजानु (उदाहरणं) सम्भवतः १६२५ अक्षयवर्तुदृष्टिं श्रोत्रं आर्द्रतन्त्रं
दृष्टिं सदीप्तं कुतः योगदन्तरीकसेहे सोऽप्योत्तरे (उत्तरे) पुष्पतन्त्रं
दृष्टिं राक्षसी सूर्यतन्त्रं २४ हृत्स्ववर्तुदृष्टिं आर्द्रादी तन्त्रं १२
हृत्स्वदुर्वेसी हाईतः २५ हृत्स्वतस्मात् २७ कान्तागर्तुः संप्रवे
आते सदीप्तं यो कर्महे भुतयोगजानु

योगतन्त्रांगी

वीष्कलः प्रीती रायुष्मानसो नागपशोन्ततचा अती
जंडसुकर्माच्युताः श्रुतस्तैवेव च ॥ १ ॥ गंदो वक्षी ध्रुव
चेव व्याघातो हर्षतृणा ॥ वज्रसीद्धी र्वती पातवरीया
तपरी घसी वः ॥ २ ॥ सीद्धीः साध्यः शुभः सुक्लो ब्रह्म
वेच्यतीः कर्मात् संप्रवीं सती योगा सुकुर्युर्नामसमं
फलं ॥ ३ ॥

वीष्कल आदी २७ योगदन्तरीको कर्मतन्त्रको वमाद्ध ई २७
जको फलतः सको नाम सदृशे ह्यस्तो जातीवता ई २७

१ वीष्कल	७ सुकर्मा	१३ व्याघात	१९ परीघ	२५ शुभ
२ प्रीती	८ च्युती	१४ हर्षतृ	२० सीव	२६ ब्रह्मा
३ आयुष्मा	९ श्रुत	१५ वज्र	२१ सीद्धी	२७ स्रुत
४ शोनाग	१० जंड	१६ सीद्धी	२२ साध्य	२८ वेच्यती
५ शोनाग	११ वक्षी	१७ व्यतीपात	२३ शुभ	२९ योगः २७
६ सुकर्मा	१२ अक्षय	१८ वरीयात		

अतीगर्तु

योगवर्ज्यदीका

दशा

वास्तवसंज्ञाईहयेचयोगासिपाततीष्टपतुपाद्य॥
 सव्यवर्तनीसुव्यतीपाततामासर्वप्यतीष्ट
 परीघःस्यचाहर्ष॥१॥तीस्रसुयोगेप्रचलेनवज
 व्याघातसहितवपंचगुलेभगंदतीजदेचषेदेवका
 तादाश्रुतेषुकार्पवीवजीताहा॥

७ योगमाजोवीरुक्तमयोगधर (अर्थात्) श्रुतवज्रादीक
 अतीष्टधरतीतकोप्रसपादजरीष्टजालुअरवेचतीव्यतीपा
 तईकोता४पादजरीष्टजालुपरीघातपुर्वीर्जजरीष्टवीष्क
 नज्याप३घदीब्रजयोगजावु६घदीव्याघातयोग६घदीश्रु
 तयोग५घदीगंडजतीजंदईयोगकोआप६६घदीजरी

ष्टजालु

ईतीयोगप्रकरतसम्पुर्ण

अचकरतप्रकरतमहीषते

करतातयत

गततीनयोदीष्टाःश्रुतप्रतीपदादीतः॥

मकोतामसप्रकृतेष्वकरतस्यादवादीक॥१॥

जुतदीतकरतहीतुष्टश्रुतप्रतीपदादेषीवर्तसाततीधीतक
 गतीतेस्कोदीगुगागर्तुतेम१कमगरी७तेनागहीताजो
 रोषवन्दसोतीनीकरतजावु (ईदाहरत) सखत१६५सालकोपो
 षश्रुतपरेवादेखीदसमीसम्मगदा१०हुन्देतसकोडुगगदी२०
 तातेसमा१कमगदी१६तातेसहाई०तेनागहीता५वचोतेस
 लाईगरकरतजालु

करता माता

ववाइ संवा ~~लवको~~ लवारवंत तो न वे तै ती हता सचे
 येस ॥ गरा नीचा गरा जी जंच वी की रीता हरा र्याः करता
 ती स प्र ॥ १ ॥ अंते कृष्ण चतुर्दशी रा कुती दर्शना गयो ॥
 शेष चतुष्पद ताग की सुध प्रती पद देते ॥ १ ॥ ॥

वव १ वा लव २ को लव इतै ती ह ४ गरा ५ वती जइ लडा ७ यसा
 ७ करता हु लडा अंते कृष्ण चतुर्दशी काई तराई मा सकुती ता सकु टक
 रत पती आई न्द फेरी अई सी का पुर्वी तराई मा चतुष्पद ताग ई
 २ करता ज्वादा हु लडा अंते सुध ता सक करता प्रती पदा का पु
 र्वी मा हु लडा ७ यसा क म जालु

करतु स्वामी

ईतु बुद्धा मी न ता मा र्छ मा न् श्री की ता स अ
 ती मी ल र्छ ता चा ॥ कल्पु र्छा रे को स र्छ वा यु स
 ये व ये च त्वा रे सो स्वी रा तां च तु र्गा ॥ १ ॥ ॥
 ईतु बुद्धा मी न अ र्छ मा न् मी ल र्छ मी य स ई व वा दी उ क
 रत को दे व ता जा तु फेरी सकुती न्द ता ग चतुष्पद की सुध
 ई ४ करता को दे व ता न्द स ते क ती वृष न सर्प वा यु ई जा तु ई
 ४ चीर दे व ता हु न

करत कृत्पाती

पोली कं स्वी र मुत्ता ती व वा ष्य वा ले व दौ ज ही ता
 ल पी क र्छा त ॥ का ले व प्र म द मी न वी चा त तै ती हे
 बु न ज ता अ य क र्छ ॥ १ ॥ ग रे च वी जा अ य क र्छ रा

ती वागीज्जकेस्येयवतीकनीयाश्च ॥ तसीद्दीमाया
ती कृतचवीक्ष्यावीषागिधातादीषु तन्मसीदीः २

मन्त्रोष्यातीशकुगेतुसपोषीकागीगोवीप्रराज्यपी
तकर्मचतुष्पदती ॥ सोलागपदासूत्राच्यती श्रवकर्त
तागेकीसुध्रतास्तिगीरवीहंभुलकर्मकार्यम् ॥ ३ ॥

ववकरतमापोषीकव्रतकाहीगदाहीस्वीरकर्मकुवाईत्यादीक
र्मगर्तुवाहवकरतमाब्राह्मनकोहातकर्मकोहवकरतमासी
व्रताईसाहादीकर्मतेतीहकर्ममावीवाहादीकर्ममगहका
र्मगरकरतमावीईईईरुलोचताईतुवतीजकर्ममादेवता
कोस्थापनतहाईधरवाच्यतुवताईतुदोगागादीगर्तुनडाकर
तमावीषप्रयोगशानुधात(अर्पात)भुलकार्यकेहीगर्तुश
कुगीकरतमापोषीकनेनेकोमन्त्रोपदेशओषधग्रहग्रह
शान्तीचतुष्पदकरतमागाईरवरीदगुवेचतुब्राह्मनकोशेवा
राज्मालोषेकपीतसंवचीकर्मतागकरतमाशोलागपदासूत्र
क्षेयवीधान्यासादीकर्मगर्तुकीसुध्रकरतमासंपूर्णकार्ययो
उपध

तडास्वरूपमाह

देतपन्तुसमरेउमरेषुवीजीतेष्वीगः क्रमादृष्टवा
तस्यंकायात्किहतीगतांवरमुषीतांगुलीतीचक्रं
पात॥ वीषीसप्रनुजामगेन्दुगतकाक्षामोदरी
प्रेतगोदेतपद्मीमुदीतेः सुरेसुकसाप्रोतेतमुक्तातु

देवा सुरसंग्राम मां देत्येदुहे देवता हस्तु ईजी तेर सो देवी माहादे
 वहाई कोच ईत पन नयो रतव सीखा रस करानि वकी राम
 ईत पन नई गद्या कोउ सो मुख नया की पुछर पही नया की नक
 काउ सो गोदा ^{अह} नु जानया सीह काउ सो घाटी कुरो दरी प्रे
 तमा ची न की ही दने नया की रसी लाई देवता ते देवी अत्यन्त
 हर्ष पुर्व कजा प्रका कर प्रान्त मात गाई ते ही सकी का सहा यतोह
 गरी कने देवता हस्तु देत्य परा जये गोर सता प्रकार को नडा की
 स्वरूप अह ई नै का परा नमो देवी प्राची नकुषी हस्तु जग हस्त
 काई प्रकार का ती भी न कह कोह

नडा ती भी मात

मुक्ते पुवाये ^{हु} वसी पंच दस्योः नडे काद रपान
 तुर्ची परार्ध ॥ कहे त्याहु स्या त ती या दशस्योः पुर्व
 लागे सप्र भी शंनु भी चोः ॥ १ ॥

मुक्ते पदमा अक्ष सीर पुर्त माई न का दल पुर्व मान डा ६ ॥ १
 अह ई से पक्ष का चतुर्धरि रे का दसी पर दल मान डा ६ ॥ २
 हक द पक्ष का ती ती या दस भी का पर दल मान डा ६ ॥ ३
 ई से पक्ष का सप्र भी चतुर्दसी का पूर्व दल मान पी न डा प्रवेस हुदु

अन्य दपी

दीवा सर्प मुषी नडारा नौ लाडा तुव श्री की ॥ सर्प
 स्पच मुषं त्या डं रा नौ पुछ परी त्यजेत ॥ १ ॥ ॥
 दीन मान डा को मुष सर्प कोउ सो हुद्धरा नी मानी छी कोग



ईहृदये सतीये दीनमा मुषत्ता गगर्गुराची मा पुद्गरत्ता गगर्गु

नडा मुष पुच्छ वीचा

पंचघटी कृता हरारस नूया मा दी घट्यः शरावीष्टे
रात्र मस द्रजे दुसरा मा द्रमि वाराणा विषु ॥ या स्पेवत
घटी नयं शुभ कर पुच्छ तवा वासरे ॥ वी वी स्ति प्यपरा

ईहा शुभ करी रात्रोच पुर्वा ईजा ॥ १ ॥

शुभ पक्ष का चतुर्थी का पंच प्रहर को पै हो पांच नडा को मुष हृद
सो शुभ कार्य माती दी तद्धय से शुभ का अष्टमी दी ती म प्रहर को
आदी पांच घटी मुष जानु ससे सका ~~दसी~~ दसी म प्रम प्रहर को पांच
घटी मुष ससे पूर्णा मा को चौथो प्रहर पांच घटी मुष ससे
कृष्ण पक्ष तीतीया को अष्टम प्रहर पांच घटी मुष ससे कृष्ण पक्ष
म प्रमी आदी ५ घटी मुख ससे पंचमी को षष्ठ प्रहर आदी पांच
घटी मुष सवं चतुर्दसी प्रम प्रहर आदी ५ घटी नडा को मुष
जानु सो शुभ कार्य ताग गर्गु ससे प्रकार से शुभ पक्ष चतु
र्थी तीती अष्टम प्रहर को अंत्य ३ घटी नडा को पुच्छ हृद सो
शुभ कार्य मा ताग गर्गु ससे अष्टमी प्रम प्रहर ३ घटी अंत्य पुच्छ ससे
दसी ६ प्रहर अंत्य ३ घटी पुच्छ ससे पूर्णा मा ३ प्रहर अंत्य ३ घटी पु
च्छ ससे कृष्ण पक्ष को तीतीया ७ प्रहर अंत्य ३ घटी पुच्छ दसमी
५ प्रहर अंत्य ३ घटी पुच्छ ससे कृष्ण जानु अष्ट जो परत को
नडा पुर्व दस मा नये नडा पर दस मा नया ता स पुर्न कार्य मा शु
नडा ये क नी अये जानु

नडा सरी वी नाग माह

मुषेपंचगतेति कावक्ष्यस्वेका दशस्मृता ॥ तान्नेच
तस्मिन् पट्टकस्या तीस्रः पुच्छे तु गडीका ॥ १॥ ॥

मुषमा ५ कंठमा १ हृदयमा ११ तानीमा ४ कटीमा ५ पुच्छमा ३
घटीयमा ३ तरहे ३० घटीमान्नडाको शरीर बीनागहुन्छ

नडाफलम्

कार्यहाती मुषेपचतुगते वक्षसि गी स्वता ॥ कट्या
मुष्मता ता गनीच्युतिः पुच्छे ध्रुवोजयः ॥ १॥ ॥

मुषमा कार्यहाती कंठमा मत्स्य हृदये मादरी ३ वती अर्थात्
कसर माई तम गनी मा कार्यनाश पुच्छर मा जये तानय सो फल जानु

वडतः स्वगमत्पूपातातवासशातम्

कर्ककुले द्वये नु स्यात्कर्पे जत तीये द्युगा ॥ कन्याचाप
द्वये वडल नडापातातवासीती ॥ १॥ ॥

कर्कट कुल सीह मोत ई ४ रासी का चतुमान्नडाका वासपची
मा वक्षी कसेप वक्षसी चु कर्कट ई ४ रासी का चतुमान्नये मा
नडाको स्वर्ग मा कन्या तुलो चतुप्रकार ई ४ रासी मा चतुनये
नडाका वासपातातमा जानु

नडावासफलम्

स्वर्ग नडाले वक्षोपपाताते च चतुगमः ॥ मत्पुतो
केयदा नडा कार्य सीधी सदा तही ॥ १॥ ॥

नडा स्वर्ग मानये ते स्को फल मुषपातातमानये चतुप्राप्तीम्
पुलोक मानये कार्य हसी यो फल जानु

वारपरते नडातातागी



सोमेश्वरकेचकल्पातीशोमेवतुवस्त्रीकी॥गुरोपुरापवतीहे
चापवारेपुलडीका॥११॥ ॥ ॥

सोमवारअसुक्रवारजडालयेकल्पागजातुशतीवारमानयेवस्त्रीक
नामजातुगुरुमानयेपुरापवतीजानुर्वीमंडुतवुचवारमाजडा
नयेजडातामजानुफुलपतीनामानुरूपद

ईतीकरणप्रकरणम्

अथसंक्रांतीप्रकरणम्

घोराखोच्चाक्षीमतद्युतेचसंक्रांतीरोखमहोदरीस्यात्॥
मदाकीतीहेचगुरोचमद्यामीआमगोराक्षसीचार्कपुरे
रवीवारकादीतसंक्रांतीनयेसोसंक्रांतीकोई(घोरा)सोमवा
रमानये(व्याक्षी)मंगतवारवारमानये(महोदरी)वुचवार
मानये(मंदाकीती)गुरुवारमानये(मीआ)असुक्रतीवारमा
नयेसंक्रांतीकोनाम(राक्षसी)जातु

अथद्वि

उग्रसीप्रचैर्भनचक्रवमीआख्यदाहरो॥क्रुद्धैःसंक्रां
तीरर्कस्वघोराद्याक्रमसोलेवत॥१॥ ॥ ॥

उग्रतक्षत्र३पुर्वानरतीमघाईतक्षत्रमासंक्रांतीनयेघोरातामसीप्र
हस्ताअक्षीतीपुष्यअनीजीतईतक्षत्रमासंक्रांतीनयेव्याक्षीता
मजातुचरखातीपुनर्वसुअक्षतचतीषाशततारकाईतक्षत्रमा
संक्रांतीनयेमहोदरीमैत्रमगसीराहेक्षीमीत्राअनुराधाई
तक्षत्रमासंक्रांतीनयेमंदाकीतीमीआवीशाषाकृतीकोईतक्षत्र
मासंक्रांतीनयेमीआतामजालुदासुतमुतजेषाआर्द्राअश्लेषा
ईतक्षत्रमासंक्रांतीनयेराक्षसतामजानु

फलम्

व्याक्षीवैस्यातमुषयतीमहोदयसंचोरसार्धतघोरा



शुद्धांतरपतिनेवमंदाकीतीच॥ तदारव्याचहीजेवरगुणा॥
 कारव्यापमुंश्चाडालांतां प्रकृतीं मारीलारासमीसंहीताच॥
 व्याहीतामसंयातीनेवेस्पताईसुषमहोदरीतामनेयचोताई
 सुषघोरतामनेयपुडताईसुषमंदाकीतीनेपेराजवंसताई
 सुषतंदातामनेयवालातताईसुषमीअतामनेयचंद्रता
 ईसुषजातु

कातफलम्

पुर्वाहकोलेनपथिदिजेडात्मध्वंसीनेचाचदिसोपराखे॥
 शुद्धांतरवावसोमीतेप्रदोषेपीशाचकातरांनीचराळी
 शीये॥ तंदादीकांश्चापररात्रकोलेप्रतूषकोलेपसु
 पातकाश्च॥ संक्रातीरर्कस्यसमसहीगांप्रतातसंचा
 समयतहंती॥ २॥ ॥ ॥ ॥

दीगकाप्रचमप्रहरमानयेवालागाराजाताईदुखमद्याक्रममये
 मावैस्पताईदुषदीततीयेप्रहरमानयेमुडताईदुषस्वरात्रीका
 प्रचमलागसापीमाचताईदुषदीतीयेप्रहरमाराधामताईदुष
 ततीयेलागमातहहस्ताईदुषअसुगोदयेकातमानयेपशुपा
 तहस्ताईदुषसुर्योदयमानयेगोशाईवैरागीहस्ताईदुष
 यसोसक्रांतीकोकातफलजातु

संक्रांतीमुषम्

अर्कमुक्तेमुषपूर्वसोमेचंद्रहीते॥ २॥ रातोचंद्रमुषं
 पश्चादुराचैवत्रामुषी॥ १॥ ॥ ॥

रवीशुक्रवारमापूर्वमुषवृचमंगलकादीतदहीतमुषसरी
 शोमवारकादीतपश्चिममुषवृहस्पतीवारकादीतसंक्रांती
 काईतरमुषजातु

करतपरतेसंक्रांतीमुष



ववेपुर्वमुषं प्रोक्तं वातवेयमदी ज्जुरवं ॥ कातवेपश्चीम
मुषं ते तीले चोतरामुषं १ गरे वायव्य दीगवन्क्रवाणी
जागे यद्विज्जुरवं ॥ नद्राया मीशरी गवन्क्रशकुती किं
तीमुषं २ चतुष्पदी च पाते तागे चोर्ध्वमुषी लवेत ॥
कीन्तु प्रेसर्व दीगवन्क्रसंक्रांती मुषं लसतम् ॥ ३ ॥
ववकारुमासंक्रांती लये पुर्वमुषं वातकर्तमानये दलीरा मुषं ते
तीलकर्तमानये ईतरमुषं कोवकारुमानये पश्चीममुषं गारक
र्तमा वायव्यमुषं वाणीज करतमा जागेय मुषं लद्रा करतमा
ईसात मुषं शकुती करतमा ते कुलमुषं चतुष्पकरतमा पातात
मुषं ताग करतमा ऊर्ध्वमुषं कीन्तु च करतमा सर्वदीसां मुषं यो
क्रमेते जानु

अथ दृष्टी

चडे गुरो दृष्टी वीदी क कृशा तो सूर्य सी ते ते कुती को र हती ॥
चात्री मुते सुते दी क पवने ती कुत्ता बुचे शनी रुड दी शी सत
लवेत ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सोम वृहस्पती का दीत आगे ये को र मा दृष्टी रवी शुक्रवार का
दी ते कुल दृष्टी मंगल का दी वायव्य को दृष्टी दृष्टी बुच शती का
दी ते ईशा न को रा दृष्टी को जानु

अथ गमनं

मते चडे गमः सोम बुचे नो मे व वासते ॥ रवो बुके गमो
मास्ते गुरो प्राग्ग मते स्म तम् ॥ १ ॥ ॥ ॥

शनीवार सोमवार का दीत संक्रांती लये त्यो संक्रांती को ईता दी सा
गमन जानु बुच मङ्गलवार मानये पश्चीम दी सा गमन जानु रवी शु
क्रवार मानये दली त दी सा गमन जानु वृहस्पती वार संक्रांती को पुर्व
दी सा गमन जानु

स्वीती



चतुष्पदे ते तोल ताते यो अमुप्रो रवीः संक्रमत करोती ॥ वीधा
 द्वारे व्येच गराह्ये च सवालवाप्ते स्थीत एव वी ॥ ११ फलम् ॥
 कीस्तु धाता ह्नी शकुते वरिणो कोलवारव्ये चोर्ध्व स्थित स्प
 रवतु संक्रमतारं वे स्यात् ॥ आत्यार्ध वी ॥ धीपुनवे तन्म
 शस्तु दृष्टो मध्ये द्ये ततो मुनय प्रवदंती पुर्व रवा हत मे ॥
 सीं हो व्याघ्रो वरा ह्म गदितः कुजरस्तथाः ॥ महीषी धौ
 टक आच छागो वृत्त कुकुटो ॥ ३ ॥ गजो वाजी र्वषो मेषः
 खोष्टो केसरी क्रमात् ॥ शार्दूल महीषी व्याघ्रवातरो
 अववादीतः ४ फलम् ॥ गजे रक्षी वेषे स्पे र्य घोटके
 वाहते तथा सीं हे व्याघ्र नय प्रोक्त सुती वं ग दिते भुगे
 प वरा हे महती पीदा जायते मेषवाहते ॥ महीष्यो अन्न
 वेत्त ह्नेराः कुकुटो मत्पुरे वच इव स्त्रा गी ॥ श्वेत पीत
 हरी ते च पादुर रक्त रपा म मषिते व हुवर्गा ॥ कंबलं
 वी वसतं घन वरार्णि तेषु गी च ववा दीत क्रमात् ७ आयु
 ध्या गी ॥ लुमुं दी च ग दा षड् दंडं को दंड तो मरा ॥
 कुत पाशां कुशा स्त्रं च वारा अ वा यु चं वा वात ॥ ८ ॥ भौ
 जन पाने ॥ सो वरां रित तं ता म्र का स्प लो हं च र वर
 रत ॥ पत्रं वस्त्रं करो नू मीः काष्ठ पान्त्रं ववा दीतः ९ न
 क्षप दार्ध्या ती ॥ अन्नं च पाय संनक्षे प क्का न्तं च पयो
 दधी ॥ चीत्रान्तं गुड मज्जा ड्यं शर्करा तु ववा दीतः १०
 लेप रस ॥ कस्तुरी कुंकुं मं चै व चंदं मती का तथा ॥
 गोरोचने मरुत्ता च हरी डा च तयी जित म् ॥ सीदु रस
 गरु अ व कर्पु रश्च ववा दीतः ११ दे व नु ता हि वी ह्म ग प स
 वो मृ गे र्व च ॥ वृक्ष सत्री य वी ट शुद्ध मी अजा ती ववा
 दीतः १२ पुष्प ॥ पुन्ता गदो ती व कुल अ के त की वी र्म



साचार्यकमतस्तु दूर्वा ॥ मल्लीतचापाटलीकाजपाचव
 वादीपुष्पाणीचयोजयेतुः १३ भुषणातीतपुरकंकतं
 मुक्तावीडमसूकुटंमणी ॥ गुंजावराटकंकोसंगुस्तं
 रुक्मकेववात १४ कचुकी ॥ वीचीत्रपानोभुकेलुजं
 पत्रीकासीतातचापाटलीतवणी ॥ कृष्णाजीतचर्म
 चवस्त्रपाडववादीतचैवतुकचुकीस्पात १५ वय ॥ श्री
 मुकुमारिचगतालुकायुगाप्रोढेप्रगल्भाचततश्च
 दा ॥ वंच्यातीवंच्याचसुतार्थीतीचप्रवाजकाचैवभुक्तं
 फलववात १६ यद्वयेतुरुपस्पाततस्पातस्पातमहद्वय
 म १७ पंचाश्लोकोरतीहास्पदुर्गुरवीजरावितालुक्ति
 मुकपीताम्रताच्यातस्पीताकर्मसुवद्धरपीरागीववा
 धवस्ताः कचितामुतीदो ॥ १८ ॥ ॥ ॥

ईतीसंक्रांतोभवस्था

योऽस्यवस्तुग्रहसलोकमालेखेकोद्धतेस्कोऽनर्चतस्तकोऽनोहे
 दीस्पष्टद्वीतस्तगाईहेदीसर्वहातहुद्धनतोमुतीलेनेकोद्ध
 काष्टकम

काला	वव	वाहव	कोहव	तेतीत	जर	वराजि	दवि	शकुती	चतुष	नाग	कीमुद्र
स्तिती	वसी	वसी	इन्तीई	मुती	वसी	इन्तीई	मुती	इन्तीई	मुती	मुती	इन्तीई
फ	मन्मममचे	महंगो	ससो	मध्य	महंगो	मध्य	महंगो	ससो	ससो	महंगो	
बाहु	सीह	वाघ	असुर	गदहा	हाची	नैसी	घोदा	कुकर	रांगो	गोर	कुरबुरा
उपवा	हाती	घोदा	गोर	नेडो	गदहा	कंट	सीह	वाघ	नैसी	वाघ	वातर
फल	नम	नय	पीदा	मुष	तस्मी	उष	मुष	स्मीर	पीदा	स्मीर	मत्तु
वस्त्र	सेतो	पहेलो	हरीयो	गुता	लाह	नीलो	कालो	दीट	ईती	सेतो	धुवोसे
आयु	भुं	गदा	षड्	दंड	धुं	गतका	नाहा	फांस	अंकस	नखार	वारा



पान	सुत	चादी	तामो	कोसो	फलो	ठीका	पत्रा	कपड	हात	लूनी	काठ
तल	अन	दूद	नात	घेवर	दूद	रही	पीत्रो	गुद	मह	घेवर	चीनी
लेपर	कलुसिरी	चंदन	मती	गोहो	चंदन	हरीयो	गजत	मीथ	अंगार	कपुर	
वर्ग	देव	गुत	सर्प	पसु	मृग	बाल	क्षत्री	वेसु	शुद्र	वसं	चांदन
पुष्प	केसर	जुही	मोहर	केवरा	वेला	संघार	कमल	दुब्बो	वेला	गुल्मे	ओड
भूषण	धुंधुरी	कंद	मोती	मुगा	मुक	मणी	धुंदवी	कवरी	लीत	पांव	सुवर्ण
कुंकु	झाड़	पता	हरीयो	लोडप	सेतो	गुलाबी	नीलो	काहो	बाला	बोझो	धुंध
वय	वाहक	कमल	तलेती	बुडो	मडलो	अतस	बुडो	बंज्या	अवं	पुवं	बदर
अव	पथा	लोगरती	होसो	दुष्ट	जरायु	लुकी	कफी	मता	ध्यात	कर्मसा	

फलम

आयुचं वाहता हाराय ज्जाती यंच नं वयत ॥ सुखो पवीष्टाती
 वंते से हो काश्य मां सुयु ॥ १॥ ॥ ॥

जो जो वाहते पु संक्राती को लो गनये ते ते वस्तु को ता शानु

धर्मय

संक्राती मूर्तीने दा हरपवत ये मे वाहते सार्प से द्रष्टा
 पंचे दुसं शां गुरु कर पित ने चा गि दस्त्रे च बो म्पि ॥ त्वा
 से ये च मुले श्रुति व सुव पुजात्री गी पूर्वा रवरा मे द्वा म्पेति
 ते दी देव न व ती सर कृता दुतरात्री ती कु स म् १ वा रा
 ने दे स म् ध स्म ता ज्य म् म् ग म रा म यो ॥ म्पेति पंच
 दशो यो ते दुली क्षं न प्र जा य ते ॥ २॥ ॥

अव संक्रा ती को मुती लि द क ही न्द ॥ आ डा स्वा ती न रा गी रा त
 ता र का अ म्पे पा जे षा ई त स न मा नो पे दु ली सि अ र प्र जा को हे रा
 जालु १५ मुती जालु पुष्प हस्त म्पे धा कृ ती का अ म्पे ती म्पे ग मी रा



वीनाः अतुगाचाः सुतः अतुगाचे वारे वती ३ पुर्वाः ईत सन मा लये म
 धूम फल जानु ३० मूर्तीः रोहीती पुर्ब सु वीशाषा ३ ईत राई
 नः सा संकांती नये जत हाई दुष ४५ मूर्ती जानु

अत्यदपी

पुर्व संकांती तस गाल र संकांती क्रुद्ध कस ॥ श्री सा व्यास
 तर्ध स्या चतुः पंचम हर्धता ॥ १ ॥ ॥ ॥

संकांती जुग गत दुख सोई संकांती देषी पद्धा जाई ते संकांती सप्त
 गनु २ अथ वा ३ त सत्र को फरक न मोल पा सतर्ध जानु ४ अथ वा ५ त
 सत्र को फरक न मोल पा दुर्ती सा जानु

अत्यदपी

संकांती गाही न व मिश्रिता च स प्रा कृता पा व कला
 जीता च ॥ एके सप्तर्ध दाती ये च सो म्य भुये म हर्ध
 मुत यो व दंती ॥ १ ॥ ॥ ॥

संकांती को घडा पा ६ मी हाई ३७ लेना गनु ३ लेना गती ३९
 शेष वच्यो न पाई त म फल जानु २ शेष वच्यो न पा सन्य म फल
 जानु शेष र हे ग न ले सतर्ध ता जानु

संकांती त सत्र फल म

संकांती चर त सत्रा कुरा वे ज्ञा सला वची ॥ त्रिक पट्ट
 त्रिक पट्ट वी कं पट्ट पुत पुत ॥ पंचालो गो व्यचा वरु
 हाति श्री वी पु लं धन म ॥ १ ॥ ॥ ॥

संकांती जाई त सन मा ला द हई ते त सत्र देषी ज न त सत्र सप्त
 गनु गनेरी त प्रथम ती त त सत्र मंचा इ भोगा ३ व्यचा इ व स
 र हाती ५ च त प्राप्ती यस्तोरी ती जानु

ज न मा स ती ची त क न फल मा

तस्य ज न र्ज मा सा द्य ती यो संक म न ले वेत ॥ त मा सा



सुग्रीवः शतवर्षे भयतामसी कापुर्वं नमः सकलजानु ॥ १ ॥

इति श्रीकाशी प्रकाशम्

अथ ग्रहा प्रकाशप्रारम्भे

चक्रग्रहा प्रवृत्तिः ॥

नगोपंचदशे चक्रमायदीतो वृत्तिः ॥ पौर्णिमास्यां
तिशारोषे चक्रग्रहा मादीशेत ॥ १ ॥ ॥ ॥
सुर्षतस्तत्रेदधी पंद्रहा तस्तत्राचक्रमात्तमे अरुपुर्णिमा
नईरातवाचचक्रग्रहा को सतव जानु ॥ ॥ ॥ ॥

सुर्षग्रहा

मद्योतग्रहा तस्तत्रात्पोडशं यदीसूर्यनं ॥ अमावास्या
दीनारोषे सुर्षग्रहा मादीशेत ॥ १ ॥ ॥ ॥
सर्वेदीतमा सुर्षचक्रमात्तसीकादीतस कराली मा प्राप्नु
तुत् (परंतु) ग्रहा कातका एक तस्तत्र मादीतमा ज्ञेयमा
वास्यागई दीनारोषे हेदधी सुर्षग्रहा संतव जानु (हेकीर)
ईसदीतचक्रमात्तत्रेदधी सुर्षतस्तत्राचक्रमात्तसीका
हीमाहो तस्तत्राज्ञेय सुर्षग्रहा जानु ॥ ॥ ॥

गालीको मुला मुनीः

श्रीषट्दशयोगपतंतरातां मुलाप्रदं स्याद्ग्रहाण र
वीदोः ॥ दिसप्रतदेषु च मध्यमं स्यात्तरोषे च तीक्ष्णं
मुनयो बंदती ॥ १ ॥ ॥ ॥
सुर्षअचवाचक्रग्रहा ज्ञाता गालीदेवीततीय रषष्टदस
म १० रेकादस ११ एतीरासी मुलादायकदीतीय रसमं न
वमई मध्यम जानुग ॥ ॥ ॥ ॥

स
पुराप्रका

ग्रासात तीयोऽष्टमगश्चतुर्विंशत्यापसंस्थः मुनः
स्वराशेः॥ ग्रासाद्वीः पंचतवर्तुमध्यस्तोचमुक्ता
अबुजेअशेषा॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
सुर्यग्रहजुतरासीमातागेऽसरासीदेवी ३।८।४।११ईलाता
मुनज्ञानु ५।६।६। मध्यमजालु १।२।७। १०। १२। ईअमुनजालु
अथ प्रयोग

मुनामुनफलमाह

तीचीरेकगुनाप्रोक्ता तस्य च चतुर्गुतमैवाष्टषष्टगुना
जेजोमासआष्टगुणः स्मृतः॥ १ ॥ वसुशतगुणवीधा
दसतंचचतुर्गुणः॥ सकोत्याग्रहिनेचैवैरीतीवगाता
तका॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ ॥ ॥
स्त्रीकोप्रचमक्रुतुप्राप्तहुतेस्कोमुनामुनफलमचावीचीकहीर
तीचीको १ गुत तस्य कोचागुणावारकोष्टगुणामेहाकोष्ट
गुणावद्वेको १०० गुणा अरुजहेदेव्या ईसताईवहुतदेवद्वसंका
तीकादीतक्रुतुप्राप्तनये वंच्याजानुग्राह्याकादीतप्रचमक्रुतु
प्राप्तनयेत्तोस्त्रीतेस्कारतहेचोदेवीचवाहुन्द

अथ मासफलम्

प्रचमतेमिजोतारीवीचवा नवतीचवम्॥ वैशारेव
चतपुनाद्व्यासेवेरोगानीतालेवेर १ जाषादेचमत्या
आवेगवाचनानीतालोवेरुनगारेयाह्वाधिनेच
तपस्वीती॥ २ ॥ ऊर्जस्यामुषांतीतारीमायेपुनसुषा
नीताः॥ मार्गशीर्षेवहुप्रजापुंशतीचपुषास्मता॥ ३ ॥

फाहउरो श्रीमती साखी क्रमात्ताम फल साता ॥ ० ॥

स्त्रीहार्दप्रचमक्रुतुचैत्रमेहामातोयेवीचवाजानुवेसाणमानये
ताचतपुत्रयुक्तजेष्टमानयेरोगवतीआषाढमानयेमृतप्रजाश्राव
गामानयेचतवातमादमानयेउर्जगाहुद्धआश्वीतमानयेतपशी
तीकार्तिकमानयेचोदेआपुष्यमार्गशीर्षमानयेदेरेप्रजापोषमान
येजारीतीमाघमानयपुत्रसुषुपुक्तअहफागुणमाप्रचमक्रुतुलेयताप
तीव्रताजालुपसोसुगीलेकहेकोछ

तीथीफलम्

शुचीर्गारिप्रतीपदाद्वितीयायांतुदुर्वीती॥ ततीयायां
पुत्रवतीचतुर्थीवीचवानेवेत॥ १ ॥ पचन्यांचैवसौम्या
गंपषष्ठांकार्यवीतारीती॥ सप्तम्यासुप्रजातारीअव
न्याराक्षसीतया॥ २ ॥ तवत्यांवीचवातारीदशम्यासौ
रव्यागीती॥ एकादस्याशुचीर्गारीद्वादस्यामरतंक्रवत
॥ ३ ॥ त्रयोदस्याशुनाप्रोक्तचतुर्दस्यांपरामितो॥ पौर्णी
मास्यांसमावास्याशुनंचाशुनमेवच॥ ४ ॥ ॥ ॥

स्त्रीकोप्रचमक्रुतुप्रतीपदालेयवीचजानुद्दीतीयेतानयेदुषी
ततीयाकोलेयेपुत्रवतीचतुर्थीमावीचवापंचमीमोसोतागपषष्ठी
माकार्यतारीसप्तमीमासुप्रजाराक्षसीतवसीमावीचवादशमीमा
सुषुनोगीरकादशीमासुचीद्वादसीमाभरतत्रयोदसीमाशुनच
तुर्दसीमापरपुरुसरतीपुर्णीमाकोदीनशुनअर्द्धसीकादीगपेहो
क्रुतुलेयसुताजालु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वारफलम्

आदीत्यवीचवातारीसौमेचैवमृतप्रजा॥ क्षोणपुत्रे
आमद्यातीदुचेकलाप्रसूस्मृता॥ १ ॥ गुरुवारसुत
प्राप्तीकत्यापुत्रोयुताभगो॥ मरेचपुश्वतीतारीहेयं
वारफलंबुचै॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

स्त्रीताई प्रथमरीतुरवीवारमानयेवीचवाफलजानुसोप्रवार
मानयेमतप्रजासद्वतवारमानयेसातधातोबुचवारमानये
धैरेकपावतीवृहस्पतीवारमानयेपुत्रप्राप्तीशुक्रवारमानयेक
त्यापुत्रपतीअरुशरीवारसास्त्रीताईप्रथमक्रतुनेयेजारराजिजानु
नक्षत्रफलम्

अश्विन्याशुनगानारीतरायावीचवानवेतरकतीकायाच
वैष्णवास्याद्राहीलांचारुहासीती॥१॥ मृगशिराद्राशुनो
क्राचाद्रायांचोचकारीती॥पुनर्वसुपुत्रवतीपुष्यपुत्रव
तावीती॥२॥ आश्लेषायांचवेद्व्यामघायांचार्धसंपु
तो॥पुर्वायांचार्धयुक्ताहीचोतरायांसतीतचा॥३॥
हस्तपुत्रवतीयुक्ताचित्रायांमनुचारीती॥स्वातजर्जगव
यवावीसाषायांनुरीदुरा॥४॥ मन्वेचदुर्लगातारीजेष्ठा
यांवीचवानवेत॥मूलेप्रतीव्रतासाचीपुर्वाशीलाग्न
नोगीती॥५॥ ईतारार्धवतीप्रोक्ताश्रवेसोलाग्नसंभवता॥
ज्येष्ठायांशुनातारीशेतलान्विताबुधै॥६॥ पुनोचोक्ता
काशीतीनुईनेतक्ष्मीयुताशुना॥रेवत्यांपरीरिक्ता
होयन्ताताफलबुधै॥७॥

नक्षत्रमात्रीकोरीतुनेमेमाशुनाशुनफलतलेषकाकोष्टमास्प
बहु॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अ	शुभगा	पु	पुत्रवती	स्वा	पररता	सा	सोलाग्न
ज	वीचवा	आ	वक्ष्या	बी	गोदुरा	ध	शुना
क	वक्ष्या	म	इक्ष्मयुक्त	अ	दुर्लगा	श	कक्षाराणि
रो	चारुलापी	पु	इक्ष्मयुक्त	ज	वीचवा	पु	लक्ष्मीयुक्त
म	दारीद्रा	ई	प्रतीव्रता	मू	पतीव्रता	ई	शुना
आ	क्रोचि	रु	पुत्रधनपु	पु	सोलाग्न	रे	पतीत्यागि
उ	पुत्रवती	बी	पतिप्रिया	ई	अनयुक्ता	०	० ० ०



योगफलम्

आद्यतौ वीचवा तारी वीचकुन्ने च रजस्वला ॥ स्तेरः प्रीत्या
 तुदपत्नो रायुष्मासु च न प्रदः ॥ सोलाप पुत्रयुक्ता तु शो
 ले मंगला विता ॥ १ ॥ अतीशौ देतु वीचवासुकर्माणि
 तु शोलाताः २ ॥ अतौ सस्यतियुक्ता च पुत्रो गायुता न वे
 त ॥ जंडे दुःखा विता तारी व्याघाते न र्त्त घाती नी ॥ ३ ॥
 अवीतौ शोलाता तारी बुद्धो पुत्रा विता न वेत ॥ हर्षते
 हर्षयुक्ता तु वज्रे चैवा तपत्ता ॥ ४ ॥ सौष्टो पुत्रा विता
 तारी व्यतीपाते विन र्तका ॥ मृतवत्सा च वर्गारो परिघे
 नात्पजीवी नी ॥ ५ ॥ शिवे पुत्रवती तारी सिचेशा घ्न
 फला विता ॥ साज्जि चर्ष परा तारी तारी मुने मुना गुणा
 नीता ॥ ६ ॥ मुने मुलका तारी ब्रह्मणि स्वपतोरता ॥ ७
 देतु देवरता वेचयं वैष्टौ स्मृतम् ॥ ९ ॥ ॥

योगमाक्रुतुलयकोपनीको व मास्यवद्धु शुना मुन परत ॥ ॥

वी.	वीचवा	व्य.	सस्यती युत	व.	अपुत्रा	सा.	वर्ग युता
प्री.	पती स्तेर	मु.	रोग युता	सी.	पुत्र युक्ता	शु.	शुलक्षणा
आ.	चन युक्ता	जं.	दुःख रापु	व्य.	तष्ट पति	शु.	शुलकारि
सौ.	पुत्र युक्ता	व.	पुत्र युक्ता	व.	मृतवत्सा	ब्र.	पररत
शो.	मंगल युक्ता	अ.	शोलाता	प.	अल्पजीवि	हं.	देवरता
अ.	वीचवा	व्या.	पती घाती	शि.	पुत्र युक्ता	वे.	वैचय युग
शु.	शोलाता	रु.	हर्ष युक्ता	सि.	फल प्राप्ती	०	० ० ०

करणाफलम्

ववे प्रोक्ता तु वंष्पा स्त्री बालवे पुत्र संपूद ॥ कोले वे पुत्र
 ती तारी ततिले चारु लाषिणी ॥ १ ॥ गरे च गुप्त पत्नी व
 ती जे पुत्री ~~गरी~~ स्मृता ॥ वीक्ष्या च मृतवत्सा च श



कुंने काष्ठी पी दीता ॥ २ ॥ चतुष्पदे मुला नारी नागे पुत्रवती
जवेता ॥ कास्तुष्टे व्यन्ती चारीतु करणा तो भुन फल ॥ ३ ॥

बव कर न मा कुतु प्रा प्र नये वच्चा वातस्व मा पुत्रवती को तव मा ज्ञा
री राती तैती ह मा वा सु ला वी राती गर मा गु रा वती च नो ज मा पुत्रवती
न ज मा म त्मा शकु नि मा चरी का मी तो चतुष्पद मा भुन नाग मा
पुत्रवती कास्तुष्टे कर न मा स्त्री को प्र च म कुतु लये वै र पा हो सी क म ज्ञा नु
रा सी फल ॥ वती

यन्नि चारी तु मे प स्पा दृष ने भुन नो जी ती ॥ मी पुत्र च न
पुत्रो क्ता क र्क दे दु री व ता वु चै ॥ १ ॥ सी हे पुत्र नारी क म
मा मा नी ती भुन नु ते वी च स रा ना री वृ क्षी के व्यन्ती चारी
ती ॥ २ ॥ च ने प ती वृ ता ज या मा स ही ना च न के के ॥ कु ले व
ने त व ती या मी ने च च प ता वु चै ॥ ३ ॥ भुन ॥
स्त्री ता ई प्र च म कु तु मे प रा सी मा न मे जारी ती हो सी वृष न रा सी
मा न मे सु प नो जी ती मी भु न म न य च न व ती सी ह मा न मे पु
त्र व ती क म मा न मे अ नी मा नी तु ता मा न मे वि च स रा ती अ
र्चा त वी चार व ती वृ क्षी क मा न मे वे स्पा च न मा न मे प्र ती वृ त्त
म क र मा न मे कृ सं गी कु ल मा न मे च न पु त्र अ र्मा नी त मा स्त्री
ता ई प्र च म कु तु ल ये ता चं च ता --- हो ती ॥ ॥ ॥

होता फल

सूर्य च व्याची सं युक्ता च डे हो रे प ती वृ ता ॥ कुं जे हो रे तु
दो न्ता उ प वु चै हो रे तु प नी ती ॥ १ ॥ जवे सर्व स म्प द्दीप्ता
त र्मा गो सो ना र प मे व च ॥ शो गो श र्व वी ता शाय हो र क स
फल वु चै ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

प्र च म कु तु ल य मा हो रा को भु न भु न फल जा त त हा ई को व मा से व जा ती नु

होरा	फल	होरा	फल	होरा	फल
१ सूर्य का व्याची	• बुध का	पुत्री का	सुन का	सोना ग	
२ चंद्र का प्रती प्रता	५ गुरु का	सर्व स म्प द्दी	६ शो का	सर्व वी ता श	
३ मंगल का पुन गा	• • •	• • •	• • •	• • •	• • •

सग्न फल

मेषलग्नदरी डाच वषले चत संयुता ॥ कामी तीशी पुने
 लोत कर्कते पती ताशी की ॥ १ ॥ सीहे पुने प्रसुता च पती पु
 मुक्ता स्थित गने के तुले चैवा च तादायी वशी के द डुदुरवी की
 ॥ २ ॥ चत लग्नगे चै गे मय मकर कर्क माने वेत ॥ कुले वंश
 दय धी च मी सर्प गुणा निता ॥ ३ ॥

प्रचम जोराशी मा सूर्य धर सो लग्न सुयो दय मा हु र्धु डे दये लग्न दे
 पी अच तक द लग्न लो द धर पोरी ते ते मेष लग्न मा स्त्री हाई प्रचम
 कुतुल नो नो फल दरी डी वष मा लो नो ते चत वती मी पुचु त मा लो
 नो पुच वती कला मा लो नो ते पती युक्ता तु हा मा लो नो ते अची वशी
 कलो नो ते द डुदुरवी की चत मा लो नो ते चत पुक्ता नकर मा लो नो ते
 कर्क शा कुल मा लो नो ते दुवे वंश (अर्थात् पती को र स्त्री को दुवे वंश
 गती) अरु मी न मा प्रचम कुतुल नो ते गुन वती जानु

ग्रह का फल

सौमिरा हुं सोरी र वी चत ते जे वतु ॥ तदा सा वी च वा तारी सर्व
 सौता उपवर्ती ता ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
 जुगल मा स्त्री को प्रचम कुतुल नो ते सह उता राहु अच वा रा की
 र वी चत मा लो ते वी च वा जानु पो वा त शोला उप स्त्री हाई कदा ची
 त हु लो को क म जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रक्त फल

प्रच पतौ फल स्त्री गां मुच त्पर ज मानुता ॥ मुन गा
 पुन संयुक्ता युक्त वर्गी त चा ते वे ॥ १ ॥ राश शोती त सं
 कास्प य दा वै रक्त सनी ले ॥ पुच कला प्रसुती स्पा ती
 ले तु स्पा प्रत प्रजा ॥ २ ॥ कर्बुर स्त्री च ते सा च पी गते
 च म त प्रजा ॥ कृषो च वी च वा तारी र दु स्पे वं वी ती ती

शेर ॥ ३ ॥ वराहचक्रवास्यातु दुर्लगा बहुशो गिता ॥ शो
 नाति वीरु सोने तुस्वरिणी चास शो गिता ॥ ४ ॥ रत्ने रत्ने न
 वेत्तु च कहे च मत्त पुत्री का ॥ पीछिता च न वेदं च्या का
 क वं च्या च पांडुरा ५ पीते दुश्चारी तो प्रोक्ता सुलगा गुंज
 वरारि के ॥ सींदुरा ने न वेत्त क त्या राजः शो गिता तत लरा ६
 श्री हार्द प्रच मकु तु प्रा प्र हु र्द ते स्मार रत्न के फल कहो ॥ स्पेन
 वरारि रत्न (अर्थात्) से तो रंगत लो लगे पुत्र वती होती (शश)
 सोतीत (अर्थात्) रवराया का ज सो रंगत लो लगे पती पुत्र वती
 होती माहुर वरारि रंगत लो लगे क त्या वती अर्थात् चैरै दोरी
 होती हु र्द ती वरारि लगे को अ का स ज सो वरारि रंगत लो लगे
 मत्त प्रजा जर्थात् वात ७ जी वे ती न ज सु क र्द) लगे को चीत्र की
 चीत्र लो लगे जो फे ८ मे र्द (पींगत) लगे के से तो के पीत वरारि
 लो लगे मत्त प्रजा जालु कर तो वरारि लो लगे नीच वा होती
 मच्च वरारि लो लगे अ व होती सो रंग तो लो लगे दुर्लगा चो र रत्न
 वीरु मान लगे पुत्र सु ल होती रवा ती हात लो लगे पुत्र वती का
 लो लगे मत्त प्रजा (पीछता) लगे को पहे तो रंग रंगत लो लगे व
 च्या होती गुता वी वरारि लगे का क व च्या होती पीत वरारि
 लगे वेश पा जालु हाते गी का ज सो वरारि लगे पुत्र वती सींदु
 र ज सो वरारि लगे क त्या वती जालु स्त्री रु र्द कोई मरी तो हो रत्न के
 फल जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

काह फल

पुर्व से सुलगा प्रोक्ता मच्च के चै व ती ॥ उपराहि
 मुला चै व साया ने सर्व लो गी ती ॥ १ ॥ स च्य पो र न
 यो ॥ र्द स्या ती री चै वी च वा न वे त ॥ पुर्व राने त चा व
 व च्या दुर्लगा सर्व संधी ॥ २ ॥ ॥ ॥
 रंग का पुर्व लाग मा स्त्री हार्द प्रच मकु तु पुत्र गा मच्च रत्न मान

येचन हीन अपराह मा नये असुन साह मा नय सर्व सुष दी गरात
का जोर मा नये वरपा आचौरात मा नये वी ~~व~~ च वा पुर्व रात्री मा
नये व च्छा संधी मा नये असुन कारी प सो फल जानु

वस्त्र फल म

शुन गा म्हेत वस्त्रा चो ही नी रक्त वस्त्र का ॥ तातां वर चरागरी
वी च वा पुष्प वंती का १ नो गी नी पीत वस्त्रा म्ही अवस्त्रा व
प्रीया ॥ सूक्ष्मा स्मा सूक्ष्म वस्त्रा च ६ वस्त्रा पती व्रता २ दुर्लगा
जीरा वस्त्रा च शुन गा म च्छ वा सता ॥ चूत वस्त्रा शुन गा री न
ही नी म ही ता न वेत ॥ ३ ॥ ॥ ॥

स्त्री को प्रथम क्रतु से तो वस्त्र मा नय शुन गा जानु रातो वस्त्र मा नये रोग होत
नी तो वस्त्र मा नये वी च वा च हो तो वस्त्र मा नये सुष हो रा चीन वी चीन मा
नये पती प्रीये हो स म ई तो वस्त्र मा नये क सांगी व ही यो वस्त्र मा नये
पती व्रता पुरा तु वस्त्र मा नये असुन म च्छ वस्त्र नये शुन गा चो पे को वस्त्र
मा नये शुन गा म्ही ला वस्त्र मा नये सदा म्ही ती जानु ॥ ॥ ॥

रजस्वला चर्म

आ र्ति वानी च तातारी ते क वै र म नी सं अ म त ॥ न चा प जा ती सं
स्पर्श कुर्यात् स्पर्श न च क चीत ॥ १ ॥ जीरा च स्व सुष नै व द से ये
व्यस्य क स चीत ॥ स्व का क्य आवे ये नै व न कुर्या दंत च्छा व न
म २ न कुर्या दार्त वेतारी ग्रहा रागो मी क्ष न त चा जे ज ग ल्य
ज न स्ना तं प्र वा सं वर्ज ये त चा ३ तर वा दी कृत न रज्जु ता
त पा ना दी व च न म् ॥ त वे स रा वे नु जी त तो ये च ज ती ता
पी वेत ॥ ४ ॥ ॥ ॥

रजस्वला नये की स्त्री ते एक चर मार हुत असु जा ती लाई न छु तु आ फा जात
मा क से लाई प र्श न गर्तु आ फा मुष ती ग रा वी स म क से लाई न दे पाई तु आ
फा वो मी क से लाई न सु गा ई नु द ती र्ति न गर्तु च नु मा म्हा दी ता न न ह तु
गा ज त ते त न लाई नु वा के न ही द तु न उ न का त नु दोरी न छु तु ता न प न

वाचतु गजा माता काला दामा पानु अहं ज्ञेयु ही ते पागीषातु ॥ ॥

रजस्वला स्नात

हस्ता तीता म्बि म्ग म्ग म्ग व सुक्क वारेणे शक्रा चिते बुनती
बो मुन वारेच ॥ स्नाता द चार्त ववती म्ग पौ इत वायु हस्ता
म्बि च्या त शिर हंत लेने ते न ग र्त म् ॥ १ ॥

रजस्वला स्त्री ते केहे का त द्वा त मा स्नात गर्तु कोष मा से ष ड् अहं म्ग ग सीरा
रे वती स्वाती हस्ता अम्बी ती ई त स व मा स्नात गर्तु चो दे ग र्त र हे त्दु
चतु र्धे ह ती सा स्पृश पार जो दर्श त त स्त्री यः ॥ पंच मे ह

ती मु द्वा सा दे वे पी च्च न क र्म ती ॥ १ ॥ ॥ ॥

स्त्री रजस्वला न या प दी ४ दी त स स्म अ प र्श द्वा (अर्चा त पु र्स्ते त द्वा त्)

कलकल

हस्त	स्वाती	अम्बीती	नगा	अनुताचा	वेगळा	तलव
उ. म्	उ. षा	उ. ला	०	उ. षा	०	०
१	२	३	५	६	७	तीनीयः
८	१०	११	१२	१३	१५	
चक्र	बुज	गुरु	शुक्र	०	०	०

अमतेतु

प्रथमे ह ती चां डाली दी ती ये व म्ग द्या ती नी ॥ त ती

ये र की प्रो स्नातु र्धे ह ती मु द्वा ती ॥ १ ॥ ॥

स्त्री रजस्वला न या प्रथम डित चां डाली हे रे दी ती य दी त मा ब्राह्म
द्या ती ती ते स्त्री दी त चो वी ती ॥ चो रे दी त मु ध जा त ॥ ॥ ॥

अमतेतु

गर्तु स्पृश पा च तु र्धे हि स्ता ते त स्त्री रजस्वला ॥ पंच मे

ह ती यो ग्पा शा दे व क र्म शो पे त्ते के ॥ १ ॥ ॥

स्त्रीगारे दीनमापतीसंग जागो को योग्य हुन्हे (परंतु) देवपीठकार्यनगर्तु
अथमतः

वर्षद्वादसकादूर्ध्वयदी पुष्पं वक्षीर्तस्ति ॥ यतपुष्पं लवेतेन
वपतसो दुवरा दीवत ॥ १॥ ॥ ॥

१२ वर्ष कपिहो स्त्रीसाई जस्वला तद्भवस (तवापी) पुष्पलेसंग
तु वशकारीतीन् गुह्यदर कतहरे को जसो जानु ॥ ॥ ॥
अथगर्भाचारप्रकरण

श्लोक

कुतोतु प्रलेशकार्य पुनश्च भुजे दीने ॥ मघागुता
तपपुजातत्पाका चतुर्वले सती ॥ १॥

प्रथमकुतुमास्त्रीकागर्भाचारपुष्पतद्वचमागर्तु भुजे दीनमा
मुलमघारेवती पद्माका अत्यई त्याग गरी अत्युचतुवले हेरीगर्तु
गर्भाचारेत्याज्यमाह

गंडांतं वीवीचं तज्जनिचत जंमक्षै च मूलांतकं द
स्त्रीपोइमचो परागदी वसंपातंतपा वैच तीम ॥ पी
त्रोः आद्यदीतं दीवाच परोद्याद्यर्च स्वपत्नी गमेनामु
त्पातहताती मत्पुनवतं जससुतः पापलस ॥ १॥ न
डाषवीपर्वरीन्ता च संचानो माका कीर्तिद्वारा न आ
तस्ते ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गर्भाचारमाजो जोवर्ज्यद सो चक्रमासहेतु ॥ ॥ ॥



जदांन	बुधतारा	जन्मतात	मूल	नारी	अश्वीती
रेवती	ग्रहदीन	व्यतीपात	वेद्यती	आश्वीती	दीन
परीघोर्ध	ईत्यातगव	पापयुक्त	नडा	जलद	बही
चतुर्दशी	अश्वी	अभावासा	पुनीमा	सकाती	रिक्ता
सव्याकाह	लौज	रवी	राती	१लादीन	२रादीन
३रादीन	४लादीन	०	०	०	०

अत्यदपी

क्रतुस्मात्तुपोनार्यसन्निबोतोपगच्छति ॥ घोरया
 नृणाहत्यायां युज्यतानुसंशय ॥ १ ॥
 क्रतुस्मात्तुगरेपद्मस्त्रीकासंगतसुतेपुरुषताईकृणाहत्याकोपा
 पस्त्रीकापतीनाईलाग्ध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अत्यदपी

काजीतोवंचनस्योवाप्रवासषपीपर्वसु ॥ क्रतुकाले
 पीतारीतांनृणाहत्याप्रमुच्यते ॥ १ ॥
 रोगीह (अचाना) प्रदेशमानयेफेरीकैदमानयेपतीस्त्रीसंगतग
 दडितोहत्याकहेकोह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

क्रतुप्राप्रदेवी १६रात्रीमाभुलाभुनम ॥

क्रतुस्वानावीकस्त्रीगारात्रयशोदसस्मता ॥ तामासा
 द्याचतस्रसुतां दीतैकादसीचया ॥ १ ॥ त्रयोदसीचशे
 पासुः प्रसस्तादशवारः ॥ तमात्रिरात्रचादाहीपुष्पी
 तापरीवरजमेत ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥
 क्रतुप्राप्रलयोतवदपीस्त्रीताई १६दीनक्रतुरहंतेस्माप्र
 भम ४रात्रीर ११ अह १२दीनईतीदीतदुत् तसर्चईत्यागगर्तु

अस्वाकी १० रात्री मुल जानु ॥

गर्जाचार को मुला मुलदीन

रात्रोचर्मा दन्ता युर्चतवर्जित ॥ पचम्पा पुत्री गोतारी पत्नी
पुत्रसुमन्त ॥ १ ॥ सप्रम्पा सप्रजा जो पी दक्षम्पा गोतारी पु
मात ॥ तवम्पा मुल जातारी दशम्पा प्रषर सुत ॥ २ ॥ रेका
दम्पा मज्जमा स्त्री द्वादम्पा पुत्रोत्तम ॥ त्रयोदम्पा सुता पा
पावर्गसंकर कारीणी ॥ ३ ॥ चर्मरश्मि कृतज्ञ अज्ञातदे
वीरुद्वत ॥ ४ ॥ प्रजापते चतुर्दम्पा पंचदम्पा पतीव्रता ॥
अश्रयः सर्वलुता गोतारी दम्पा ज्ञापते पुमात ॥ ५ ॥

क्रुतु पात्रे देषी १६ दीनतक गर्जाचार को मुला मुलदीन चक्रता स्पष्ट

दी.	फल.	दी.	फल.	दी.	फल.	दी.	फल.
१	वर्ज	५	कला	९	सोताग्नव	१३	पापकर्मी
२	वर्ज	६	पुत्रसन्तान	१०	गुरावाग्न	१४	चर्मरश्मि
३	वर्ज	७	पुत्रहीना	११	अचर्मपुत्र	१५	पतीव्रता
४	पुत्रसन्तान	८	पुत्रईश्वर	१२	इतमपुत्र	१६	इतमपुत्र

गर्जाचार तीथी वारमाह

षष्ठादमी पंचदशी चतुर्थी चतुर्दशी मज्जमा यत्र हीना ॥
शेषा मुला सुस्वितयो तीथी के वारा शशा काय सिते दुजा ॥
षष्ठादमी पोर्णीमा चतुर्थी चतुर्दशी अर्द्धी पोर्णी
वर्जगरे रौषतीची मुल जानु सोमवार रहती मुक बुद्ध यो वार
गर्जाचार को मुल जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गर्जाचार तेतस्य वारायाह

हरीहस्ता गुरावाच स्वाती वारुत वासवम् ॥ इतराचीत
यं सोमरोहीत अमुला स्मृता ॥ १ ॥ ॥ ॥
अवत हस्ता अगुरावाच स्वाती सततारका जेष्टा ॥ इतरा मंग
रोहीती ईतस्य नागर्जाचार संस्कार गर्जाते मुल दुस्वने ते कोट

गर्ताचा तेराव्या बुद्धी प्राह

केन्दुत्रि कोनेपौ अवभृतेषु पापै रूपा यारि जैः प्रग्रह ह
लगे ॥ ओनास के ५ जे पीच दुग्म रात्रौ बीया दाति ज्योति
ख मध्यमे स्यात् ॥ १ ॥

प्रथम चतुर्थः सप्तमः दशमः ईः केन्द्राः शुभग्रह भये त्रिको
णः नवमः पंचमः ईमा शुभग्रह भये त्रिज्ये सकाद शवषुः ई
मो पापग्रह भये त्रिज्या ई पुर्वग्रहले द्वे देवनो भये वीषम नवा
सका चतुष्टानमे यस्ता गतां च गतां शुभहृत्तु मरुसम
रात्री चोत्रा पुर्वसु पुष्प अम्बी ती ई तद्वत्तमा गतां च
मास च मजाल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गर्ताला पुसवत सस्कार माह

मुलादी त्रीयेते कर अवत केला इ दर्पा द्वात्रे रेवत्या मग
पंचके दिन करे नौ मे तरी कालि ज्यो ॥ तेने मास्य च वागी
मासी चतुषी स्त्री श्री गे गो अस्थि ले गते पुसवत लेचे व पुनदं
सीमांत कर्मादि मे ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

मुत पुर्वाषाढा ईतराषाढा हस्त अवत पुर्वाषाढा पदा ईतराणा
इपदा आडा पुर्वसु पुष्प रेवती अम्बी ती नरती कृती कारोही
ती मग सीरा असुदो ओ मे कासा वाते स्त्री मे का मा अन्त चत
तग्न मा कत्या सी तयो वी र ल ग मा गर्तु शुभ हृत्तु सी मे त अगो
मे का य स्त्री मुहूर्त मा गर्तु ॥ ॥ ॥ ॥

वार फल

सप्तपुष्प सौरे सुगुहा तीरी दो प्रजा मती पुसंवते वच
स्प ॥ काकी हव च्या लवती ह पुके स्त्री पत्र तालोर वी नौ म
जी बे ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
मती वार मा पुसवत गये सप्तपुजा तु स ई वार मा गेर शरीर ताश

बुधवार तागरे पुत्र ताश मुन्कर मागरे काक वच्चा असुर वी वार
मंगलवार गुरुवार पुंसवन गरे पुत्र पुत्री प्राप्ती ॥ ॥ ॥

सीमंतोत्थयत माह

पुरुष ग्रह वाराः स्युः मुना सीमंत कर्मणीः ॥ मन्त्रो मू
ग्रह वारो तु वर्जयेत् पुंसको ॥ १ ॥ ॥
पुरुष ग्रह का वार मा सीमंत कर्म गती तेषु ग्रह स्त्री ग्रह का वार
मानये मन्त्र महुत् अस्त पुंसक वीर मा अती ती कृष्ट जानु
अन्यपतेत

चतुर्थ षष्ठाष्ट ममासना जी सोरे गागरे प्रज मंवीयेपं ॥
सीमंत कर्म दी जना मी ती नां मा स ए मे वी सुवती च कुर्वात ॥
प्रज मगर्ता चारु देवी तुर्न षष्ठाष्ट म मा स मा सोर मा स दे
वी गती कत सीमंत कर्म गर्तु बा ह्य र का स्त्री हस्को अष्ट ममा
समा वी सुवती गर्तु सुन फल हृत् ॥ ॥ ॥ ॥

अन्यपतेतु

रोहि रोपे दव मा दी त्प पुष्प ह सो तरा नम ॥ पोष्ठां वैत
वन्त चै व सी मते सो म्प वासरे ॥ १ ॥ ॥
रोहि ती न ग पुत र्व सु पुष्प ह स्ता उ तरां श्रेवती अवत र्त्त त स न मा
(सीमंत) कर्म गर्तु मुना हृत् (परं तु) मुना वार मुना ती ची हेरी गर्तु
अशुदपी

पक्षि डा चरी क्ता च वी ता पंच दशी मुना ॥ चतुर्दशी च
तुर्ची च कदा ची त मुना प्रदा ॥ १ ॥ मुना स से वी सा ह्ना
ये चतुर्ची च चतुर्दशी ॥ पोर्णी मा सी प्रसं से ती कै ची त
कर्मणी ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥



सीमतगदीपसमाजो दीदतीची छरती त्याग गर्तुश्रीका
तीची पती त्याग गर्तु कोई आचार्य कासत मा जु नरासी काच
तुमा मा असु चतुर्थी चतुर्थी सुगी माई त मा सी संत कर्म
मा प्रसंगा गर्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पक्षद्वितीया

चतुर्दशी चतुर्थी अष्टमी तवमी तया ॥ षष्ठी च द्वाद
शी चैव पक्षच्छिदाह मा स्मृता ॥ १ ॥ क्रमादेता सुतीची
षुवर्जती याश्च तादीका ॥ नृता यस्तु तत्ता कदराशेश
स्तु सोलता ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

चतुर्दशी चतुर्थी अष्टमी तवमी षष्ठी द्वादशी ईतीची लाई पक्षे
दीडाला नव्युक्रमे हे ईतीची को घडी दोदतु चतुर्दशी १४ चतुर्थी अष्ट
मी १४ तवमी १४ षष्ठी ९ द्वादशी १० घडी पेंहो त्याग गर्तु

मासेस्वरानुसार

मासेस्वरासीतकडे जरवीं दुसोरें चंद्राला सातु
पंचदशी वाकरासु ॥ १ ॥ ॥ ॥
गर्लवारते दशी १० मेहाका १० स्वामी क्रमते ततको व मास्य वद

१	२	३	४	५
शुक्र	मंगल	गुरु	रवी	बुध
६	७	८	९	१०
शनी	उच्च	गर्लधारतते	बुध	शुक्र

अलमतेतु

मासे व मेही गर्लस्य कुर्यादिषो वती क्रिया ॥ अवगेचेव
गहला पुष्यचेव प्रशस्ते ॥ १ ॥ द्वितीया सप्तमी चैव द्वा
दशी च शुक्लातीची ॥ मुलग्रहो दया सप्ता शेषा च दीवसा अपी २

स्त्रीताईगर्लनयेअवमेहासा^{जर्ल} संस्कारवोहवलीगर्नुअव
गारोहीतीपुष्पदीतीमासप्रमीदादसीईगर्लताईबुलहुहुअह
बुलग्रहकाबुलतगमाअहबुलग्रहकेवारमागर्नु ॥ ॥

जर्लीरायातीप्यचमाहः

हृम्यांचवोचतीचायामारोहमवरोहरो ॥ नदीप्रतरां
चैवशकुंढीरोहसांतया ॥ १ ॥ ईगोषचतुष्टासारंमैयुतं
नारवाहता ॥ कृतेपुंसवतेचैवगर्लीतीपरीवर्जयेत् १
पुंसवतगरेपद्मिगर्लवतीस्त्रीलेअग्राजमीतमानचचनुनीचा
जमीतमानईतरनुचैरेजलनयाकानदीमानजानुगादीमा
नचनुकडाओषचीतषानुपुरुषसंगतगर्नुनारीवोहानईवा
हुहुगर्लवतीलेमतीलेयतीचीअत्पागगर्नुबुलहुहु ॥ ॥

जर्लीरागीस्त्रीताईपुत्रहुहुकीपुत्रीहुहुलेप्रह

तीचीवारनयुग्योगस्त्री ३ द्रोदी ७ हतशेषके ॥ सूर्यार
उपसुतश्चन्द्रा ५ च्छेकपाराशोस्त्रव ॥ १ ॥ ॥
कैसेहेफलागास्त्रीताईदोदोहुहुकीदोदीहुहुनतीसोचेलने
तेशदीतकातीजीवारनक्षत्रकहागर्नु ३ लेगुतलेनागहीगु
१ ३ ५ शेषरहोलेपुत्रहोलाअह २ ४ ६ शेषरहोलेकत्याहो
लीसूर्यशेषरहोलेगर्लरहनेदैनलीजानु ॥ ॥ ॥

ईतीगर्लीचानप्रकरणम्

अचप्रसुतीचानेगमनम्

रोहीरोपदवपोहोसुस्वातीवाहुरपी ॥ पुनर्वशीपुष्पहस्त



अथोपाधुतरा पुच ॥ १ ॥ मेवत्वादेतच्चाभीत्यां सुतीकाग्र
वेशातम् ॥ प्रसुतीसंज्ञेवेकाले सद्ययवयेव प्रवेशयेत् ॥ २ ॥

रोहीती श्रगसीशरेवती स्वाती शततारका पुनर्वसु पुष्य कृत्तिका
चतीका ३ उतरा अनुराधा चोत्रा अश्वीनी ईतल मा प्रसुती स्वात
मा प्रवेश गर्तु ईतल परतु प्रसुती कात मा प्राप्नोते गोतलते
उसेव षत मा सुतीकाग्र प्रवेश गर्तु को नक्षत्र को वीचार संपूर्ण गर्तु

गर्तकोतलारा

कतलं १ चतुर् २ शारवा ३ स्थि ४ त्व ५ ज्योति ६ म ७

स्वती ॥ लुक्लिहदेगसं सुती ६ मसिष्या ज्ञात कमात् १

गर्ताचा गेदषी १० मेहातक गर्त को रूप कहतु प्रचम १ मेहा
मा कतल दुन्दु अर्चातरगत शुक्र ई ३ को सयोग ते पीत दुन्दु
२ मेहा मातो पीत मजगुरा दुन्दु ३ मेहा मातो पीत मा दुहा
पाद ईत पन्त दुन्दु ४ मेहा माहादवदवद दुन्दु ५ मेहा माचाहा
वद दुन्दु ६ मेहा मा रोई पन्त दुन्दु ७ मेहा माहात ईत पन्त दुन्दु
८ मेहा मा मु राको ज्ञान दुन्दु ९ मेहा मा गर्त देषि वाहीर नीकलाको इच्छा
गर्दद १० मेहा मा वाहीर नीलद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उत्तफली

वे
दंते पुनर्वसु थमेर्भ कतो सो स्रवंधीन इप दगुज्य दीनिय

॥ हया नृनिये भागेनी स्रनर्थ स्वमतिर वागामीति उपजावर्ष १

वातस दंसज्ञ भेउत्पन्न भोभनि वातस गर्दद दीनिय मेहा मा उ
त्तभोभनि कांभार्द्राई असुभईद नृनिये मासमा वाहीर लाई

असु भहुं छ चतुर्थ मैनामा उत्पन्न भये आमा लाई दुवहुं छ ५ मै
नामा वडा भाई लाई दुवहुं छ ६ मैनामा दाह उत्पन्न भो भोगे गधु
भहुं छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रभुनिकामाह

आज १ ई १२ दी २ मी वं पकुं नमोः श्रुती मीता रुयक
केशरा ५ मकार पुग्ग तुला चार कया का स्वती हरो नी
मीता दु प्रभुतीका ॥ १ ॥ ॥ ॥

मेप मीन छलेने २ स्त्री छन वष कुल छलेने ४ स्त्री छन नुवन कर्क
नेये ५ स्त्री छन नु मकार मीन तुला कया दक्षी क सी हुने ३ स्त्री छ
ननु यसा प्रकारे सग्न वी चार गर्नु ॥ ॥ ॥

जन्म काल फल

अम्मी नी मघ मूला तां पुवर्द्धि वाच्य त्पे पीवा ॥ पुर्व दिशु
रूप शर्द्धि जत नी वाच्य तेरी सो ॥ १ ॥ ॥

अम्मी नी मघा मूल ई तक्षत्र का पुर्वार्ध मा जन्मे को छलेने वावु
लाई असु नहुन्दरे वती उपवा ई तक्षत्र का ईतरा च माई तनन
ये को छलेने आमा लाई असु नहुन्द ॥ ॥ ॥

गदांत पतंन

सर्वेषां गदजा तातां परीत्पा गो वीची येते ॥ वर्जये द्दर्शति
शाव तेषां स मा सी कं न वेत ॥ १ ॥ ॥ ॥

गदां न मा जन्मे को छलेने वात पहा ई त्या ग गर्नु जयवा इ मैना मुष ने हर्त
तीची गदांत माह

पुरा नंदार वयो सिस्र संची र्ग दी दयं तन्ना ॥ गदांत



मत्पुत्रं जन्म यान्त्रोद्धारवृत्तादीषु ॥ १ ॥

॥

पुराणि माकां अन्ने घटी अरु प्रती पदाको आघ घटी यस्से दुई घटी
संखी यस्से रीतले पादा १० अरु कादरी दुई घटी संखी जातु ईमा
जन्म यान्त्रोद्धार वीवाह ईत्यादी क मत्पु मुष हुन्छ (तसर्थ) अ
बुज्जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तृतीय गदांत

कुलीरसीं हयोः कीट्यापयोः सीं तेष्वप्योः ॥ गदांतं प्रोक्तं
शांतस्पादघटीकार्थं मती प्रदत्त ॥ १ ॥
कर्कटको अल्प आखी घटी सीं हयोः पेह्रा आखी घटी संखी यस्से क
मले वृष्ठी क अरु च गती गतेष्वप्येते १ घटी मत्पु पद जानु बुज्ज
कर्म पावर्ष्य हुन्छ ॥ ॥ ॥ ॥

तृतीय गदांत

पौंशां ग्राही योः सर्वपी ज्योः योः यच्च ज्येष्ठा मूला
तयोरंतरा तम ॥ तज्जं दातं स्पादचतुर्ती डी कं ही याना
जन्मोद्धार कालात्यगि वम ॥ १ ॥ ॥ ॥
रेवती को अल्प र घटी अरु खीनी को आदी र घटी सीं हेर
को संखी हुन्छ यो कर्म देषी असे पाठ धा ज्येष्ठा मूल ईसवे
तृतीय गदांत हुन्छ स्था माना जन्म वीवाह यो कर्म अमुक्त

चतुर्दश शिफतमाह

कृष्णपक्ष चतुर्दशी प्रसुते षड्विंश फलम् ॥ चतुर्दशी च
पट्नाग कुर्पादात्रो मुला बुधम् ॥ १ ॥ द्वितीये पीतरे
हंती च तीये माता रत्ना ॥ चतुर्थे सातं हंती पंचमे वश
ताशतम् ॥ २ ॥ षष्ठे च चतुर्दशी स्पादात्मनो वशताशतम् ३



कृष्णपद्मकाचतुर्दशीमाजसमेत्येचतुर्दशीकोइद्वैतेभागगरे
रभुलाभुलेहनुप्रचमनागमाभुनदीतीयनागमाशीभुपीता
कोदुरवजातुतरीयनागमाताकोदुषजानुचतुर्थनागमा
मामाकोदुषजानुपंचमनागमावंशगाशकोचीरुजानुष
षनागमाचतुअरुवंसपरीतासजानु॥ ॥ ॥

अमावास्याफलमाह

सीतीवात्युप्रसुताश्वदासीनार्यापमुस्तच॥ गजाश्वम
हीषीचेवकस्मापीश्रीयंदरेत॥ १॥ कुरुप्रसुतीरित
र्जसवंदोषं करीस्मता॥ यस्मप्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्व
तगासतम्॥ सर्वगंडसमस्तनदोषस्तुप्रवहो नवेत २
चतुर्दशीपुनः अर्द्धसीमादासीनार्यागाईहापीघादासरेने
सीपापानतेमाहीकहाईतीर्थतगदध अर्द्धसीमानेयेचैरेदोष
जानुचनआमुकेगास अरुगदातकोयसोषतजानु॥ ॥

द्वितीयफलमाह

द्वितीयेव्यतीपातेव्याघातविषिवेच्यते॥ सुतगंद
तागंदेवपरीधेममघंतेके॥ १॥ कातदंडेमत्पुके
अद^{ज्य}मोगेसुदाते॥ तस्मिन्गंडदिनेप्रोप्तिप्रसू
तार्थदीजायते॥ २॥ आदीदोषकरीप्रोक्तातत्रपाप
यतासती॥ ३॥ ॥ ॥ ॥

अथदीनव्यतीपातव्याघातनदावेच्यती सुतगंद अतीगंद
परीधयेग अर्जयमघंर कातदंदमत्पुयोग दज्ययोग अरुदा
रायोग यस्तोयोगमाजसमेत्येवहुतअसुतजानु॥ ॥

उपकारिदात्रफलमाह



जब दो जन्मि का ता ही तीजे जन्म नी पीता ॥ तृतीय
जन्म नी पीता स्वयं माता चतुर्थ के ॥ १ ॥ आत्मा तं पंच
मे ह ~~ह~~ मंती पक्षे गोत्र क्षय ले वेत ॥ सप्त मे चो नय कुतं जे
वन्माता मन्वे ॥ २ ॥ तव से प्रभु रं हंती सर्व हंती द
शांशक ॥ ३ ॥

जब का तन्त्र मा सें तान लये ६ घडी का १ नाग यस्तो १० नाग गनु
ई स्को फल प्रयत्न १ नाग मान ले आता बाबु को अमुन दो स्त्रो २ ना
ग मान ले पनी आता बाबु ताई अमुन ते स्त्रो ३ नाग मान ले
माता ताई अमुन चौको ४ नाग मान ले आता ताई अमुन पाचो ५
नाग मान ले बाल बहसु ताई अमुन दौ ६ नाग मान ले गोत्र ता
ई अमुन सोतो ७ नाग मान ले ८ वैकुल को अमुन आठो ८ नाग
मान ले जे वाना ई ताई अमुन ९ नाग मान ले समुद्र ताई अमुन
दसो १० नाग मान ले सर्व स्व ताई होता ॥ ॥ ॥

पुत फल

मूल से ले तब धरार ना पत्रं पुष्पं फल शीषा ॥ वेदाश्च
मुनेषोश्च वेदी राक्षस व सवस्तवा ॥ १ ॥ तं दाना रास राद्रा
मुहने दा प्रकीर्तिता ॥ मूले पुत बीता शाये शाजा मातु
बीता रा कृत ॥ २ ॥ त्वचि द्वा र बीता शाये स्तं ने हा निच
न सोये ॥ पत्रं स परी वार स्पात पुष्पे पुत प वलून ॥ ३ ॥
फल पुत ने ते रा जं शीषा या मल जी वीत ॥ ४ ॥

मुल क्षेत्र को मुल क्षेत्र जसो नाम राघव उस्मा सुभा शुभ फल
हेरु मुल को प्रमान ६० घडी ते स्मा प्रथम ४ घडी इक्षे का मुल
ये स्मा जस भये नास जान ७ अनर् ८ घडी मुल को तं भ ७ फल
ये स्मा भये हानी धन न भे त पाछे १० घडी मुल को तो चामा भये
भाइ ह को ना स दुष्ट ७ अनर् ८ घडी मुल को साया ७ फल आमा
नास अनर् ८ घडी मुल को पता फल ७ परी वार लाई असुभ
अनर् ५ घडी पुष्प ते स्मा जस भय राजा को प्रये ॥ होता फेरी

ह घडी फलनेस्मा जमभये राजपला भेलो फेर ११ घडी मु
लको साया तेस्मा जमभये धोरीवा चला मुस्मा जमभये
को कमजानु २२

मुतवासा

बवादीसी हेच घटेव मुहेदी वस्तीता मुगमतु तागताये ॥
पातात मंगे पचतु कुहीर तेने पुमोर्त पखे सस्मरती १
वव वस्त्रिक सीं ह कुन ईरासी मा मुत कोवास स्वर्गमा तेस्मा
जमभये राजप्राप्ती मेव चत कर्क ८ मक ईरासमा मुत
कावासा मनुषे हो कमा (फल) सुर्वरा कुतु खलो ई जमुनकातु
अस्मेषा कोतरा कारनक

मूर्चा स्पेतेत्र गतकास युगंन वा हुह ज्जातु गुह्य पदमी
त्यही रेहलागा ॥ वारागा डिनेत्र हुतलु कभुती तागह
इषगा तदपंचशीर राजमसस्तु ताद्य ॥ १ ॥ राजप्रीत
भयो मात नारा कामकी यारती ॥ पीत नको वलावे
घास्मा गी लो गी चती क्रमात् ॥ २ ॥

अस्मेषा मा जन्म नये पुस पकस्य कहेला ३ घडी मा अधीलो फलहेनु
(अर्जात) प्रठम ५ घडी नसक (फल) फलराज्य प्राप्ती फेरी ७ घडी अ
स्मेषा को मुप (फल) पीतु लार्ज सुन २ घडी तेन (फल) मात अ
र फेरी ३ घडी कराठ (फल) कांती फेरी ४ घडी कांच (फल) पीतान्न
की फेरी ८ घडी वाहु (फल) वलवात फेरी ११ घडी रुदय फल आ
तम घाती फेरी ६ घडी जाड (फल त्यागी) फेरी ६ घडी गुह्य फ
ल नो गी फेरी ५ घडी पाई फल चत नार अस्मेषा जन्म नये का
कोयो फल जानु ॥

बादसरासी नार

मेघो वषो ज मिथुनं कर्कटं सीरुं कं पेके ॥ तुला व वृश्चिके ॥
 चन्वी मकर कुल मीनके ॥ १ ॥

१२ रासी को ताई मां मिष देषी मीन तक क्रम से जानु ॥

रासी स्वामी

कुज सीतो बुधो धी धुर्जगर शुक्र भूमी जा ॥ सूर्य मंद

सूर्य जो गुरु क्रिया अर्ने श्वरा ॥ १ ॥

तले लोषे का को वशा दाद सरा सीका स्वामी स्पष्ट जानु ॥

१ मेघ	२ वृष	३ मीथुन	४ कर्कट	५ सीरु	६ कन्या
मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध
७ तुला	८ वृश्चिक	९ धन	१० मकर	११ कुल	१२ मीन
शुक्र	मंगल	गुरु	शनी	शनी	गुरु

ग्रह को उच्चा नीचा

रवी मेघे तुला नीचा वषे चंद्र सुवृश्चिके ॥ नौ म अ न के
 कर्के च स्त्रियां सौम्यो ऊसे तजा ॥ १ ॥ गुरु कर्के च त के
 च कन्याराहु गुरु स्पष्ट ॥ २ ॥ राहु युग्मे तुला पस्म त मोव
 के तु ज परत ॥ प्रोक्तं ग्रहाणां मुख्यत्वं नीचत्वं चक्र बुधे ३
 सूर्य मेघ रासी मानये उच्चा तुला नीचा (चंद्र वृष रासी मानये
 उच्चा वृश्चिक मानि उच्चा मिंगल मकर मान उच्चा कर्कट नीचा (बुध क
 न्या मान उच्चा मीन मानि नीचा वरु स्पती कर्कट मान उच्चा मकर मानि
 चा शुक्र मीन मानि उच्चा कन्या मानि नीचा शनी तुला मानि उच्चा मेघ मानि
 नीचा राहु मीथुन मानि उच्चा धन मानि नीचा अस्के तु को उच्चा नीचा राहु
 को मानि जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग्रह को भूर को मुल संज्ञा

करा रेवराहु मंदार्क हो नाः पापः सोम्यः सोरुतः श्री
शाईतु ॥ पुराश्चन्द्रः सोमश्चक्रः मेरुजाः सोम्याः सर्वचक्र
पुनः कावः ताः ॥ १ ॥

कर ग्रह राहु सनी सूर्य मंगल बुध पती ईका सा च माने ये पापग्र
ह हृदय कृष्ण पक्ष का तदुमा पापग्रह जानु शुभ ग्रह पुरा चिदुमा
उच शुक्र वरुस्पती जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग्रहका जाती संज्ञा

वी प्राची शो जीव शुक्रो कुजा कैराज पाता मोष चो शोवी
शोच ॥ शुक्राणां शब्दात्प जानां च मंदसी ही हतु र्हेच्छ
वशो च वागाम् ॥ १ ॥

वरुस्पती शुक्र ई बालराः सूर्य मंगल ई सनी चन्द्रमा वैस्प बुध शुक्र
शनी बां डाल राहु केतु म्हेच्छा यसा प्रकारे तव ग्रह का जाती जानु

ग्रहका स्त्री पुरुष संज्ञा

प्राक्ता नराः सूर्य कुजे मेरुजाः स्त्री बोशनी हो युवती सीते दो ॥
रत्न रवी ज्यः क्षणा दाची पास्पु रज सीता गौरय नो तमश्च १
सूर्य मंगल वरुस्पती ई पुरुष ग्रह शनी बुध ईत पुंसक शुक्र चन्द्रमा
स्त्री मरु ग्रह को गुन क हृदय सूर्य गुह चन्द्र ई सत्व गुती शुक्र मंगल
ई रजोगुती बुध शनी तमोगुती जानु ॥ ॥ ॥

ग्रहका रूप

रूपो रवीं डुकुले से नेतानो नः कुमारः सशिजो नीरुता ॥
समन्त्रिणो देवगुह सतारवो सूर्यात्मजः सेवक संतक स्यात् १
रवी चन्द्र ई राजा मंगल सेनापती बुध कुपार वरुस्पती शुक्र नको
शनी शोव जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग्रहका वर्ण

ॐ नमः सीतोरत्नरसु गौतमीतोती शुक्लस्वसीतोत्र
वर्गा ॥ सूर्यादक्षी शारहतो बुधमी दामोदर शुक्ररक्षी
वीरवी ॥ १ ॥

सूर्यको हात वर्गा चतुस्रेत वर्गा मंगल अत्यन्त हात वर्गा बुधको हात
वर्गा बृहस्पती पीत वर्गा शुक्रसेत वर्गा शनी कृष्ण वर्गा यस्ता प्रकार
ते ग्रहको वर्गा जानु अहग्रहको देवता कहिंछ सूर्यको देवता अग्नी चतु
को जल मंगलको बुधो बुधका दामोदर बृहस्पतीका ईश्वर शुक्रका ईश्वर
यनी शनीको देवता ब्रह्मा यो क्रम जानु ॥ ॥ ॥

ग्रहका दृष्टी

पाद दृष्टी दशमेत तीये द्विपाद दृष्टी नव पंचमे वा ॥ श्री
पाद दृष्टी अतुरष्टके वा संपूर्ण दृष्टी सप्त सप्तके वा ॥ १ ॥
शनि स्वेका दशे पूर्ण दृष्टी जीविस्वको नके ॥ बुध ईश्वर
पूर्ण दृष्टी नौ सप्तचतुष्टके ॥ २ ॥ ॥ ॥

ग्रहका दृष्टी जाने प्रकार कहिंछ कोही ग्रह जुत स्वातमा नमेते
ते स्वातमा १ पाद दृष्टी देवदह सो स्वात ३ १० यसरी ती हो पाद
दमा २ पाद दृष्टी ४ ८ स्वात ३ पाद दृष्टी ७ स्वातमा पूर्ण दृष्टी जा
नु (परंतु) शनी जुत स्वातमा दह ते स्वाते दषी ११ ३ स्वातमा पूर्ण
दृष्टी देवदह बृहस्पती ५ ६ स्वातमा पूर्ण दृष्टी अहग्रहत ४ ८ स्वा
तमा पूर्ण दृष्टी देवदह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दिशाको शवासी

प्राच्या दीतः सूर्य सीतार राहु मंगल दे दु सो म्यांगिर सो
दीगीशा ॥ वेदाक्षी नायक सः सुरज पूर्वा सो ज्याव
तीजे नु पुत्रा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

आठ दीशाका ८ शवासी क्रम से पूर्वका सूर्य मंगल राहु शनी

चतुर्विध बृहस्पति ई ८ अहोबुद्धका स्वाप्ती ४ अहोबुद्धका स्वाप्ती ४
अहोबुद्धका स्वाप्ती ४ अहोबुद्धका स्वाप्ती ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बादसत्तावसंज्ञा

मूलीर्वतारव्य नहुता सुवस्व सुतारि पत्नी स्मृती चर्म
कर्मा ॥ सायव्य गोवैत तुतो वीचीत्या जावा असी द्वादश
होर कोट्ये ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

हजते दधी द्वादश स्थाको शंज्ञा मूर्ति १ चत २ सहज ३ सुष ४ सुत ५ मरी ६
पत्नी ७ स्मृती ८ चर्म ९ कर्म १० आम ११ अस्वय १२ स्तो १३ स्वात जातु

केडादी द्वादसस्थानकी शंज्ञा

अठच केडु चतुर्दश कंत तुसुषां वर सप्तम संस्मृतं ॥
परा फरं चतुर्दश तुता स्मृतं शहज शचुत वां त्यमं पो
वीहमं १ इमिके तानां वरषष्ट गेरु प्रोक्तं तैवे वोप
चमत्रिकं ॥ पंडितं च चनी जंत वां शं वर्गा तमाप्ति वीवुया
वदंती ॥ २ ॥ तवमं पंचमं पचमं स्थागं त्रिकोतं परी कीर्ती तमः ३
स्वात संज्ञा जातो प्रकार १ ६ ७ १० ई चार स्वात को नाम केडु चतुर्दश
कंदक जातु २ ५ ८ ११ यो स्वात को नाम परा कर जातु ३ ६ ९ १२ यो
स्वात को नाम अपो लिम जातु ४ पंचय संज्ञा को स्वात ५ ११ १० १५
यो स्वात को शंज्ञा नाम ~~जातु~~ जातु ६ २ १८ यो स्वात को नाम
वीक संज्ञा जातु जाफ्रा तवा ४ स क मा जये ते स्को वर्गा तम जातु
अह ५ १६ यो स्वात को त्रिकोत संज्ञा जातु ॥ ॥ ॥ ॥

सामान्य द्वादसरासी फलम्

मेघे दैत्य शुपेति गर्वित वषो ना मानती र्त्त कचे भुः
कर्कट केः चती चतवपे क मा च मा मा नी ता सत्यं चै



वतुते त्वे लो महितता पाप्मा नीत वै चतुं सुर्षा यं न के
चेते चतुरता पीते त्वजी रामति ॥ ॥ ॥

जन्म का ह्मा जन्म तज्ज नये दीन अर्जति दुषी लन्तु वषमा गर्वी
मीपु नमा ताता प्रकार की बुद्धी कर्कतमा वडा भुर सी ह मा स्पी
र बुद्धी कला मा माया वात तुला मा सत्य वादी वच्ची कला मतीन
चनमा पाप बुद्धी मकर मा सुर्व कुन मा चतुर मीन मा चोर चोर
यसो १२ तज्ज को फल जानु ॥ ॥ ॥ ॥

जन्म नृमी शाग माहः

तज्जे दुन्मा दाद रो सूर्य पुत्रे गुप्तां सूरति वि सि ते पाप
वेटे ॥ तज्जे कर्क वच्ची के मंद युक्ते गती यां स्या च्चन्द्र
पुत्रे प्रसूती ॥ १ ॥ तज्जे सोम्ये वेद मगे सोम्य रेवेते
प्राते यां रेते स्वर्ग जे पुरा दे हे ॥ आपे तज्जे द्यूत गे वा मगे
के गती नूत सूर्य ते ताव संस्थ ॥ २ ॥ तज्जे तीर मंद युते
दृष्टे चन्द्रार्क चन्द्र जे ई स्वरे देवता गोर की डागे हे कला
सव ॥ ३ ॥ पुं तज्ज सभं जातु सुते स्म शाते शैल्यिके गे हे ॥
नूपा तबे च गो देवे देवा गोर मरवा लाये ॥ ४ ॥ वीक्षिते
नो म शो म्ने नु मुकार्क गुहनीः कलात् ॥ प्रसवो यं स
मारव्यातः सप्त तन्मा दिसूरि निः ॥ ५ ॥ यदे कर शि
मो तज्ज चन्द्रो दृष्टी विवर्जितौ ॥ बीज ते प्रसव चोक्तो
माता आ धै म्भ पुरा नी ॥ ६ ॥ ॥ ॥

जन्म का ह्मा जन्म तज्ज को चन्द्र माद पी १२ स्यात मा शती नये
पाप यस्को दृष्टी नये प्रसव गुप्तां स्यात मा के हे को कर्क तज्ज नये
ई सै का चन्द्र मा नये फेरी वच्ची क तज्ज मा शती नये गे कला ज्जा
मा प्रसुती लो न ल तज्ज मुला ग्रहा सी नये ४ स्यात मा मुज

ग्रह अरु चंद्रमा आकाशमीमा पुरा नये जल सी चंद्रमास
 प्रमस्थान मानयेता गार्डमा प्रसुती जानु जल रासी को लग्न नये
 ऊर्ध्वमा जल जानु जल रासी का लग्न नये उसे माशानी नये दे
 वी देवस्थानमा प्रसुती जानु जल रासी का लग्न नये चंद्र सूर्य बुध
 यो देवते नये क्रीडा गेह मा प्रसुती जानु पुरुष रासी का लग्न उशै
 माशानी नये क्रमसे मंगल बुध चंद्र मुक्त सूर्य बृहस्पती योग ग्रह
 को पती दृष्टी नये प्रसातमा प्रसुती केहे कोह अरु चित्रकार घर
 मा जानु राजग्रह मा प्रसुती केहे कोह गोसाता मा प्रसुती जानु
 देवस्थानमा प्रसुती जानु यज्ञभूमि मा प्रसुती जानु जल काह
 लग्न अरु चंद्रमा को राशी को ही ग्रह को दृष्टी नयेता प्रमज्ञा
 मा प्रसुती जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रमवज्ञानमाह

पुरवग्रहेः स्ववचुगे मुरेवत संयुतः सबः ॥ सुतो कस
 प्रमस्थितैः रस ऊहस्तु कश्चत ॥ १ ॥
 प्रसुती काह मा जल लग्न देवी २।४ स्थानमा मुक्तग्रह नये सुषसीत
 प्रसुती जानु ५।६।७। स्थानमा पापग्रह नये कश्चसीत प्रसुती जानु
 जल काह मा मनुकारक

चंद्राष्ट मंचरणी सुतम व मंचराहु र्वंच राती जल
 गुरु सूर्योये ॥ अर्कस्तु पंचन गु व व बुध अतुर्च जातो
 तजीवती नर प्रवदती संतः ॥ १ ॥
 जल काह मा चंद्र ८ स्थान मानये अरु मंगल ९ स्थानमा राहु
 स्थानमा शनी १० ~~स्थानमा~~ लग्नमा गुरु ३ स्थानमा सूर्य ५ स्थान
 मा मुक्त ६ स्थानमा बुध चर्च ४ स्थानमा यसा ग्रह को योगमा वा
 तष जन्मो नयेतो वातष वाचै देत जानु ॥ ॥ अममतः ॥
 चतुर्च न मराराहु पक्ष चंद्राष्ट मे पीवा ॥ सद्य च वचवे



मत्पुत्रादुरोयदीरक्षती ॥ १ ॥

जन्मकात्मा ४ स्थातमाराहु चतुर्दश्यातमा (अचवा) अक्षमस्थान
मानयेवातषको मत्पुत्रुहन् (शंकर) जोशीवजीते रक्षागरेपरीवान
देत ॥ ॥ अत्यदपी ॥ ॥

क्षीराचन्द्रोव्ययस्थानेपापलगेस्मरेक्षमे ॥ भुनैश्च

रहितेकेन्दुशीघ्रशयतीवालक ॥ १ ॥ ॥

जन्मकात्मा क्षीराचन्द्रमा १२ स्थातमापापग्रहनेयेअचवा १८
स्थातमानयेफेरीकेन्दुभुताग्रहकोदृष्टीतनेयेवातककोतत्का
लमा मत्पुजानु ॥ ॥ अत्यदपी ॥ ॥

दसशस्योदिवातम् जः पापैर्वहुनीरीक्षीत ॥ मेष

वृश्चिककर्कस्यो सद्यो मत्पुत्रदो नवेत ॥ १ ॥ ॥

जन्मकात्मा १० स्थातमासुर्य मेष वृश्चिककर्कट ईराशीनयेफेरी
पापग्रहकोदृष्टीनयेवातकतत्कालमत्पु ॥ ॥ अत्यमत् ॥ ॥

सप्रेमनवनेनौनचाक्षमेनार्गवोयदी ॥ तवनेनवने
सुर्य स्वत्पापुष्य प्रजायते ॥ १ ॥ ॥

लग्नेदपीलग्नेदपीसप्तमस्थानमांगल अक्षमस्थानमाशुक्रः
तवमस्थानमासुर्यनयचोराआयुजानु ॥ अत्यमत् ॥ ॥

क्षीराचन्द्रोयदालग्नेपापश्चाक्षमेकेन्दुगा ॥ सप्तलग्ने
पतीपापैयुक्तोतत्तदासीमु ॥ १ ॥ ॥

क्षीराचन्द्रलग्नमानयेकेन्दुमापापग्रहनेयेलग्नपती १ मा
पापग्रहनेयुक्तनयेदेखीत्योवातषतत्काहै मत्पुहन् ॥ अत्यमत् ॥

लग्नेक्रूरमनवनेक्रूरपाताहगोयदी ॥ दशमेनवने
कष्टजीवतिवालक ॥ १ ॥ ॥

क्रूरग्रहकालग्ननयेअह ४ स्थातमाक्रूरग्रहनेये १० स्थातमा
क्रूरग्रहनेयेवातकेवाचवहुतकष्टजानु ॥ अत्यमत् ॥

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो न वेत् ॥ तदा मातृ
नयं वीधा चतुर्धे दशमे पीतुः ॥ १ ॥

पापग्रह ६।१२ स्वातमा नये आता हाई के स अह ६।१० स्वात्मा
नये वाबु हाई के श जातु ॥ ॥ अत्यमत् ॥

अके मंद कुज अशु प्रबुता लचने यदी ॥ आता न पीत
रत्नात्मा ता चै व य वा प जा क तात् ॥ १ ॥

जन्म स्वात देषी ५ स्वात मा सुय चतु मंगल शती ये क्रम लेवा
लक पीता माता माता हाई स वै हाई असु न होला ॥ अत्यमत् ॥

सप्तमे नवमे जातो मध्यम सो नू सीत दत् ॥ राहु बलि ये
तथै वा पी पीता कष्टे त जीवती ॥ १ ॥

सप्तम स्वात मा सुय नवे १० स्वात से गत १२ स्वात मा राहु नये ता पी
ता हाई बहुत कष्ट होला ॥ ॥ अत्यमत् ॥

अष्टम स्थो यदा राहु के द्वा च ती च चतु मा ॥ स समय
अन वेत् रा तुर्वा लक स्प र संशयः ॥ १ ॥

अष्टम आता मा राहु के द्वा मा ती चा चतु मा नये वा लक को ता श
होला ॥ ॥ अत्यमत् ॥

द्वादश स्थो मदा चतु पाप आष्ट म गे हागा ॥ मा सै नै के
तत् त्पु स्पति स्प वा लक स्प ती श्चीतं ॥ १ ॥

जन्म का तमा १२ स्वात मा चतु ८ स्वात मा पाप ग्रह नये १ मै हा मा
वा लक म लु हो हो ॥ ॥ अत्यमत् ॥

षष्ठा द्वा म यदा चतु बुच युक्त अति वती ॥ वीष दोष
त वा लक तदा म लु अ जायते ॥ १ ॥

जन्म का तमा ६ अचवा ८ स्वात मा चतु मा के द्वा मा १०
बुच युक्त नये वा लक हाई वीष दोष ले ह लु हो हो ॥

अत्यमत्



अष्टमेवती ना नायके देवदासेवेत् ॥ चतुर्थी च यदा
राहुर्वर्षमेकं स जीवती ॥ १ ॥ ॥ ॥

जन्मकात्मा ८ स्वातन्त्र्यकेटुमा १॥ १४१० स्वातन्त्र्यकृत् ग्रह अस्
वातन्त्र्यकृत् पेटावातपताई १ वर्षतक अस्तीति जातु ॥ अन्यमत् ॥

जन्मस्वातन्त्र्यदानोऽशुभः शत्रुक्षेत्रे यदा न वेत् ॥ म्रियते तस्य
॥ वातस्वपीशी द्युतशंसयः ॥ १ ॥ ॥ ॥

जन्महजरेदपी १० स्वातन्त्र्यमंगलको शत्रु सत्रनये फेरिईसै
स्वातन्त्र्यमंगलनये पीताई अस्तीति जातु ॥ अन्यमत् ॥ ॥

तज्जगद्वेयदाराहुश्चंद्रापीयदीहस्पति ॥ दशाह जाय
ततस्ववातस्वमरणां क्रवंश ॥ १ ॥ ॥

अष्टमस्वातन्त्र्यराहु अस्त्वदुई सै ताई देवदन्तते वातकको मत्स्य
१० दीतमा जातु ॥ अन्यमत् ॥ ॥ ॥

वक्राशतिनो मंगलकेटुषट्वाष्टमेपीवा कुजेत्
वलीताहुकोहंती वर्षद्वयशिशु ॥ १ ॥ ॥

वक्रकोशती मंगलकासेवमा १॥ ८ नयेकेटुमानये तज्जगदे
पीषट्वाष्टमे अष्टमस्वातन्त्र्यमानये अस्त्वलवातमंगलसेदे
रेता २ वर्ष वातकताई अस्तीति जातु ॥ अन्यमत् ॥ ॥

शतीराहु कुजे मुक्तः श प्रमेन व मे शशी ॥ स प्र
मेदी वसे हंती मासे वात प्रमे शिशु ॥ १ ॥ ॥

शतीराहु मंगल ई ३ ग्रहको युक्तचट्टमा स प्र मज्जवात
वमस्वातन्त्र्यमानये १ दीतमा अचवा १ मेनामा वातकको म
स्तीति जातु ॥ अन्यमत् ॥ ॥ ॥

दसमे कवराहु पीतमात प्रपीदतम् ॥ दादरो

वत्सरेस्तुर्वहितकस्पृशसंशय ॥ १॥

॥

तज्जदेष्टी १० स्वातमा राहु दले माता प्रीता ताई दुष अरु १२ व

र्षतकमृत्पुतुत्पञ्जरी व जानु ॥ अत्यमर ॥

॥

॥

शानिसेत्रे यदा ज्ञानुर्नानुसेत्रे यदा शती ॥ दादशेव

सरेस्तुस्तस्पजातस्पजायेत ॥ १॥

॥

जन्मकालमाशानी कादत्रमा १०११ सूर्यदन्ते सूर्यकाक्षेत्रमा
शनीदन्ते दादवर्षमा मृत्युजानु ॥ ॥ अमर ॥

॥

जन्मलगे यदानो मचा व मेच बहस्पती ॥ वर्षेच

दादशे मृत्युर्पदिरसती शकर ॥ १॥

॥

जन्मलगे मंगलदन्ते अरु ८ स्वातमा बहस्पती दतन्ते

१२ वर्षमा मृत्युजानु शीबले रक्षागेरपती मर्दह ॥

॥

वर्गाशंकर शातमाह

जन्मस्थाने यदा सोरी सैं हिके यो व्यरात्तज ॥ मुको

गुरु स प्रेम नत्व मेरवी चन्द्रमा ॥ १॥ ब्रह्मपुत्रप

देवापीवेशपासुचसदारति ॥ प्राप्ते बीं शती मेवर्ष

मेच्छे नवतीता सभा ॥ २॥

॥

॥

जन्मकाह माक्षीती मे स्वातमा शती राहु मंगल नये ९ स्वातमा

मुक्त बहस्पती नये ८ मारवी चन्द्र नये घातको पुत्र नये पती

वेस्पाग मर गर्दह २० वर्ष काई मेर मेच्छे दुद वर्गा संकर जानु

अजंतातकं

तनुस्मात ॥ ॥ तज्जस्मिती दीतकर कुस्ते गपी डाए

ची सुतो वितनुते रुचिर प्रकोपम ॥ दाया सुतः प्र

कुस्ते बहु दुःषणा जंजि वेदु नार्ग व बुचा सुषकांती

दास्युः ॥ १॥ जन्मस्मात ॥ दुःखा वहा जन्म वी नाशक

रा प्रदीष्टा विते स्मिता रविशते मर नूमी पुत्रा ॥

चण्डोबुचः सुरगुहर्तृजगदगोवाताताविचंचतचवं
 कुरुतेचतस्या ॥२॥ सहजस्यात ॥ नानुः करोतीवीरु
 जंरजगीकरोपीकीर्त्तायुतंक्षितीसुतप्रचुरप्रकोप
 म् ॥ कर्दीबुचसुधीषतंसुवीतीतवेषस्त्रीतांघ्रीमं
 गुकरवीरवीजसहतीये ॥३॥ सुहृत्स्यात ॥ आदी
 त्मनोमशतयेमुषवर्जितांजकुर्वन्निजल्लतितरं
 सुचिरंचतुर्जसोबुचसुरगुहर्तृगुतदगोवासोरचा
 नितंचतपकर्मरतप्रचात ॥४॥ सुतस्यात ॥ पुत्रेवीः
 प्रचुरकोपयुतबुचस्वस्यात्मजंशगीचराततुजाव
 पुत्रः ॥ भुक्तुदेवगुरवः सुतच्यामसंस्थाः कुर्वन्तीपत्र
 बहुलंसुधीतंसुरूपम् ॥५॥ रीपुस्यात ॥ मार्तण्डनू
 मीततुजोहृतशत्रुपक्षपंगुर्गरीरीपुष्टदेवतीपुज
 तीये ॥ कावेदुजोमतिविहीनमतत्पसोर्गंजीवः क
 रतीविकलंमरुतंसशांकः ॥६॥ जायास्यात ॥
 तीगमांमुनोमर्वाजाकतीसप्रमस्याजायांकु
 र्मतीरतंततुसततीच ॥ जीवेदुन्तार्गवबुचाबहुपु
 त्रपुक्तारुपाक्षीतांजगमगोहररूपशिलं ॥७॥ मत्पु
 स्यात ॥ सर्वग्रहादीतकरप्रमुषातीतांतंमत्पुस्त्रि
 ताविततुतेकीतदुष्टबुचीम् ॥ शस्त्रान्निघातपरी
 पीडीतगात्रयक्षिसोरेखेर्वहीतमतिरागजगोह
 पेतम् ॥८॥ चर्मस्यात ॥ चर्मस्थितारवीशतेअर
 नूमीपुत्राः कुर्वन्निचर्मविहितंविमतीकुशीलं ॥
 चण्डोबुचगुसुतः सुरजमंजीचर्मक्रियासुतिरतंकु
 र्ममनुष्यः ॥९॥ कर्मस्यात ॥ आदीत्मनोमसतयेकी
 तकर्मसंस्थाः कुपुर्तरं बहुकुर्मरतंकुपुत्रं ॥ बहु
 सुकीर्तीमुसताबहुवितपुक्तरुपाक्षीतंबुचगुहर्तृ
 कर्मभाजं ॥१०॥ लाभस्यात ॥ लाभस्थितोदीतकरोत्प



लानपुनतापतिर्वह्यतंसीतीजः सीतीशः॥शोभाकी
 वेकसुनगं बलगायुषीजः शुक्रकोतीसगुनरवीजः
 शुक्रार्तिः॥११॥वयस्यातः॥सूर्यकोतीपुष्परवीयो
 वीसीलंकारांशरीसितीसुताबहुपापनाजः॥चडाग
 जोगतलतचिषतःकरांगमुक्रावहुवयकोवीजयः
 सुतीब्रम्॥१२॥राहुकेतुफलं सर्वं सतुवत्कचितंबुजे॥१३

लग्नेदधीलग्नीतुद्वादसस्यातकोफलजुगजुगग्रहजुगजुगस्यात
 माद्वेस्कोफलजगादीलेषकाकोषवारस्पष्टमातुमहदपरंनुगहु
 केतुर्ऋ२ग्रहकोफलशरीकोजसुजातः॥ ॥पुरुषजातककोषके॥

सं. स्था.	रवी.	चतु.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शरी. राहु. केतु.
१	गुरु. सरीरपीस.	सरीरपीस.	रक्तकोप.	कांतीसु.	कांतीसु.	कांतीसु.	वहुततु. पप्र.
२	अत. कांतिप्र.	वहुसेप.	दखप्रा.	तलमविधि.	वहुतच.	वहुतच.	वहुततु. ख. चत.
३	अतीउरव.	अतनास.	अतनास.	अतनास.	न.	न.	न.
४	अत. नारास.	कीर्तिव.	दुष्टवु.	भुक्तवाशि.	इतम.	वहुसपी.	स्त्रीकोवहुत.
५	सह. तीरोगी.	कीर्तिव.	कीर्तिव.	भुक्तवाशि.	इतम.	वहुसपी.	स्त्रीकोवहुत.
६	गुरु. शरीरड.	सुजोगी.	कासिए.	सुजोगी.	सुषमुक्त.	वहुसुव.	शरीरकोवहुत.
७	सुत. वहुकोची.	वहुपत्र.	संततीहि.	संततीने.	वहुप्रा.	वहुसेत.	संततीहिती.
८	सिपु. सनुतारा.	अलाती.	रात्रुनास.	बुधीहीर.	सरीरपी.	पुद्दीहीत.	रात्रुकोमाय.
९	जाय. दुष्टकर्मी.	स्त्रीरुपवा.	स्त्रीरुप.	स्त्रीरुप.	पुनवती.	सुषजागी.	स्त्रीरुप.
१०	अत्यसदु.	कीर्तिवो.	दुष्टकुपु.	इतमको.	अनकर्मी.	सपती.	दुष्टबुधीकु.
११	आप. रात्रुमेनी.	अतवा.	रात्रा.	वीचार.	वर्मवुधी.	गुगवा.	इतमकोती.
१२	वय. दुष्टस्व.	कापी.	पाप.	दरीद्रा.	कुशा.	तेगी.	तीरवासजा.

नराकारचक्रम्

रत्नं

सीरसा ~~वदनचवाह~~ भुगतं हृद्वो दूरकस्थोद्योवलीर्ग
 हासुह चजानु जघनेपादद्वयवैरुमान् ॥ मेखाद्याः स्त्री
 कीलगाश्च यः सुमुदीनः पुर्वैः सुबोधाय येनैके लग्नभ
 भनश्चकाद्यवध वयेवाज्य यासुनीः द्वांशाय ॥ ११ ॥

प्रासका रचक्रलेखन नेस्त्राभिसादीक रासीको येथाक्रमले
 राखनु सीरमा १ मुखमा २ रुक्ता ३ हृदयमा ४ उदरमा ५ कमर
 मा ६ वलीः अर्धान चाकमा ७ गुहमा ८ उरुजानुमा ९ जंघ
 मा १० पाउमा १२ यस्तो पैले ग्रहको फलानु अरुकोही आ
 चार्ज भन्की जमल ग्रदेखी पनीयासगर्ग सरीरको घा
 उ कोही भुगु जादानीमीको ॥ ११ ॥

अन्यमत

ता

यत्रये सौम्यपुष्प ग्रहा ह्योः सत्रवर्णा सन्तसुम
 राशि देखे ॥ तद्वि उस्थो वर्णा कृत्स्न लोवा
 सद्दिल्लीयुक्त गुण सिलक्ष्मि कृत्स्नान् ॥ ११ ॥

नरचक्रमा जन्मलग्न देखि जुन राशि मा ३ ग्रहभ
 येनेसको स्मान सरीरमा घात आदिचीन्ह भननेले
 क्रमले जन्मकुंदरी का वस्तु धानमा पापग्रह भये
 ता सरीरमा घात इत्यादी भन ॥ अथवा सुवग्रह वस्तु
 धानमा भये कोटीमुसा भन ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

स्त्रीजातकमाह

लग्नेच सप्रमे पापे सप्र मेव सरेपतिः ॥ प्रिय
 तेचावृमेव चन्द्रः वशावृ मेयदी ॥ ११ ॥



स्त्रीका जन्म कालमा लगन देखि पापगृह भये अरु सुथा
नमा पापगृह भयेता ७ वर्ष मा पनि नास जानु फेरी चन्द्र
यतः १८ स्थानमा भय पति ८ वर्ष मा पटी नास गर्थे ॥ ११ ॥

तनुस्वसा ॥ मूर्ते कोति विचवां दीत कृत्तु जगद्गुरु
वीर द्वा वा योजोदरी दाम् ॥ शुक्रसशा कननय श्व गुरु
च साश्वी मायुः शयच कुरुनेत्र च शर्वरी शा ॥ ११ ॥ धन
स्थान ॥ कर्धति भास्करा नैध रू राहु भौ मादारी
द्विदुरव सनुतं तिय द्दीतीये ॥ वीर शी म विचवांगु
रुशुक्र सो म्पोगारी प्रनु तत तयां कुरुते शशांक ॥ १२ ॥
महस्यार ॥ सूर्य दू लोम गुरु शुक्र बुधा सती पे कुरु
स्त्रिय सुतां च तन्नागी तीच ॥ सत्यं दी वा कर सुतः
कुरुते च ता क्वां तस्तीं ददाति तिय तं किते सें ती केय ॥
सुहृत् स्यात् ॥ स्वल्पं पयो न वति सु य सुते च तुर्ब
दो नाग्प मुषां किरां कुरुते शशी च ॥ राहु वित्रय
तत जां श्री ती जा लवी जां सो रवा श्री तां न गुरु रे ज्ये
कुधा अ कुरु ॥ १४ ॥ सुत स्यात् ॥ तदा तज र वी कुजो
खलु पंच मस्मो च द्वा त म जो बहु सुतां गुरु नार्ग बो
च ॥ राहु ददाती मर तं र विज अ रं गं कत्वा प्रसूध
ती तरां कुरुते शशांक ॥ १५ ॥ रिपु स्यात् ॥ षष्ठि
तारी पु दी वां कर राहु नो मा जीव सत्ता बहु सतां
जत नागी तीच ॥ नतुः करोति विचवां मुशतां दरी
द्रां वै स्यां स सां कत तयेः कल रुप्री मां च ॥ १६ ॥ जाया
स्यात् ॥ सो रार जीव बुज राहु र वी तु शुक्रा दधु प्रश
स्य मरणां खलु सप्त सस्या वै ज व्यं वं च तं न पंक्षय

४	सुहृद्	दरीडी	दुष्टता	असल	बहुसो	बहुसो	बहुसो	असल	पुत्रता
५	सुत	पुत्रता	बहुक	पुत्रता	ईतम	भुजफ	बहुफते	रोजी	मत्पु
६	रीपु	चतपु	वीचवा	चतपु	कतही	चतपु	दवेशा	चतपु	चतपु
७	जाया	रोजी	प्रवासी	वीचवा	ताश	नयवं	मत्पु	वीचम	चतता
८	मत्पु	वीचवा	वीमोग	चतपु	स्वतवी	स्वतवी	मरतवी	वपुत्र	मरवीपो
९	चर्म	चर्मव	चतपु	चर्मक	ई.नो.	च.पु.	च.व.	वैज्या	वैज्या
१०	कर्क	दुष्टव	पापक	मत्पु	च.पु.पती	च.पु.पत्र	च.पु.पत्री	पापक	वैजक
११	आर्य	बहुपुत्र	चतपु	बहुपुत्र	सुधी	बहुपु	पुत्रपु	च.पु.	सोहाग
१२	वय	दरीड	रीतोच	दुष्टक	सुपुत्र	भुशी	पतीबु	दरी	पापक

अथाष्टोत्तरी दशाः

आर्द्रापुनर्वसुः पुरव्यज्ञाश्चैपातुरवे दशा ॥ सघापूर्वा
तरोचे वचदुस्पचंदशातया ॥ १ ॥ हस्तोवीशारवाः
वीजाचस्वातीनोमदसास्मता ॥ जेष्टातुराचाभूते
चसोम्यस्पचंदशावुचैः ॥ २ ॥ अतिदिक्कुराः पूषाई
षाचैवशतेदशा ॥ चतीष्टाशतताराचपुर्वानाद्रप
दागुरोः ॥ ३ ॥ ईलापुषाश्वितीकातराहोश्चैवदशास्त
ता ॥ कृतीकोरोहीतीचोक्तामृगः शुक्रदशावुचैः ॥ ४ ॥
मृगान्तातान्करोतेवहेयाः सूर्यादीकादशाः ॥ क्रूरजाल
भुजाप्रोक्ताभुजास्पातसोम्यरेवदशाः ॥ ५ ॥ सूर्यस्य
रसवर्षारिणोदोत्पचददोवच ॥ सोम्यस्पवसुवर्षारिणी
ऋषीचतुवचस्पच ॥ ६ ॥ मंदस्पदशवर्षारिणीगुरोः
कानविंशतिः ॥ रोहोर्द्वादशवर्षारिणीतार्गवैस्पकविं
शती ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आर्द्रातक्षत्रदेवीः आरतगरीः मृगशिरातक २८ तक्षत्रमा
सूर्यदेवीः शुक्रतक ८ ग्रहकोष्टकपृककोष्टमाः महादशा

कोवर्षशंखा जानु अहोदश ज स कात्मा दुते ही गह को
दशापे हे जानु चक्र वाट् स्पष्ट हेतु ॥ ॥ ॥

ग्रहकाअन्तरदशाः

महादशास्वस्वदशाकतिघ्नाहृतावसुव्यामचरान्तीरे
टाः॥अन्तरदशास्पृगजितेचराणां तदेकन्तोबोक्षीमा
हादशास्पात्॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कोहीग्रहकोअनारदशातीकालुद्धनेदशावर्षसंख्यादेवीते
स्कोवर्षसंख्याजोर्तदन्तर१०८तेनागलीनुजुनअंकरोषव
द्धसोवर्षजालुषको१२तेगुलुर१०८तेनागलीनुजुनअंक
रोषवद्धसोमेनाजालुफेरीजुनसेषदुतेसलाई३०तेगुलुर
१०८तेनागलीनुजुनअङ्कजोयोसोदीनजालुफेरीजुनसेषदु
तेसलाई६०तेगुलुर१०८तेनागलीनुजुनअंकजोयोसोघदी
जालुयसाप्रकारतेअनारदशाजालु॥ ॥ ॥

काष्ठकेश

सूर्यको महादशा वर्ष ६					चन्द्रको महादशा वर्ष १५						
आहु पुनर्वसु पुष्य आश्विन मघा					पुर्वा उत्तरा						
ग्रह	अन्तरदशा				फल	ग्रह	अन्तरदशा				फल
	वर्ष	मास	दिन	घटी			वर्ष	मास	दिन	घटी	
रवी	०	४	०	०	असुख	चन्द्र	२	१	०	०	शुख
चन्द्र	०	१०	०	०	शुख	ज्येष्ठ	१	१	१०	०	अशुख
ज्येष्ठ	०	५	१०	०	अशुख	पुष्य	२	४	१०	०	अशुख
पुष्य	०	११	१०	०	शुख	शरणी	१	४	२०	०	अशुख
शरणी	०	६	२०	०	अशुख	गुरु	२	७	२०	०	शुख
गुरु	०	०	२०	०	शुख	रवि	१	६	०	०	अशुख
रवि	०	६	०	०	अशुख	शुक्र	२	१०	०	०	शुख
शुक्र	१	२	०	०	शुख	रवी	०	१०	०	०	असुख
संख्या	६	०	०	०	०	संख्या	१५	०	०	०	०

ज्योमको महादशा वर्ष ८						बुचको महादशा वर्ष १७					
हस्त चोत्रा स्वाती बीसाषा						अनुराधा ज्येष्ठा मूल					
अन्तरदशा						अन्तरदशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दीन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दीन	घटी	फल
ज्योम	०	७	३	२०	अशुभ	बुच	२	८	३	२०	शुभ
बुच	१	३	३	२०	शुभफल	शनी	१	६	२६	४०	अशुभ
शनी	०	८	२६	१०	अशुभ	गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ	राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ	शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ	रवी	०	११	१०	०	अशुभ
रवी	०	५	१०	०	अशुभ	बुध	२	४	१०	०	शुभ
बुध	१	१	१०	०	शुभ	ज्योम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	८	०	०	०	०	संख्या	१७	०	०	०	०

शनीको महादशा वर्ष १०						गुरुको महादशा वर्ष १६					
पूषा उषा अश्लेषा मघा						चरित्रा शततारका पुषाजाद					
अन्तरदशा						अन्तरदशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दीन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दीन	घटी	फल
शनी	०	११	३	२०	अशुभ	गुरु	३	४	३	२०	शुभ
गुरु	१	६	३	२०	शुभ	राहु	२	१	१०	०	अशुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ	शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ	रवी	१	०	२०	०	अशुभ
रवी	०	६	२०	०	अशुभ	बुध	२	७	२०	०	शुभ
बुध	१	४	२०	०	शुभ	ज्योम	१	४	२६	४०	अशुभ
ज्योम	०	८	२६	४०	अशुभ	बुच	२	११	२६	४०	शुभ
बुच	१	६	२६	४०	शुभ	शनी	१	६	३	२०	अशुभ
संख्या	१२	०	०	०	०	संख्या	१६	०	०	०	०

राहुको महादशा वर्ष १२
उन्नावेवती अश्वीनी नक्षत्री

शुक्रको महादशा वर्ष २१
कृतीकाराहीनी नक्षत्री

अन्तरदशा						अन्तरदशा					
ग्रह	व	मे	दी	घ	फल	ग्रह	व	मे	दी	घ	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ	शुक्र	४	१०	०	०	शुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ	रवी	१	२	०	०	अशुभ
रवी	०	८	०	०	अशुभ	चन्द्र	२	११	०	०	शुभ
चन्द्र	१	८	०	०	शुभ	मंगल	१	६	२०	०	अशुभ
मंगल	०	१०	२०	०	अशुभ	बुध	३	३	२०	०	शुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ	शनी	१	१०	१०	०	अशुभ
शनी	१	१	१०	०	अशुभ	गुरु	३	८	१०	०	शुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ	राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	१२	०	०	०	०	संख्या	२१	०	०	०	०

वीशोन्तरीमाहादशा

पक्षोत्तरजगुर्गसंकृत्वतन्मशोकेन्द्रकुजागुसुरम् ॥

शनिचन्द्रजकेतुनार्गवापरीशेषातुदशाधिपास

त ॥ १ ॥

॥

॥

॥

॥

वीशोन्तरी दशा प्रकार उत्तरतत्तन्मा २ क्रमगर्तु दत्ते जाग
हीतु सेष जो वचत दत्ते स्को १ वचे सूर्यको दशा २ वचे चन्द्रको
दशा ३ वचे मंगलको दशा ४ वचे राहुको दशा ५ वचे गुरुको
दशा ६ वचे शनीको दशा ७ वचे बुधको दशा ८ वचे केतुको दशा
९ वचे शुक्रको दशा असुअधीपती जानु ॥

दशाको वर्ष संख्या असुलोपानोप

कुतुदीगिरयोचतिर्नपातिच्यतीमेह्योतरवा



समा. क्रतुतोहि मता अद्यादी मा जती न स्याद्यदी
 को. समाहताः ॥ १ ॥ न लो गे न न ताः फल प्य न्ता
 कष्ट दुःखा दशा मानवे द्वा ग्प संज्ञा ॥ १ ॥ ॥
 वीशोतरी दशा को वर्ष संज्ञा क्रतु नगे को ६ दी क क १० गिरी
 क ७ अती क १८ तप क १६ अति यती १६ मे घ १७ रु य १८ त २०
 ई क्रमे हे वर्ष संख्या सूर्या दी मु क्रा त त क को ष मो हे तु अ म ज त
 म जु न त स न मान पो त स्को ई ष का हे तु न पां ना हु त्ते फेरी
 ज त न स त्र को जो घ दी द्ते स को पु र्व ६० मा क म ग र्त् जो घ दी ई
 मा ग ई हे तु न नो ग हु त् न पां त जो न जो ते स्को त स त्र को प
 ती का वर्ष ते गु त ही तु न नो ग जो ना च घ दी न य ते स्को ना ग
 ती तु जो न शेष आयो सो वर्ष जानु ते स सेष ता ई १२ हे गुण
 दी तु नो उप ले ना ग प ~~ते~~ म ली तु जो अ डू आयो सो मा स
 जानु फेरी जो शेष द्ते स्को ३० ले गु दी नो उप ले ना ग ती तु जो
 अ डू र हो सो दी न जानु फेरी जो शेष द्ते स ला ई ६० ले गु न र
 नो उप घ डी ले भा ग ली तु र जो अंक आयो सो घ दी जानु य सा
 प्रकार ले दशा त्पा ई तु ॥ वीशोतरी क्रम ॥ ॥ ॥
 कृती का दी क्रमेणो व ज्ञाया वीशोतरी दशा ॥ अ न र द शा
 यु ता वर्ष मा श वर्ती ताः ॥ १ ॥ ॥ ॥
 कृता देषी न र ती त क न स त्र अ रु द शा अ न र द शा का स्वा मी
 ना म फेरी वर्ष संख्या को मा स्प द् जानु ॥ ॥ ॥
को व क म



सूर्यको महादशावर्ष १०
कृतीका ईषा ईषा
चंद्रको महादशावर्ष १०
रोही हस्त अवगा
शुक्रको महादशावर्ष ७
मृग चीना चरीषा

अन्तरदशा				अन्तरदशा				अन्तरदशा			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
रवी	०	३	१८	चंद्र	०	१०	०	मंगल	०	४	२७
चंद्र	०	५	७	मंगल	०	७	०	राहु	१	०	१८
मंगल	०	४	५	राहु	१	५	०	शुक्र	०	११	५
राहु	०	१०	२४	शुक्र	१	४	०	शनी	१	१	५
शुक्र	०	५	१८	शनी	१	७	०	बुध	०	११	२७
शनी	०	११	१२	बुध	१	५	०	केतु	०	४	३७
बुध	०	१०	५	केतु	०	७	०	शुक्र	१	२	०
केतु	०	४	५	शुक्र	१	८	०	रवी	०	४	५
शुक्र	१	०	०	रवी	०	५	०	चंद्र	०	७	०

राहुको महादशावर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शतता
शुक्रको महादशावर्ष १८
पुनर्वसु बीसाषा पूना
शनीको महादशावर्ष १८
पुष्य अश्लेषा उभा

अन्तरदशा				अन्तरदशा				अन्तरदशा			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
राहु	२	८	१२	शुक्र	२	१	१८	शनी	३	०	३
शुक्र	२	४	१४	शनी	२	५	१२	बुध	२	८	५
शनी	२	१०	५	बुध	२	१	५	केतु	१	१	५
बुध	२	५	१८	केतु	०	११	५	शुक्र	३	२	०
केतु	१	०	१८	शुक्र	२	८	०	रवी	०	११	१२
शुक्र	३	०	०	रवी	०	५	१८	चंद्र	१	७	०
रवी	०	१०	२४	चंद्र	१	४	०	मंगल	१	१	५
चंद्र	१	५	०	मंगल	१	११	५	राहु	२	१०	५
मंगल	१	०	१८	राहु	२	४	२४	शुक्र	२	५	१२

बुधको महादशावर्ष १७
पूर्वा ज्येष्ठा रेवती
केतुको महादशावर्ष १७
मघा मूल अश्वि
शुक्रको महादशावर्ष २०
उफा पुषा भरणी

अन्तरदशा				अन्तरदशा				अन्तरदशा			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
बुध	२	४	३७	केतु	०	४	३७	शुक्र	३	४	०
केतु	०	११	३७	शुक्र	१	२	०	रवी	१	०	०
शुक्र	०	१०	५	रवी	०	७	०	चंद्र	१	२	०
रवी	१	५	०	चंद्र	०	४	३७	मंगल	३	०	०
चंद्र	०	११	२०	मंगल	१	०	१८	राहु	२	८	०
मंगल	२	५	१८	राहु	३	११	५	शुक्र	३	२	०
राहु	२	१०	५	शुक्र	०	४	५	शनी	१	८	०
शुक्र	२	३	५	शनी	१	१	५	बुध	२	१०	०
शनी	२	८	३७	बुध	०	१५	३७	केतु	१	२	०

महादशाऽन्तरदशाकोफल

सूर्यकोदशा

देशान्तरचरितं जवंचुवीयोगदुरवमुदे गरोन्मये चार
 नयेचपीडा ॥ पूर्वस्थितस्य तीव्रितस्य चरितं सेताशोनातो ॥
 दशाजततकातदशान्नवंति ॥ १ ॥
 प्रदेशमाजातु नार्ह हस्तसितदुतीतु दुरवमत नार्ह चीतारोगन
 ये चारेदधी नये अरु अची कोचतताश यो सूर्यकोदशाफलप्रा
 प्रीजान्ते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चन्द्रकोदशा

हेमादिभुती वरवाहतातलान्नः शत्रुप्रतापवत्तव
 दिपरंपराचमीयातुपातशयताशतनोजताती
 नूतंसदाशशिदशागतेन नवंति ॥ १ ॥
 चौरैरुभये सुवर्ण घोडा हाची ईकोलान्नः शत्रुताशवत्तवदी
 मीयो नोजत आसत ईत श्वसुकोलान्नयोशवचन्द्रकोदशा
 जान्ते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शोभदशा

भुपातचोरनये वही कताचपीडा सर्वागरोगनये
 दुःखेताच ॥ चिताचरम्वहुकषदरीदुयुक्तस्पास
 वदाकुजदशाजते तेन नवंति ॥ १ ॥
 राजाकान्ते चोरकोलेय अजीदेधी पीदा शोवेशरीर शोरोज
 नये चौरैरुष चीतापाई ते चौरै कषदरीदुहेते यो सोमगतदु
 शाफलप्रा प्रीजाजान्ते ॥ ॥ ॥ ॥

राहुकोदशा

दीतोतरोन्नवती बुद्धिहित चिंता सर्वागरोगनय



दुःखसुदुःखिताच॥ पापातिवंचवहु कष्टदुरीड
युक्तरोहोदशाजततकाहदशानवति॥२॥ ॥
मनुष्यदीतहुते बुद्धीहीतहुते चिन्तापाईतेसवैअंगमासोग
दुरहुते बुद्धी पापदेपीवस्व नचेरे कष्टदुरीदुहुते यस्तोगाहुको
दशाफलप्राप्ती जानु॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुरुको दशा

राज्याधिकारपरिवर्चितवितवतींचर्माधिकारपरी
पालनसिद्धिबुद्धी॥ सद्धिग्रहोपीचतुचात्समद्धितो
चस्पादेवतागुरुदशागमतेनवती॥ १॥ ॥
राजाकोअर्थाकारचिन्ताससचर्ममाप्रकारबुद्धिसरीरमाआं
तंतुसत्यवीचारवात्तुचतुचात्सवबुद्धीहुते यस्तोगुरुकोदशा
फलप्राप्तजानु॥ ॥ शरीकोदशा ॥ ॥ ॥

मीच्यापवादचवंचतमर्जहातीमित्रेषुवंचुवचेतेषु
युद्धबुद्धी॥ सिद्धचकार्यमत्रसदावितवस्पात्सर्व
दाशरीदशाममतेनवती॥ १॥ ॥

मीच्याअपवाददुसरेकोवचवश्चतुद्वयतासमीत्रवंचुह
संगकहहसीद्धकार्यकोताशयोशरीकोदशामाफलप्राप्ती
जानु॥ ॥ ॥ बुचकोदशाः॥ ॥ ॥

दिव्यांगतामदतसंगमेकेलेशोष्यतातावितासम
निरागामेकोनिरामे॥ हेमादीरतवीनवागमकोश
च्यातंस्पात्सर्वदाबुचदशागमतेनवती॥ १॥ ॥

उन्नमस्त्रीकोप्राप्तीरतीअरुताताप्रकारकीसुखप्राप्तीभीतास
सुवर्गात्तर्हत्यादीवितवयुक्तस्वरकोच्यातुयोबुचकोदशाकोफलजानु

केतुकोदशा

भार्यावीयोगजतीतंचशरीरदुःखदुःखश्च हातीरतिक
 वपरंपराच॥ रोगाश्च वंचुकहहश्च विदेशताचकेतोर्द
 शाजतनकालदशानवन्ती॥ १॥ ॥ ॥
 स्त्रीवीयोगसंवन्धीशरीरको दुःखदुःखताशवहुतकवरोगीवंचु
 वर्गसंगवैर देशान्नरवासयो केतुकोदशाको फलजानु॥ ॥

शुक्रकोदशा

आरामवचीपरिगर्वशरीरवदिश्वेतातपत्रचनव्याप्त
 माकुलंच॥ आयुःशरीरसुतपोचसुखंतरागां दुःखच
 नार्गवदशाजसनेनवन्ती॥ १॥ ॥ ॥
 सुषस्यानअर्जातवद्येचाईत्यादीको वदिशरीरको पुष्टद्वप्रा
 प्रीचनव्याप्तप्राप्ती आयुष्यवहुत पुत्रादीको सोखदुःखप्रा
 प्रीयोफलशुक्रदशाको जानु॥ ॥ ॥

अथयोगिनीदशा

मंगलापिंगलाच्यात्यान्नामरीनदिकापिच॥ ईका
 सिद्धासंकटाचयोगित्यक्षोदशास्मताः॥ १॥ ॥
 मंगला १ पिंगला २ च्यत्या ३ न्नामरी ४ नदीका ५ उल्का ६ सिद्धो
 संकटा ७ यो ८ प्रकारयोगिनीदशाको अगाडी स्पष्टदुःखेसाजानु
योगिनीस्वामी

अथाशामचीशाः क्रममंगलापाशशितीक्षानातु
 गुरुर्नृसिसूतः॥ बुधः सूर्यसुतुर्नृगः सिंहिकायासु
 तः संकतायासाजातेचकेतु॥ १॥ ॥
 मंगलादीकदशाकास्वामीचंद्रसूर्यमंगलबुधशरीशुक्र
 राहुकेतुशंकटादशाकास्वामीयो मंगलादीकदशाकाक्रमते
 स्वामीजानु॥ ॥ योगिनीदशाक्रम॥ ॥



स्वर्गः पिता कितयेते संयोज्य वस्तु निर्जवेत् ॥ योगीय
 होम गारव्याता बुध पाते त संकटा ॥ १ ॥

दशाह्वा उते प्रकार उक्त दशमा चक्र ३ गरेर ८ हे नागली उक्त
 सौ जन्म तसत्र पुष्प ८ ते स्मा ३ जोरेर ११ हुन्दु ते स्मा ८ हे नागली
 दा ३ शेष वचो ते स्मा चला को दशा आई द्यु स्मा प्रकार ते दशा
 क्रम जात ॥ ॥ वर्ष संख्या ॥ ॥

एकदिनी गि वेदाश्च पंचषट्सप्तमानी च ॥ अष्टवर्षा
 गि हिनव ते मंगला दाव तु क्रमात् ॥ १ ॥
 आठ योगीती वर्ष संख्या मंगला १ वर्ष पींगला २ वर्ष च्यप ३ वर्ष
 आमरी ४ वर्ष च्योका ५ वर्ष ईल्का ६ वर्ष सीदा ७ वर्ष संकाता ८
 वर्ष च्यला प्रकार ते वर्ष संज्ञा जात ॥ अंतर दशा ॥ ॥

अचांत दशाया प्रकार प्रवक्षि दशा वार्षिक संस
 वर्षे रागुराप ॥ ततः षट् विंशती ह्यवर्षा दी का मास
 दारेव त विद्विर्विचै यो फलार्थम् ॥ १ ॥

प्राप्त दशा देषी जुत दशा को अंतर न तु द्द ते स्मा वर्ष संख्या ते प्रा
 प्र दशा को गुण दी तु ते स्मा गुण दू को ३६ हे नागली गुर अंतर द
 शा हुत्त अगा दी चक्र ते षे को द्द ते स्मा हे त लियो मातु महुत्त

मंगला १	पींगला २	च्यप ३	आमरी ४	च्योका ५	ईल्का ६	सीदा ७	संकाता ८
वर्ष १५३६	दी ७२०	दी १०८०	दी १४४०	दी १८००	दी २१६०	२५२० दी	दी २८८०
मंगला १०	पी ४०	च्य ६०	आ १२०	च्य २५०	ई ३६०	सी ४९०	सं ६४०
पीता २०	च्य ६०	आ १२०	च्य २००	ई ३००	सी ४२०	सं ५६०	च्य ८०
च्यप ३०	आ ८०	च्य १५०	ई २४०	सी २५०	सं ४८०	च्य ७००	पी १६०
आमरी ४०	च्य १००	ई १८०	सी २८०	सं ४००	च्य ६०	पी १४०	च्य ३४०
च्योका ५०	ई १२०	सी २९०	सं ३१०	च्य ५०	पी १२०	च्य २९०	आ ३२०
ईल्का ६०	सी १४०	सं २४०	च्य ४०	पी १००	च्य १८०	आ २८०	च्य ४००

सी ३०	सं १६	सं ३०	वी १५०	वा १५०	जा २४०	ज ३५०	ई ४८०
सं ५०	सं २०	वी ६०	वा १२०	जा २००	ज ३००	ई ४२०	सी ५६०
वर्ज १६	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०

दशा परते फल माह

मंगला मंगला नंद य सो दु विगादा यिती ॥ पींगलात
 उते बाजी मर सो दुःख संक्रमे ॥ १ ॥ चलाचल सु हृतव
 चुरूप सी मंत्री ती का करी ॥ आ मरी जल नू सिद्धि न्ना म
 ये सर्व तो दी शुभ ॥ २ ॥ न डी का सु भं संपती विहा सब
 शदा पीती ॥ ईत्का राट्प न तारो गप हारिणी दुख कारी
 गी ॥ ३ ॥ सिद्धा साच ये ते कार्य रणा वै सुख दान वेत ॥
 संकटा कंता बाजी मर नै श कारी गी ॥ ४ ॥ ॥
 मंगला दशा को फल मुक्त कार्य आनंद दुःख अरु य स दी ते हुन्दे
 पिंगला को फल शरीर बाजी मर को दुःख न म न गराई ते हुन्दे
 चला को फल आरोग्यता सु हृत व भु हुह संग ते दुःखाल सुदर
 ता दी ते हुन्दे आ मरी को फल स्थान तारा दी शा न म गराई ते
 हुन्दे भ डी का को फल सुख संपती विहा रा अरु य स दी ते हुन्दे
 ईत्का को फल राज न ये च तारा श रोग जस्त पीडा दी ते हुन्दे सीद्धा
 को फल कार्य सिद्धि अरु सुख प्राप्ति गते हुन्दे संकटा को फल संक
 ट बाधि मर से द श नै दिने हुन्दे य हो जान ॥ ॥

सूर्या दी तां दी न दशा

रवी दी न तख संख्या चटु मा बा म वारोः क्षीति त त य
 गजा म्बि चटु जषट् सरा च ॥ रा ती र स गुण संख्या वाक्प
 ती र्ता ग वारो र्त्त य न युज कर हुः स प्रतीः शुक्र शंख्या ॥ १ ॥
 जल ता वी श तीः स र्ज त ती द श चटु मा ॥ चतु र्च नो म

चाष्टौ च षष्ठ्युच्यते चतुर्थके ॥ २ ॥ सप्तमे दशशेरीः स्या
 नवमे चाष्टमे गुरौ ॥ दशमे राहुवींशत्मा तदोच्यते न
 जादशा ॥ ३ ॥ फलं ॥ पंचाननो गोतुतामश्च सौख्यं पीडा
 च तं क्रमात् राशे सौख्यं च शोकं च जलसूर्यदशा फलं ४
 १ वर्षमा सुर्मा दीनवग्नहको दशा प्रकारः सूर्यजलस्या तदधी १२
 रासीनो गगर्दहते स्मासनग्नहको दशानो गगर्दहते स्को प्रकार २०
 दीनको ~~सूर्य~~ सूर्यदशा जलस्या तदेजानु फलं राशे दत्तु ५०
 दीनचतुको दशा तृतीयस्या तको १० दीनसूर्यनो गगर्दह फलं
 ताता प्रकारको लो ग २० दीनमंगलको दशा चतुर्थस्या तको ८ दी
 नसूर्यनो गगर्दह फलं रोग असंताप ॥ ॥
 ५६ दीनबुधको दशा षष्ठ्या तको ४ दीनसूर्यनो गगर्दह फलं
 सुषकारक ॥
 ३६ दीनसूर्यको दशा सप्तमस्या तको १० दीनसूर्यनो गगर्दह
 फलं पीडाकारक जानु ॥
 ५८ दीनबृहस्पतीको दशा नवमस्या तको ८ दीनसूर्यनो गग
 र्दह फलं चतः प्राप्ती ॥
 ४२ दीनराहुको दशा दशमस्या तको २ दीनसूर्यनो गगर्दहते स्को
 फलं ताता प्रकारको शोकगर्दह ॥ ॥ ॥
 १० दीनशुक्रको दशा द्वादशस्या तमासूर्यपुरा नो गगर्दहते
 स्को फलं सर्वसौख्यकारक जानु ॥ ॥ ॥

नीलवस्त्रक

तीचिवारं च तस्य ता मास सप्तमी तं ॥ नवमी सुह
 रे द्वागं शेषं दीनदशोच्यते ॥ १ ॥ रवी च दौ शौ मराह

गुमंदहकेसीतो ॥ नमो गौतादशाहेया फलपूर्वक

मेवही ॥ २ ॥

॥

॥

॥

॥

तीथीवारनक्षत्रकोसंपुराजिकसकठागरेतेस्मात्ताफाताई
काजसेरकोसंख्यामीताईतु २तेनागतीतु शेष १ रेहसूर्यकोद
शा २ रेहचंद्रकोदशा ३ रेहमंगलकोदशा ४ रेहराहुकोदशा ५
रेहगुरुकोदशा ६ रेहशुक्रकोदशा ७ रेहबुधकोदशा ८ रेहकेतु
कोदशा असंबुत्तरहे शुक्र दशा यतीतदशाको जानु ॥ ॥

अथ मत

जन्मताराचतुर्गुराति विवारसमन्वितं ॥ तवनी सुहरे
द्रागंशेषं दीतदशोच्यते ॥ १ ॥ रवीणाशोकशंतापौश
शाकेकेमतान्नको ॥ नृमीत्रेतुमत्तुस्पादुचेप्रहावीवर्च
तम् ॥ २ ॥ गुरौवितं नृगौशेषशंतापिडा तसंशय ॥ राहु
ताघातपातौचकेतौमत्तुदशाफलम् ॥ ३ ॥

जन्मनक्षत्रको ४ गुरागर्ततेसमातीची संख्यावारसंख्याकोदश
हागर्तरेतेनागतीतु शेष १ वदोसूर्यकोदशा फलशोक संताप २
वचेचंद्रकोदशा फल कुशल तान्न ३ वचेमंगलकोदशा फल मत्तु
कारक ४ वचेबुधकोदशा फल बुजीकोदशा ५ वचेगुरुकोदशा फल
यनप्राप्ती ६ वचेशुक्रकोदशा फल सुखकारक ७ वच्यशुक्रकोद
शा फल पीडाकारक ८ वच्यराहुकोदशा फल घात असुपात अर्थात्
पुर्णविचोलेकेतुकोदशा फल मत्तुकारक यसाप्रकारलेतीत
दशाक्रमजानु ॥ ॥ अथोच्यतेकरतम् ॥ ॥ ॥

मासेशुक्रबुधादिता सार्द्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगु
रुश्चैवसपादयेदितेशशी ॥ १ ॥ राहुरादशात्मासात
त्रीशत्ताशाशतैश्चरः ॥ राहुवतकेतुस्तुसुरासीयोगाः

प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥ फल ॥ सूर्य पंचदिनं शशित्री च तीका नो
 मो व वे वा से ॥ सप्तारं ह्युराता बुचत्रयदिनं मासद्वयं
 गुरो ॥ क्षरा मासं रवी जस भव सततं स्वर्गानुमास द्वे पेक्षे
 श्वे वतया फलं परी मोतं हेयं गहाणं फलं ॥ ३ ॥ रासी प्रवेसे
 सूर्य रौ मये बुक्क रहस्यती ॥ राहु मरु शरी श्रोते सोम्ये
 वसदा मुन ॥ ४ ॥

सूर्य दी न व ग १२ रासी गोचर मानोग गर्द द ते स्को फल आरी मया
 नहु न्दो जगु क मे हे दी न संख्या स ही त न द द र सूर्य १ रासी एक मे का
 मानोग गर्द द न सो जा द्या ५ दी न फल दी न्दु च १ रासी २ दी न मा
 नोग गर्द द सो ज न ३ च दी फल दी ने हु न्दु म ग १ रासी एक मे का
 मानोग गर्द द सो जा दी को ८ दी न फल दी ने हु न्दु बु च १ रासी १ मे का
 मानोग गर्द द सो ज न ३ च दी फल दी ने हु न्दु गुरु १ रासी १ मे
 का मानोग गर्द द सो म न्य ना ग ३ २ मे का फल दी न्दु बु क १ रासी १
 मे का मानोग गर्द द सो म न्य ना ग ३ १ दी न फल दी न्दु रा शी एक रासी
 ३० मे का मानोग गर्द द सो ज न को ६ मे का फल दी न्दु रा हु ज स के तु
 एक रासी १८ मे का मानोग गर्द द ज न को २ मे का फल दी न्दु ॥ ॥
स्वात पर ते फलं

सूर्य स्वात विता रा न पे मि यं मा न हा गी म न्द दै त्प ॥ बी ज उ यं
 मो र्ग पी डा सु क ते ह ति सि दि ना प म न्द हा गी ॥ १ ॥ च द्वा नं
 च च न रौ ष्य रोग का र्थ सि ति मि यं ॥ मि यं म तु न प न यं सु
 र म्मा य व यं क मा त् ॥ २ ॥ नौ मो री नी ती च न ता रा म र्च न
 यं त वा स सि ति म र्च ता न ॥ च ता ते यं स नु न यं च पी डा रौ
 क न यं हा गी म न्द मे त् ॥ ३ ॥ बु च सु वे चं च न म तु नी तीं
 च नं स ज्जं स्वा त म्मा च पी डा ॥ अ र्च स जं सौ र व म्मा त्मे सो
 र्वा अ च सी ज न्द ग हा क रो ती ॥ ४ ॥ गुरु न यं च नं ह्ने रा
 च न ता सं सु षं सु ची ॥ सा तं रौ गं सु षं दै त्प ता नं पी डा

वज्रमन्त्रात् ॥ ५ ॥ कवी शत्रुता शंभुते सौख्य मन्त्र सुताप्री
 तिपोः साध्य संशोक कर्म ॥ ६ ॥ वरुण सत्तानं वीपती च ताप्री च
 ताप्री ते गोपायते गोपायते ॥ ६ ॥ शरी सर्वता शत जावीत
 ता शंभुते सन्नुद्वेग सुतादेः प्रवृद्धि ॥ अमि दोष संवितीपु
 दुष्यता संतया दौर्भत संचतव ह नर्म ॥ ७ ॥ राहु रूति तया
 तेश्वचत वैर सुधी अयि ॥ कर्ता व सुच दुत वीर सौख्य श्रवक
 मोत ॥ ८ ॥ केतु क्रमा दुज वैर सुख नाती शुच्यत ॥ गती ग
 दं दुष्कृति च शोक कीर्ति च शत्रुता म ॥ ९ ॥

रासी	रवी	चतु	मंगल	उच	गुरु	शुक्र	शरी	राहु	केतु
गुरु	ताश	अनप्रा	शुभ	वंचत	नये	मन्त्रा	सर्वता	हारी	रोग
अन	नय	अप्रा	अप्रा	अप्रा	अप्रा	अप्रा	अता	अता	वैर
सह	हस्ती	सुष	अप्रा	पीत	हैस	सौषे	अता	अप्रा	सुख
सुहृ	माहा	राज	नये	अप्रा	अता	अप्रा	शर	वैर	नये
सुत	हित	का	अता	रोग	सुष	पुप्रा	पुप्रा	शुद्धी	शुद्धी
रीपु	बीजये	हस्ती	तान	स्या	शुची	श	अप्रा	हस्ती	अप्रा
जाया	मार्ग	हस्ती	खर्च	पीडा	मार्ग	नये	शेष	कतह	मार्ग
पुतु	पीडा	पुतु	मन्त्र	अनप्रा	रोग	शोक	शत्रु	अता	रोग
अर्म	पुगप	राज	पीडा	रोग	सुष	अप्रा	अता	पाप	दुष्क
कर्म	मीदी	सुष	शोक	सौष	दीगता	माह	सुष	वेन	शोक
आय	तान	तान	अप्रा	सौख्य	तान	वीपती	अप्रा	सौख्य	कीर्ति
व्यप	हारी	खर्च	हारी	ताश	पीडा	अप्रा	अप्रा	शुद्धी	शत्रुता

यस्को अर्च एही को वार सप्प मातु महुत्थ ॥

अस्य चतुको पंचक कर्म वर्जः

जन्म स्वर्क शशा केतु पंचक मर्ती वरु यतः ॥ यात्रा पुदं
 च गृह वेस म ॥ १ ॥

यात्रा गर्त जातु पुद गर्त जातु वीवाह दौर गी ह प्रवेस यस्तो पाच
 कर्म जन्म स्य चतु मावर्ज गर्त ॥ चतु वत ॥

दीपचतुष्टयं शुक्लं अथ चन्द्रोदयते ॥ अथ मेघादशकृते
चतुर्थे अष्टकं अत्ये ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शुक्लपद्माचतुर्वहवातुह्नुकृष्णपद्मातारावतीयोह्नुत
आपीचतुमावहवान्तयेताराकेशदायीह्नु ॥ ॥ ॥

गृहहृकोतेवस्थात

येवचराहुरतोष्टवर्गादशाक्रमाद्वाष्पशुक्लाश्व
ति॥ दानाचैतातेसुतरांपसलोस्तेननुतादातवीचीप्र
वक्ष्ये॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुह्यगोचरमाजसर्वामाअचवा दशमाअभुन नयेता
ईसगहकोदागनद्वयेअचवाअगादीलेषीयेकोदुसामा
फीकगर्तु॥ ॥ वारकोदाग ॥ ॥ ॥

ना तु सो बुलदाता दपहरति तृणां वै कृतं वा सरो अथ सोः
 मः श्री षट्च दाना दवति वर सुतो लो जनात्पुण्यदा
 तातः ॥ सो ष्प सा स्त्र स मंत्रा कु सुहरी न जनात् नार्ग वः शु
 च व स्त्री ते ह स्ता तात्प्रजाते दी त क त न यो ब्र ह्म न त्या पो र्च ॥ १ ॥
 सूर्या दी वार को दुष फल को स हो स न ला ती ती न दान दी तु सो
 सूर्य को तां बुल चद्र को श्री षट् च दान मंग ह को ब्रा ह्म णा नो
 ज न पुण्य दान बुच को शा स्त्र का मंत्र को दान ब्र ह्म स्प ती को हरी न
 क्रि मुक्त को से प त व स्त्र रा ती को ते ह दान अस्त्रा कु के तु को द शा मा
 ब्रा ह्म णा दी को शै वा न म स कार ग र्ती ॥ ॥ ॥

गहहहकोदाग

सूर्य ॥ माराणी कृष्णायुक्त सब तस्ये कौसुमको सो गृहे
हे मता म् ॥ भारत कंचन दत्त मं बुजं च बंदति दातृ ही कोरा
चराये ॥ १ ॥ चत् ॥ अत कहसं सीत वस्त्र दजी संख मोक्ति

कंसुगंचव ॥ रजतंदवाश्चटारीष मत्तच्छाते ये त्वरी
 तम् ॥ २ ॥ मंडूह ॥ प्रवाल गोचममसूरी काश्च वष
 सतामकरकिरपुष्प ॥ आरक्तवस्त्रगुडे हेमताम्रदुष्टा
 यन्नोमावचरक्तचदतम् ॥ ३ ॥ बुध ॥ नीलवस्त्रमुद्र
 हैमवुचायरत्नपाणिदासीकाहैमसर्पी ॥ कास्पदतं
 कुजरस्पाचमह्योरोप्यसस्पुखजात्मादीकं च ॥ ४ ॥
 गुरु ॥ अश्वसुवर्गाम्रचुपीतवस्त्रमपीतव्यालं हवरा
 सुपुष्पसशर्करतद्रजतिप्रभुं दुष्टाय सांते गुरवेष्ट
 गीत ॥ ५ ॥ शुक्र ॥ चिह्नवस्त्रमपीदागवार्चिते दुष्ट
 जे मुनिवैरे प्रणोदित ॥ तंतुहं च तसुवर्गारोप्यकेव
 उकंपरीमंगलचवलांगो ॥ ६ ॥ शनी ॥ मासाश्चेते
 लंवीमहेतुगीहंतीताः कुतित्वा महिषीबलोह ॥ क
 शाचयेतुप्रबदंतीतुतुष्टाय दानवी नन्दनाये ॥
 ७ ॥ राहु ॥ गोमंदरतंचतुरंगमश्च सुगीततेतामह
 कंबलंच ॥ तिलाश्चेतेतं खतुलोहमिन्नस्वर्गतवेदात
 मिदं वदति ॥ ८ ॥ केतु ॥ वैदूर्यरत्नसतितंचतूतं सुकं
 वताश्चापिमदोमृगस्य ॥ शस्त्रे च केतोपरीतोषहे
 तो द्वागस्य चान्यकठीतं मुगीतैः ॥ ९ ॥ ॥
 येस्कोअंर्यअगादीलेषेकाचकेदेषतालेस्पष्टमातुमहुत्वा ॥

ग्रहकोजपसंख्या

रेवः सप्तसहस्रातीचतुस्पैकादशैवतु ॥ नौमेदरासह
 स्रातीबुधेचास्रसहस्रक ॥ १ ॥ एकोतवींशतीजीवे

बुधेवेकादशपवतु ॥ चयोवींशतीमंदेचराहोराद
 शेवतु ॥ २॥ केतोसप्तसहस्रातीजपसंख्याप्रकीर्तिता ३
 सूर्यादीकतवगकोदातजपसंख्याचक्रवातहेतु ॥ ॥

नाम	रवी	चतु	संगत	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	राहु	केतु	
क र त र	माता	धृती	गुण	नील	चोदा	वीरव	उत्ती	जोतेद	वेदय	०
	गोड	सपेता	डोड	मग	शोका	चाव	तेल	रत्न	रत्न	०
	सेव	महिषी	मसुरी	सोता	सहन	धृत	नील	चोदा	नील	०
	तातव	संष	ताहवे	रत्नस	वीताव	सोता	नील	नील	तेल	०
	गुद	मोती	कैतव	पन्ना	वीताव	चादी	कुतवी	तेल	कंवत	०
	सोता	सोता	ताहव	दाशी	नील	हीरा	जेस	भावता	कलुषि	०
	तावा	चादी	गुड	धृत	फुल	सुगन्ध	लोह	कंवत	शस्त्र	०
	रक्तचंद्र	०	कासा	चीनी	शुभ्र	कमल	नील	वक्रा	०	०
	कम	०	तावा	लोथी	हरीद्र	०	०	तेतमीमहा	०	०
	जपसंख्या	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	१०००	०

ग्रहपीदानीकार्त्तव्य

देवब्राम्हणावदनादुस्त्वनसंपादनात्प्रदनात्प्रत्यहंसा
 धुनामंपीनापराधुतिरवैश्वेक्याकारनात् ॥ हो
 मादच्यरदर्शनात्मुचीमतोनावाज्जपादागतोको
 कुर्वन्ति कदाचदेवपुरुषः स्पेवग्रहाः पीडयन्त ॥ १ ॥
 देवताब्राह्मणालाईदोगदीगुगुस्कोअर्तीहीगुसज्जनकाशुष
 वाटवेदपुरातईतमकढीकोअवगागर्तहोमपशुदर्शनशुद्धम
 नहेनावहेजपदागईत्यादीकार्यगतलिग्रहकोपीडाहुंदोन
ईतीगोचरप्रकरणात्
अन्यजातकर्म

जोतेपुत्रेपीता कुर्यान्नादीआखवीचागत ॥ जातक
 मंतत कुर्यादसैराहंततापुर ॥ १॥ ^{तकलार्ह} ॥
 दोरेजमेतेवीतके वावुहे जातकर्मगर्तुआकतेवांहुलास्पसग
 रीनांदीआचपुर्वकयजावीचीलेकर्मगर्तु ॥ ॥ तामैकर्ण ॥
 पुरवारकत्रयसैत्रनेतुमगनेजेवाचगीष्टोतरादीत्याखेष्ट
 वगमकर्ममुनदयोगेप्रशसेतिथ्यो ॥ अहिदादशकेतुधा
 नदीवशेसस्तथैकादशेगोमीहालीघरेषुहर्कबुचमो
 जीवेशशाकेपीचो ॥ १ ॥ ॥ ॥

पुष्पहस्तान्नीचास्वातीअतुराचाअगशीराजेवाचगीष्टाईतार
 जन्मदीतदधी१२अचवा११दीगमाअहस्तते१६२०१००ईरवषसीह
 कुलवम्भीकईमुलतगरआदीतवारबुचवहस्पतीबुक्रशीईकार
 शिक्तातीच्यादीदुष्टयोगादीहोदीमुनदीहेरीनामराषतु ॥ ॥

अवकहदाचक्रमाह

चूचचोलासितीप्रोक्तालीतलेलो नरापचा ॥ अईउरें
 कृतीकास्मादोवावीतुराहीती ॥ १ ॥ वेवोकाकीमगशी
 राकुचउहृतयाद्राकी ॥ केकोहाहीपुनर्नस्पाडुहुहेहोडा
 चपुष्पन्त ॥ २ ॥ डीडूडेडोतुआशेषामामीममेमघास्म
 ता ॥ मोयदीदुपुर्वफल्गुटेटोपाप्पुनरंतज ॥ ३ ॥ प्रोक्त
 पूषागाचोहस्तजेपोररीतुचीवका ॥ सूरैरोतातचास्वा
 तीतीतूतेतोविशाखीका ॥ ४ ॥ नागितुतेऽतुराचर्षतोया
 पुतुईदुल ॥ मेपोलानोमूलनेस्पातपुर्वपादाबुदाफ
 डा ॥ ५ ॥ लेलोताज्युतराषाढाजजेतोस्वातीजीदुवेत ॥
 खीखुरेवखोअवतुलगागीगुजेचनीविका ॥ ६ ॥ गो
 शशीमुशतनीषासेसोदादीतुपुर्वनात ॥ ईनादधा
 तम ~~सु~~जेयोदेदोचाचीतुरेवती ॥ ७ ॥ ॥ ॥



अजाव कहद चक्रस्य कृति का दिते पी ॥ अष्टिना दीता मे पाद्वार
 भक्त वेगत तन्मेरा वाताता सुषवाचा यशी घो पस्मि ते ये चाष्टिना
 दीत सत्र पाद ता मारी तिरव्यते ॥ तत्र अई उ ए ते पा इ स्व त दी र्घ
 त्वा न्मिय मः ॥ तत्र अई उ ये जो ई द्विर्जन स्वर युक्त नामा द्य स रा गा
 गी य मः ॥ ए ओ ए ते यो इ स्व त्वा ना वे नार्चा दी र्घ त्वा मे व ॥ एवं ता म
 क्षरा ता स म नी ष म सं र व यो र गी य मः ॥ व्याव हारी के ये व सं षा या
 स म नी ष म त्व यो र्गि य मा त ॥ अ न्य को रौ हि रा रै व त आ य न्तर
 राः ए व मा स ता म स्व पी उ पे द्यो य न्तर पुरु ष ई त्ना दी शि ष प्र यो गा
 गा दु ष त्व स्मा त ॥

॥

॥

॥

॥

नामा सर का ती मी त न सत्र का ४ व र त मा ४ अ सर चक्र वा दे हे नु ॥

ब. च. चो. ला. अ. मी. ती.	हू. हे. हो. दा. पु. ष्य.	रू. रे. रो. ता. स्वा. ती.	जु. जे. जो. पा. अ. नी. जी. त.
ली. लू. ले. लो. न. रू. ती.	डी. डू. डे. डो. आ. मी. षा.	नी. नू. ने. नो. वी. शा. षा.	खी. खू. खे. खो. अ. व. त.
आ. ई. उ. ए. क. ती. का.	मा. मी. मू. मे. म. घा.	ता. ती. तू. ते. अ. नु. त्वा.	गा. गी. गू. गे. अ. नी. द्या.
वो. वा. वी. वु. रो. ही. ती.	मो. टा. टी. दु. उ. र्वा.	को. या. यी. यु. उ. र्वा. द्या.	गो. सा. सी. सु. रा. त. ता. का.
वो. का. की. म. ग. सी. रा.	टो. टो. पा. पी. उ. र्वा. त.	यो. पो. पा. नी. नु. त.	से. सो. टा. टी. उ. र्वा. ना. ड.
क. च. उ. छ. आ. डा.	पू. ष. रा. ठ. ह. म.	कु. या. फा. डा. उ. र्वा. जा. द्या.	ह. धा. धी. न. उ. र्वा. ना. ड. व. ट.
के. को. हा. ही. पु. न. व. सु.	पे. पो. रा. री. वी. ना.	मे. नो. जा. जी. उ. र्वा. त. वा. दा.	दे. दो. चा. ची. रे. व. ती.

मैचकोरा ह न म



शशीतुरगचतिष्टोरेवतीपुष्पचीनाशतनीषगगुराचा
 न्युतरास्वातिहस्त॥बुधगुरुलगुवारेसौम्यहजेर्नकस्प
 तीगदीतसिंहपुर्वमंचकोरोहंतु॥ १ ॥ ॥ ॥
 मगशीराज्यसीतीच्यतीष्टोरेवतीतीष्पचीनाशततारकाअगुराचा
 उर्तगस्वातीहस्तबुधबृहस्पतीशुक्रशुनगहकाहगमावाहष
 लाईपलंगमाशयेतगराउर्तुवदीयाहुं॥ ॥ दोलोरोहंत ॥ ॥
 आदोहसयगपुसांदादसेदीवस्पबुने॥ ॥ योदेरोहंतुक
 त्यामागतक्षत्रविचारणा॥ १ ॥ ॥ ॥
 १२ दीतकादीतकुमारलाई १३ दीतकादीतकमालाईकुलतामासुता
 उर्तगस्वातीतक्षत्रादीकेबीनारगर्तपदैत॥ ॥ दुग्धपातमुर्तुतम॥
 रेकत्रीसदिनेचैवपयशंषेनपाययेत॥ अन्नप्रासतत
 क्षत्रदिवशोदयराशीषु॥ १ ॥ ॥ ॥
 वाहषलाई ३१ दीतकादीतअलप्राशतकातसत्रमारजुतलगमासुर्तु
 दयहुं॥ सोहीलगमाशंषमादुचहातीवाहषलाईपीयाऊवेसहुं॥
ताम्युलनसगा

सार्चमासदयेदद्यातांबुलंप्रचमंशिसो॥ कर्पुरादीकसं
 मीअवितासायहितायच॥ १ ॥ मूलेषुचित्रकरतिष्प
 हरीदुर्जेनेषुपौषोतचामगशिरेदितिवासोषु॥
 अर्कदुजीवकागुबोचतवासेरेषुतांबुलनक्षत्रविची
 मुतीनीःप्रसीद॥ १ ॥ ॥ ॥
 वाहषलाईप्रचमपात॥ नैरामाकपुरादीमुक्तहेमुखसौरवक्षित
 कातीमीनदीतुपरंतुमुतचीनाहस्तातीष्पअवगाजेष्टोरेवतीमृग
 शीरापुतर्वसुजार्तसर्तबोफेशुक्रबुधरसाशुनयोगमावाहष

हाई पातरुवा डंगु नगी अने क आचार्य ले ने के कोइ ॥ ॥
सूर्यावतोक न म

रुसः पुष्प पुनर्वसु हरी युग मैत्रवयं रोही गीरे वत्पुतर
 फाल्गुनी मग युता पादोतर स्वातीने ॥ मोसो तु र्यतति
 ये कोशनी कुंजोत्पत्का चरी काति निसीं हा दी वये रा सी कुं
 नशही तं निष्काश न सखिते ॥ १ ॥ ॥

रुसः तीष्ण पुनर्वसु अवरा चरीष्ठा जतुराचा जेष्ठा मूह रोही गीरे
 वती उतर फाल्गुनी मग सीरा उतरा पादा स्वाती चतुर्थ जयवा तती
 ये मै ~~हा~~ ती सीं रु कं पानुता कुंज ईरा सी कान ठुता पा वात पता
 ई सूर्य को दर्शन गरा डंगु चरु राती मग हरी काती नी जयी त ॥ ११४
 ई ती नी अवस्था गगर्तु ॥ कर्णवेच ॥ ॥

रोही रायुतर मु हो मैत्र नग ने वी लुचये क वये वत्पान पुनर्वसु
 दयने के कर्ण सवेच मुनः ॥ मोते स्त्री चतु म नये पुन घटे वर्ष
 वी युगे तिथी सोम चंद्र गुरो रे वी च राग पत्पत्का च वी लु बुने १
 रोही गी उतरा मूह जतुराचा मग सीरा अवरा चरीष्ठा रात तारका रुस
 चीचा स्वाती रे वती पुष्प पुनर्वसु पूर्वा ई तल नहार मीन कला चन
 मी पुन कुंज ई तग मा वीष मवर्ष मा वीष म ती नी मा वुन चैडु गुरु
 र वी वार मा वात पको काते हे डंगु चतुर्थ मा स मा न दे दग ॥ कथी सूत्र वं

अवेत रोरे रा शिशोः समात्पवातं च सस्ताप्य न ज त्म विषये ॥
 कला युषो वृद्धि करं च कर्म तं चार्य च्छाती सुवर्गा पुन ॥ १ ॥
 वात पता ई सजा ती मा न हे १ वर्ष मा डं त म स्ता गगर्तु ई जय पुष्प वी रोस
 न ना गी मी ती कोशनी कर्ण गरी ज त्म तल न मा सुवर्गा युक्त कं न ती
 क म र मा वा नी दी ठु बुन हु न्द ॥ अजा ज न प्रा त ॥ ॥

प्रवर्द्धा नरणी नृजंगवस्त्रा तत्का कुजा कीर्तना नृदापर्व
चसप्तमी शशी नारायण मपी द्वादशी ॥ षष्ठे मासे च
नलसरा विधी स्त्रीणां मयुकपंचमे गोकला उमहा
ये वुचवते पसे चो गे मुने ॥ १॥ ॥ ॥

३ पुर्वा आर्द्रा नरणी जमेषा सततारका मंगलशती नृदा दीती वी
पर्वसप्तमी रीका ती वी द्वादशी ईको त्या गगर्त चो रा लाई ई मेहा
अनवा मेहा कला लाई पमेहा अनवा वीष मे मेहा मा वष कत्या
मी न पीनुत ईत गगमा मुना पो ग मुक प स मा ना ल प लाई अन प्रास
नगराई ॥ ॥ चौलम ॥ ॥ ॥ ॥

रेवत्या द्यकरव्या दीती मगजे व्हा सुवी ह्नु वे प पुष्प चो
तरगे गुौरवी कवी दुहे पुपक्षे सीतो ॥ गो स्त्री मत्त म
चापकुल मकरही त्वाचरी व्हा ती वीष व्ही पर्वत नाष्ट
मी मपी सीती वाही च चूडां मुना ॥ ॥ ॥

रेवती अम्बीती हस्त चीना स्वाती पुनर्वसु मगसी राजे व्हा अवत
व्ही व्हा शततारका पुष्प ईत स च मा ईतरा पणामुपमा मुक रहस्यती
सई वुच ईवार मा मुक प स मा चौल गगर्त मुन हुद वष कत्या च न पीनु
त कुल मकर ईत गगमा त्या गगर्त ती वी रीका व्ही पुर्व अष्टमी अई
सी ई चडा कर्म त्या गगर्त ॥ ॥ वी द्यार ॥ ॥ ॥

रेवत्या मगपमे हरी गुमे पुर्वासु हस्त नये मूले ॥ अम्बि
जीवना उन्न गुजे सो मे न गु जीवयो ॥ अवे पंच मे के वी हा
यती खी हा त क्का यष व्ही पुता री का सो ण दी ते ते न
वी वुचे प्रोक्तो मुहूर्त मुन ॥ १ ॥ ॥

रेवती मगा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्प अमेषा अवत नती व्हा पुवा हस्ता
चीना स्वाती मूह अम्बीती अनी जीतरवी मुक वुच गुई वार मा पा

11

मौजीवंचतपुहर्त

11

11

新

चार

11

वर्षसंख्या

विहल

11

1)

गुरुवृत्तः

ब्रह्मणे

पुराणी चैते उपासीत कौमाहीता ॥ सर्वपांचगुरो

सूर्यचंद्रवत्सालीता ॥ १॥

॥

॥

वर्णपतीवत्तवातनयेतामो जीवन्मृत्युसर्वेता ईगुवत्सुर्ववत्
चक्रवत्तनयेगर्तुशुनहुन् ॥ ॥ श्लोक ॥

॥

॥

त्रयोदशादीचत्वारिसप्तम्यादितिभिन्न यमचतुर्थी

काकीतीप्रोक्ता अष्टावेव गतग्रहा ॥ १॥

॥

त्रयोदशी प्रतीपदातीची चार असु सप्तमी अष्टमी त्रयोदशी चतुर्थी

ईजाठतीची फलगत हस्तकाहुत सोव जगत् ॥ ॥ मुद्राणां वृत्तबन्धसंस्कारमाह ॥

महार्द्रा अवर्द्धा देववसुने पुष्पतया चाश्वेने रेवत्या भग

रोहीती दिती करे मेनेत जावास्ते ॥ चीनास्वाती मघातर

भगुसुतेने मेतया चादृजे शुद्धाता बुध अश्लेषा कभीत

संस्कार कर्मोत्तम ॥ १ ॥

॥

॥

॥

शुक्ल आर्द्रा अवरा बीसाषा चतीष्ठा पुष्प अश्वी तीरे वृषी भग

रोहीती पुनर्वसु हस्ता अतुरावा शततारका चीना स्वाती ३ ईत

राईत सत्रमा असु मुक्ता मंगल बुध ईवारमा शुद्धाई मो जीवन्मृत

संस्कारगर्त ॥

॥ अजवीवाह प्रकराण ॥

॥

॥

तत्रादौ देवज्ञपुजतम् ॥ देवज्ञपुजयेदौ फलतांबूल

पूर्वकं ॥ त्रिवेदे ये सुमत सास्वक्यो दाहता दीकम् ॥ १॥

प्रथमज्योतिषजाने लाई यजाशक्ति फलतांबूल पूर्वकपुजागर्त

पद्मि वातकन्या कापीता संगवी वाहको मुक्ता मुन प्रसुगर्त ॥

॥

अस्तोदय

प्रागुदृतः शी सुहरं स्त्री तयं सितः स्नात्वा द्वादशाहं

वदीता तीवृद्धि ॥ प्राक्पक्षे नवगदीतो नवसीधम्

येः जीवस्तु पक्ष्मपी वृद्धशीर्षी वर्ज्ये ॥ १ ॥
 पुर्वका मुक्तको डे दये हुत्तु जव ३ दीत शिशु त्वका अचवा अच
 हुत्तु तव १५ दीत वृद्धका वर्ज्य गर्त अरु पक्षी मको डे दये नये ५
 दीत शिशु त्वका अरु १० दीत वृद्धका वर्ज्य गर्त गुरुको असो द
 यको १५ दीत वर्ज्य गर्त ॥ स्त्रीता कुयोग ॥ ॥

मूलज्ञान गुणां हति व्यालजा कुहतां गता ॥ वीशाषडा
 देवरश्मि ज्येष्ठिका ज्येष्ठतासिका ॥ १ ॥ ॥

कल्पाजन्म मूलतश्च मानये गुणाता स अस्तेषा तस्मानये वेषपा
 वीशाषा नये देवरं ताश अस्तेषा तस्मानये जेठा ज्युकोता स
वर्ष प्रमात माह

षड्व सज्येता द्वा ह्या कल्पा वर्ष दयंत त ॥ सो मो नु जे

सात स द्वा चर्व अत आ तह ॥ १ ॥ ॥

प्रथम ६ वर्ष कल्पा को वीवा हत गर्त की त नते प्रथम २ वर्ष च द्वा
 नोग द्वा (अनार) २ वर्ष गंजर्व नोग ग द्वा (अत नार) २ व
 र्ष अगि नोग ग द्वा द कल्पा वीवा ह सु द्वा ता ॥ ॥

अस्य वर्षा भवेद्गोरी न वर्षा चोहिनी ॥ दश वर्षा भवेत्कंसा द्वा दसे वृषलि
 मता ॥ १ ॥ गोरिडाना गहोर्क वैकुंठ मुरोहिनी द्वा दत ॥ कंसाडाना व
 ल्लोके रोखी नरज स्वला ॥ २ ॥

आठ वर्ष की मपे उसको नाउ गोरि ९ वर्ष की मपे तोहिनी १० वर्ष की मपे कंसा
 ११ वर्ष की मपे तप सुद्धीना मजानु न येसको फल गोरिडाना न नाग लोक
 को प्राप्ति रोहिनीडाना ले वैकुंठ प्राप्ति कंसाडाना वृष्म लोक प्राप्ति अम
 सुद्धीडाना लोको प्राप्ति वासो कंसाडाना गर्त को फल जान ॥

मंगल विद्या

लगने वेसे व पाता है पासीने चास मेकजे ॥ पतिहंती स्वमती
रुभर्तु भार्या वीतासयेत् ॥ १ ॥

वीकहस वा पुनर्ष कौम गला हं ह पोसको प्रका ॥ ११२४ ॥ १८ ईच्छा नमा
मंगल म पेस्ती मंगल वती कहिह मंगल दोषि मंगल म पे मपेतागर्तु (अप
वा) पुनर्षको ग्रह वलवान मपेगर्तु सु मडीह ॥

जेष्ठवीचा

द्विजेसौ मध्यमो प्रसूतो वेकजे व सुभावह ॥ जेष्ठप्रवर्षे नकु
ह्वीत वीवाह सव समयेत् ॥ १ ॥

पुनर्षवा कन्या जेष्ठो मपे (अपवा) जेष्ठमैहा मपे पलोको २ जेष्ठ मागर्तु
मध्यम १ जेष्ठ मागर्तु सुमहोला अर्धपुनर्ष जेष्ठस्त्री जेष्ठमैहा जेष्ठ मपे
वीवाह न गर्तु

हो तो

वीवाहला इवजे

आषाढ पूर्वाती चतुस्रसे वीवाह न पोषे न च मध्यसीने के वीधे
ये ॥ नैवादा गमवाते भार्गवे च जीवे वृथ तो येन वृत्तमो र्वा
लभाये ॥ १ ॥ जीर्वाण मत्रीती मरेण्ड मवीधिते त मास ३
थीकित्री दी तस स्पृशी त वेमेच ॥ १ ॥

आषाढ देषी ४ मैरु पोष चेन गुरु गुरु मुकको अष्टयसी हस्य
अचीक मास सय मास येती वीवाह मातागगर्तु ॥ ॥

मरु अरुचन्दु वत

स्त्री तांगु रवत अष्ट पुरुषाणां रवे रवतम् ॥ दयो अरु

वत अष्ट मिति गेर्ग राना पीतम् ॥ १ ॥ ॥

स्त्री ताई गु रवत पुरुष ताई सूर्य वत अष्ट अरुचन्दु वत दुवे ताई अ
वतान् ॥ ॥ चती त हेर्गे कोक म ॥ ॥ ॥

वर्गावस्पतजातायेयोतीग्रहरासुखा॥ भकुटादीमे
नचईत्पेताचायेमैत्रीका॥ १॥ ॥ ॥

१वर्गा २वस्प ३ताग ४योती ५ग्रह ६ ~~वर्गा~~ ७नकुट ८तादी
ईत्पादीमैत्रीकमलेहेर्तु॥ ॥ ॥ ॥

अचवर्गादी

वर्गा॥ मीताली कर्कटावी प्रातृपाः सीं हा जचत्ति
र॥ कत्पातक वषावै रपा मुद्रा पुच्छ जग तुहाघ
टाः॥ १॥ वरपः॥ दं दचाब घट कल कातुहा मातवा
अजवेषाच तुष्पदाः॥ कर्मनी तम करेता हो दुवा
केसरी वनचराही कीटकाः॥ १॥ ताग वल ॥ कत्पा
र्ता हरनचा वत कत्पान्न वरना पीं जग मद्रवनी
शेषत्रीष्व डिन मंस तस्म तम॥ ३॥ योती ॥ अचो
गजुच्चा गसर्पा सर्पश्चात वी डालकाः॥ मेषावीडा
सओ वमुषको मुषक म्रजौ॥ ४॥ मही पीच ततोया
प्रामहिषी व्याघ्रकंक्रमात्॥ मजो मगतचा स्वा
वकपी रकुल एवच॥ ५॥ तकुलो वातर सी होतुर
जो मगराट पशुः॥ अचो रे नक्रे मरौ वज्रशिखादी
नयोतयेः॥ ६॥ वैरयोतीः॥ गो व्याघ्र गज सीं हम
श्च महिषं ~~मै~~ म्रै रां च वभूरुगं वै रवातै रमेषयो म्र
मुमहत वदिडा हो दर॥ लोका ना न्यवहार तो नदपी

तज्जात्राप्रयत्नादिदं पत्नो र्त्पन्नत्पयो र्पीसदा
 वर्ज्यमुनस्पाधी नी ॥ ७ ॥ गहमेत्री ॥ मिषरश्मिकपो नो
 मज्जुकोरुपतुलाची प ॥ कत्ताभीचुतेयोसोप्योगु
 रुस्तुचतमीतेयो ॥ ८ ॥ शतीर्त्तकस्पकुंलस्पककस्येव
 तुचदुमा ॥ सींरुस्याचीपती ॥ सूर्य ॥ कचीतो गराके
 क्रमात् ॥ ९ ॥ गरा ॥ अतुराचा मगो ॥ चिस्तुअवरो
 दी पुष्पक ॥ स्वाती हसोरेवती चतवेदेवगताः स्म
 ता ॥ १० ॥ पुर्वात्रयं रोही ती चर्त्त रात्रयमेव च ॥ आ
 दातुनरती चैव तव लेमा तुषागता ॥ ११ ॥ आशेषा
 शतनीष्मूहं वीशारवाकृतीकातया ॥ चीत्रा ज्येष्ठा
 चतीष्ठा चतवेदेराक्षसागरा ॥ १२ ॥ अन्त्यताडो ॥
 कृती कारोहिती स्वाती मघा ॥ शेषा च रेवती ॥ अ
 वाचोतरा पादा बीसा पात्वेकता दी का ॥ १३ ॥ मध्य
 तादी ॥ पुर्वाफाल्गुनी काची चान्वतीष्ठा नरती मृगा ॥
 पुर्वाषाढा च पुष्यो हिर्बुध्न्यमेव च ॥ १४ ॥ आदाता
 डी ॥ पुर्वीनादपदा मूला ज्येष्ठा हस्त पुनर्वसु ॥ अ
 श्विना दाशतनीषाचोतरात्वेकता दी का ॥ १५ ॥
 अश्वीनरणी कृतीकात्पादमेवता कृती च रोहिणी
 मृगशीर्षा र्द्धवन्न ॥ १६ ॥ मृगशीर्षा र्द्धा दा पुनर्वसु च
 योमीचुत ॥ पुनर्वसो पादपुष्य आशेषांतर्कः ॥ १७ ॥
 मघा पुर्वार्त्तरा पादं र्ही हं ॥ र्त्तरात्रयं हस्त चीत्रार्द्ध

काग ॥ ३ ॥ बीना र्दसाती बीसा पात्रयः सुतः ॥ बीशा
 पात्पाद अगुणचा जे वात वशी का ॥ ४ ॥ मूल पर्व
 पाटाईतरा पाटा पादं चतुः ॥ ईतरा पाटात्र पंअव
 राचनी वा र्दं कर ॥ ५ ॥ जनी वा र्दं शततार का पु
 र्नाता दुपदात्र पंकेता ॥ पुर्नाता दुपदा पाद ईतरा
 ना दुपदारे बतंत मी ता ॥ ६ ॥ ॥ ॥

एक तक्षक का ४ बरत मसा ६ बरत के १ रासी हुन्दते स्को प्रककार अ
 गादी को व मोहे नीले स्पष्ट हुन्द ॥ ॥ को व कम ॥ ॥

व्यतीत मान रासी पर				व्यतीत मान तक्षक पर त्वे				
व्यतीत	मान	रासी	पर	तक्षक	मान	रासी	पर	त्व
रासी	वर्षा	वस्म	स्वामी	अभीती	मन्ध	जैस	देव	आद्य
जेष	क्षत्री	चतु	जोम	भरुती	गज	सीह	मनुष्य	मन्ध
वष	वेस्म	चतु	भुक्त	कृका	मेवा	वातर	राक्षस	अन्ध
मीनु	भुक्त	माग	वुच	रोहीती	सर्प	मुगुश	मनुष्य	अन्ध
कर्व	वीप	जल	चतु	मगसीरा	सर्प	मुगुश	देव	मन्ध
सीह	भुक्ती	वत	रबी	आर्द्रा	मान	मग	मनुष्य	आद्य
कंता	वेस्म	माग	वुच	पुनर्वसु	मारजार	ईदीर	देव	आद्य
गुला	भुक्त	माग	भुक्त	पुष्य	मेठा	वातर	देव	मन्ध
				अश्लेषा	माजरी	ईदीर	राक्षस	अन्ध
				मघा	मूषक	माजरी	राक्षस	अन्ध
				पूर्वा	उदीर	माजरी	मनुष्य	मन्ध
				उत्तरा	जो	बाध्र	मनुष्य	आद्य
				रुद्रा	जैसी	घादा	देव	आद्य
				बीजा	बाध्र	जो	राक्षस	मन्ध
				स्वाती	राजो	घादा	देव	अन्ध

				वीशाषा	व्याघ्र	गो.	राक्षस	अन्य
वशी	वीप्र	कीटक	लोम	शुक्रा	हरण	कुकुर	देव	मन्य
क				जिह्वा	मग	कुकुर	राक्षस	आद्य
धन	क्षत्री	मात	गुरु	मूत	कुकुर	मग	राक्षस	आद्य
	य	व		पूषा	वातर	मेढा	मनुष्य	मन्य
				ईषा	मुंगुस	सर्प	मनुष्य	अन्य
मकर	वैश्य	जल	शरी	उनीजीत	नकुल	सर्प	मनुष्य	अन्य
		वर		श्रवणा	कपी	मेढा	देव	मन्य
				अनीला	सींरु	गज	राक्षस	आद्य
कुल	शुद्र	मात	शरी	शततार	घोडा	जेसी	राक्षस	आद्य
	व			पूषा	सींरु	गज	मनुष्य	मन्य
मीत	वीप्र	जल	गुरु	ईषा	गो	व्याघ्र	मनुष्य	अन्य
		वर		रेवती	हाथी	सींघ	देव	अन्य

नकूटवपंचकम

मीतालीत्यायुतकीटेकुलेमीपुतसंयुते ॥ मकरकन्यका
 युतेतुकुर्पातावपंचकम ॥ १ ॥ ॥ ॥
 मीतेदेषीतवमरुक्षीक वक्षीकेदेषीमीतपंचमरासीहुन्दुअरु
 कर्कटेदेषीमीतवममीतेदेषीकर्कटपंचमहुन्दुयसोनयतापो
 तवमपंचम अरुकुलमीपुगा फरीमकरकन्याईपनीतवमपंच
 मत्यागगर्गुशंतातासकारकहुताते ॥ ॥ ॥

मनुषडावक

मेषकन्यकयोरेवतुतामीतकयोस्तवा ॥ युरमासोसु
 बुधैर्जमर्तुवैतक्रसींहयो ॥ १ ॥ कुलकर्कटयोश्चैवव
 षकोदहुयोस्तवा ॥ २ ॥ ॥ ॥

मेषकन्याईकोपर ६८ यसकलेतुहो मीन मीचुन वशीक
 मकर सीह कुल कर्क चत वषल ई २ रासी मरुष डावकहु
 त ईको त्यागर्तु ॥ ॥ प्रीतीषडावक ॥

मंग ॥ सीहोमीह पुतश्चे वतुला वष मुतलया ॥ चतु कर्कपुत
 चैवकुलकलकयोलाया ॥ तक्रस्प मीचुने प्रीतीहता ॥ १॥
 सीहमीन तुला वष चत कर्क कुल कन्या मकर मीचुन मेष व
 शिक ई २ रासी प्रीषडावकहु नुन जानु ॥ ॥ दिवादश ॥

मेष ऊषो वष मीचुनो कर्क हरी तुलकत्येके ॥ अलीचत
 पीमकार कुलावेतो दिवादसेराशी ॥ १॥ ॥
 मेषमीन वष मीचुन कर्क सीह तुलो कन्या वशीक चत मक
 र कुल ई २ रासी दी ~~दा~~ दस आयेता मुन जानु येसे अर्को रासी
 सीमा दिवादस मयेता मत्तुकार क जानु (अर्थात्) ई सैला त्याग
 गर्तु ॥ ॥ अन्यमत ॥ ॥ ॥

चतुर्पदशमश्चैव तृतीयेकादशमुन ॥ ई नये सप्र
 मः सास्य कर्षमुन मुन्यते ॥ १॥ ॥ ॥
 वरकन्याकोरासीपर स्परदशम चर्प (अचवा) तृतीय एकादशनेप
 मुन दुबै सप्रमनेयेता सममुन जानु वर (वां) कन्याकोराशीप
 तीयेकेनेयेता सममुन जानु ॥ ॥ गुरुका मीन शत्रु विचार ॥ ॥

शत्रुमंदसितो सप्तशिशुजामीत्रागी शेषार वेस्ती
 शगा मुहिमर शिमज असु हृदो शेष समा शीत गो ॥
 जीवे दूषाकरा कुज असु हृदो शीरी सीतार्क सैमो



मीत्रसूर्यसितो बुधश्च हिमगच्छन्नु समाश्रये ॥ १ ॥
 गुरोः सौम्यसीता वरीरवी सुतो मज्जो परे त्वन्यासो
 म्याकी सुहृदो सौम्यकुजगुरुशुक्रस्य शेषा वरी ॥ २ ॥
 क्रजो सुहृदो सौम्यगुरुसौरस्य त्वज्ये रवीये प्रोक्ताः
 सुहृदस्त्रिकोणान्न वनाऽते मीमया कीर्तिताः ॥ ३ ॥
 ईसवैशोकको अर्चको वमास्पष्टहेतुः ॥ कोषकस्तः ॥ ॥

नाम	रवी	चतु	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शरी
शत्रु	शरी	०	बुध	चतु	बुध	शुक्र	रवी
सप्त	मं. गु.	शुक्र	बुध	मंगल	शरी	मंगल	गुरु
मीत्र	चं. गु.	रवी	रव.	रवी	रवी	बुध	बुध
	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल	शरी	शुक्र

गुणमेलनप्रकार

वर्णाङ्गगुण					वस्त्रगुण				
श्रीपुरुषको को एक वर्ण लेये गुण १ वैरलसे गुणा न बोहये सखे गुण ६ ॥					अथवा पुरुष ३ वर्ण लेये देवी पत्नी १ वस्त्र वैर गुण ३ को वशे भूसे गुणा ६ कं १				
ईस देवी वीरी त वर्ण लेये पत्नी गुण ० सत्रु न भू लेये गुण ०					दो वे समा लेये गुण ॥ २ ॥				
नाम	डा	झ	वे	श्र	वस्त्र सत्रु न ये गुण आन्या जानु ॥ ॥				
आह्वान	१	०	०	०	चतुष्षद	२	॥	१	०
क्षत्रीय	१	०	०	०	मानव	॥	२	०	०
वैश्य	१	१	१	०	जलचर	१	०	२	२
शूद्र	१	१	१	१	वनचर	०	०	२	२
अज्ञ	०	०	०	०	कीटक	१	०	२	०

वरकवर्ण



ताराको गुण

एक तो हन्यते तारा बुलावे वा बुलावे तः ॥ तदा शार्चो गुण
 श्वेत तारा बुद्ध्या मिथ्य स्यः ॥ उल्लेखो र्त्त बुला तारा सदा
 भुव संसारा दी सतः ॥ १ ॥

स्त्री वा पुरुष कोई को बुला तारा असु कोई को अ बुला लयेता ॥ १ ॥ जा
 लुफेरी दुबे का रके तारा माये शुभ तारा नये ३ गुण असु अ बुला ता
 रानयेता ० जालु को दमा ॥ ॥ योगी को गुण ॥ ॥

माहावैरे च वैरे च स्वस्त्वावे यचाक्रम ॥ मैत्रै चै
 वाति मैत्रै च रे वन्दु दिनि चतुर्गुणः ॥ १ ॥ ॥

स्त्री असु पुरुष दुबे माय के वै रला दमयेता गुण ० दुबे मा परस्पर
 शत्रुता वलयेता १ दुबे को सो लाव १ लये गुण २ दुबे मा स मा यमी
 चलये गुण ३ दुबे मा चै री मी च तानये गुण ४ फेरी दुबे एक जाती
 लये पगी गुण ४ य सो जा तु को दमा ॥ ॥ तारा गुण को दकम ॥

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३॥	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योगी गुण को दकम

नाम	अ	ग	मे	स	वा	मा	मू	जा	म	वा	ह	वा	मं	सी	०
अस्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१	०
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	१	०	०
मेघ	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१	०
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२	०



धातु	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
माज्जर	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	१	२	२	२	२	२	१
गाय	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
जेसी	०	३	३	३	२	२	२	३	४	१	३	२	२	३
वाध्या	१	२	४	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरत	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
कातर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
भुगस	२	३	३	०	१	२	३	२	२	२	२	३	४	२
सीह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहमेत्रीकोगुण

तेत्रे काचिपतीत्रेचमित्रले गुणपंचकम् ॥ चत्वारः स
प्रमीत्रले द्वयोः सामेचमोगुण ॥ १ ॥ मीत्रेचरे गुणमे
कोसमेचरे गुणार्धकम् ॥ परस्परं चेट्वरे गुणमुपे
वीतिदिशत ॥ २ ॥

ग्रहमेत्रीमागुणावीचार ॥ ॥ दुर्वेकोरासीस्वासी एकैकोमेदुअव
वामीत्रतान्मेदेपीगुण ५ दुर्वेमासममीत्रतान्मेदेपीगुण ४ दुर्वेस
मन्मेदेपीगुण ३ दुर्वेमासीत्रतान्मेदेपीगुण १ दुर्वेमा
समसन्तान्मेदेपीगुण जाना असुदुर्वेदेपीशन्तान्मेदेस्कोगु
णामूलहुन्दयसोजालु ॥ ॥ गराकोगुण ॥ ॥ ॥

पुरुषअसुस्त्रीदुर्वेकाएकगरान्मेदेपीगुण ६ दौमासगुणरा
क्षसगरान्मेदेपीवेरगुण ० देमादेवराक्षसन्मेदेपीवेरगुण १ दे
मादेवमगुणन्मेदेपीगुण ६ येरीतहेगुणकोगुणजालु ॥ ॥



वरको गुणा							
वर	र	ब	म	व	ग	भ	श
र	५	५	५	३	५	५	०
ब	५	५	४	१	४	॥	॥
म	५	४	५	॥	५	४	॥
व	३	१	॥	५	॥	५	४
ग	५	४	५	॥	५	॥	३
भ	५	॥	३	५	॥	॥	५
श	०	॥	॥	४	३	३	५

वक्रकोण	०	०	वक्रकोण	०
देव	५	५	५	५
मठप	५	५	५	५
राक्षस	१	०	०	५

वक्रकोण	०	वक्रकोण	०	अ
देव	५	५	५	५
मठप	५	५	५	५
राक्षस	१	०	०	५

अकुरका गुण

एकरासी लये नक्षत्र नील हस्तु अजवा १७ क्षत्र लये रचरु नील लये
गुणा १ द्वे सप्त सप्त लये गुणा १ तृतीये एकादस लये गुणा १ चतुर्विंशस
लये गुणा १ नील हस्ती एकत क्षत्र लये गुणा ५ प्रीती षडाष्टक
द्वादस नव पंचक यस्मा परस्पर शत्रुता लये लकुट गुणा द्वे का
परस्पर नक्षत्र १ अरु चरणा पत्नी एक लये गुणा बजालु ॥ ॥

रासी	म.	व.	नी	क.	सी	कं.	रु	व.	ध	म.	कुं	मीं	०
मघ	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	०
वष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
मीथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७	०
कर्कट	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	०
सींह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
धनु	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	०
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०

वर्णफलम्

वर्णज्येष्ठा तु मातारो वर्णाहीनस्तु यः पुमान् वीवाहयदी कु

र्वीत तस्मान्नर्ता वी तस्पती ॥ १ ॥ ॥ ॥

वर्णमापुरुषही तवर्णज्येष्ठा स्त्री ज्येष्ठ वर्ण नयेत वजो वीवाह
नयेदेषी पती को तारा जाल ॥ ॥ योतीफल ॥ ॥ ॥ ॥

घाडा असूने सी एसो वै योती परस्पर द्वे कालयेदेषी वीवाह मा
असुराजरो वा मापती एसो वै नयेदेषी उस्तेत्याग गर्तु असह
हुन् ॥ ॥ ॥ गराफलम् ॥ ॥ ॥

स्वगरो चोत मा प्रीति मध्य मा देव तर यो ॥ कलहो

देव दैत्यानां मृत्युर्मातवराक्षसः ॥ १ ॥ ॥

स्त्री पुरुषको १ गरा न्यो नयेत उत मप्रीती मनुष्ये देव नये मध्यम
देव दैत्य नये कलह मनुष्य रासनये मृत्यु ॥ ॥ कूटफलमाह ॥ ॥

षष्ठाक्ष के य मनुष्ये च मनुष्ये तपस्यता रो या दी वा

देसिर्च्यत ता शेषे मध्यमता सेव्या ॥ १ ॥ ॥

स्त्री पुरुषको षडाक्ष क मृत्यु कारक तव पंच क संतात ता सकार
दी दा दरा दरी दुकारक असूने ष जो सी दुई स्त्रामुल ॥ ॥ नडीफल ॥

अग्रता दी वचे दुलर्ता मध्यता दी वचे दयं ॥ अक्षर

ता दी वच क त्या गी यते ता न संशयः ॥ १ ॥ ॥

स्त्री पुरुषको आद्य ता दी नये पती लाई असुन द्वे को मध्य ता दी
नये दुवै लाई असुन असू द्वे को अन्त ता दी नये क त्या ई असुन
जाल ॥ ॥ असद्वृत् ॥ ॥ ॥ ॥

पुषन सत्र देषी स्त्री तक्षत्र सन्तुष नये असुन असु पुरुष तक्षत्र

देषी त्री १ स्त्री तक्षत्र दुर नये मुल द्वे को ज व १ तक्षत्र असु १ स्वा
मी नये मुल जाल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



०	रा	मे	म	व	व	मी	मी	मी	क	क	सी	सी	सी	कै	कै
०	०	१॥	१	१	०	१	॥	॥	१	॥	१	१	१	१	१
रासी	॥	॥	अ	अ	क	क	रा	म	म	आ	प	प	आ	म	प
मेघ	१	अ	३६	३२	३२	२४	२१	२२	३०	२८	१६	३॥	३३॥	२८	३॥
मेघ	१	अ	३६	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१६	३६	३०	३॥	३४॥	३३॥	३३॥
मेघ	॥	क	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	३२	२१	२५	२३॥	२३॥	२३॥
वृष	॥	क	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२२	२४॥	२०	१८
वृष	१	रा	२४॥	२४॥	१३	३६	३६	३४॥	३५॥	३२	२१॥	२३॥	२८	१२	१०
वृष	॥	म	२४	११	११॥	३३॥	३६	३६	३५	३३	३१	२३॥	२०	२१	१८
मीथु	॥	म	२८	२६	२३॥	३३॥	३५	१६	१६	३४	३४	२०॥	१३	१४॥	२३॥
मीथु	१	अ	२०	१८	२३	३३॥	३३॥	३४॥	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥
मीथु	॥	पू	३०	३०	२३	३३॥	३३॥	३३॥	३३॥	३४	१३	३४	२३	१४॥	२३॥
कर्क	१	पू	२६॥	२३॥	२५॥	२२॥	२५	२६	३०॥	१३	२४	३४	३४	१२॥	२२
कर्क	१	पू	३०॥	२४	३०	२४	२१	१६	१३॥	२३	१५॥	३४	३६	३४॥	२१
कर्क	१	आ	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	२४॥	१५॥	२०॥	३२	३४	३४	२०॥
सीरु	॥	म	२२	२०॥	३६	३०	१०	१८	२१॥	२२॥	२६॥	२३	२५॥	२३॥	२६॥
सीरु	१	पू	२६	२४॥	३३॥	२०	२४	१६	१६॥	२०॥	२०॥	१६	३३	१६	३६
सीरु	॥	उ	१०	३२	३२	२०	१६	२५	१८	२०॥	२३॥	२३॥	३१	३१	३२
केला	॥	उ	१३	३२	१६	३४	३४	३२॥	२३॥	३३॥	२३॥	२०॥	२८	२३॥	३१
केला	१	ह	१३	२०	२१॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२१॥	२३	२०॥	२०॥	२५
केला	॥	वी	१४	३०	२१	२८	२५	१६	२३॥	२५॥	२३॥	१३॥	२६	२६॥	१५॥
तुला	॥	वी	२३॥	१६	१६॥	२३॥	२१	१३	२०	३३॥	२४॥	२३	१३	३०	२५
तुला	१	स्वा	३०॥	२१॥	११॥	११॥	३३	३४	३३	२१	३३॥	२८	१५॥	२३॥	२४॥
तुला	॥	वी	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	२५॥	२५॥	३३॥	१३॥	२३॥	१६	१५॥	१०॥
वृश्चिक	१	वी	३३॥	२५॥	१५॥	२०	१५॥	२३	१३	१३॥	२०॥	२०॥	११॥	११॥	१८॥
वृश्चिक	१	अ	२४॥	१६॥	१६॥	२४॥	२०॥	११	१६	३	३३	१६	२१	२४	२०
वृश्चिक	१	उ	१६	१६॥	२४॥	२३॥	२३॥	१३	१३	२५॥	११॥	२१	२६	२३॥	२०
धन	॥	म	२८	२८	२३	२०	१४	१४	२१	१३	३०	१६	१६॥	२३॥	१६॥
धन	१	पू	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१६	३०	३०	२४॥	१६॥	२०॥	३३॥
धन	॥	उ	३२	२३	३४	१६	११॥	२८	२४	३०	२३॥	२४॥	१०॥	३४॥	३३॥
मकर	॥	उ	२८	२६॥	१५॥	२६	२३	२१॥	२१॥	२३॥	२८	२८	२४	१६॥	२०॥
मकर	१	अ	२८	३०	२५	३१	३१	३४॥	२५	११	१६॥	२८	२८	१५	१३
मकर	॥	अ	२१	१२	१६	३१	२८	२०	१८	१६	१३॥	२०	१२	२६	२६
कुंज	॥	अ	२१	१२	१६	३३॥	२८	२०	१२	१२	१२	१४	१६	२०	२५
कुंज	१	रा	१६	२२	२८	२३॥	२६॥	२०	१०	१०	८॥	१५	२१	२५॥	११
कुंज	॥	पू	१६	२६	२०	३४	३३॥	३३॥	२४॥	३०	१३॥	२१॥	१४	१६	२५॥
मीन	१	पू	२१॥	२६॥	२३॥	३३	३०	३०	३०	३०	१८	१०	३६	३३॥	१४
मीन	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३३॥	३०	१६	१६	३०	२८	२६॥	१६	२०	३०
मीन	१	र	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	३०	३०	२६	२६॥	२३	१३	१८	२२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

वर्गशास्त्रम्

अकचतटपयरावर्गारवगेसमाज्ञाजार्सीहमुत॥
 सपाखुमगावितानिर्जपंचमवेरीतामयो॥
 वर्गमेयीवावर्गस्वामीकाशातताईचकेहेर्अरुगहृदेविपं
 चमसर्पताएसमा महौवरनेतेकोदसोजसुनः॥ ॥ ॥

अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्ग
१६	५	५	५	५	५	४	४	०
गसु	मणी	सीह	कुर	सर्प	महा	हरीगा	हरीगा	०

दुष्टकुटकोदात

षडाष्टमेगोमिचुनंप्रदद्यात्कास्पसरूपं तवचंच
 मेच॥ नामासजेत्वान्तसुवर्गावस्त्रदीदादसंब्राह्म
 रातर्पणं च॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 योरेसंकटप्राप्तयेषदुगावमादुईगाईदानगर्तवपं
 चमलेयेकासाकोलाडादातगर्तुअरुचादीदातपतीगर्त
 एकमादीनयेचेतुदातगर्तुअरुअनसुवर्गावस्त्रदातपती
 दीतुदीदांशानयेब्राह्मननोजगागर्तुतेस्तेकूटाराहुडा
वीवाहकोतलन

मूहमेहमेचकरस्वातीमघोपोषाध्रुवेदवः॥ १॥
 तेतिर्दोषनैस्त्रीणावीवाहः पुनदः स्मृतः॥ १॥
 मूहअठगाज्याहस्तास्वातीमघारेवतीरोहीती३ईतरामगही
 राईतक्षत्रदोषदेषीवर्जीतयेवीवाहगर्तुपुनहुन्ध॥ ॥
एकवींसतीमहदोष

पचांगमुद्धिरहितो दोषस्तथाद्यः प्रकीर्तित उदया
 समुद्धिरहितो द्वितीये सूर्यसंक्रमः ॥ १ ॥ तृतीयपा
 पपग्रहानिगुणषष्ठकुजोऽष्टमः ॥ गङ्गांतकर्तरीरि
 षष्ठदशे दुष्प्रसंगह ॥ २ ॥ दपत्तोरष्टमं लज्जरासौ
 विषघटीतया ॥ दुर्गुहं तो वारदोषागवाजुरीकंस
 मांगरीलः ॥ ३ ॥ ग्रहगोत्यातलेनूरविदध्नूरसं
 युतं ॥ कुतवासो माहापातौ वैज्यतीशैकवीसतीः ४

वीवाहमा २१ महादोषत्यागगर्तुपचांगरहीतदोष १३ दयाव
 मुद्धिरहितो दोष २ सूर्यसंक्रान्ति ३ पापग्रहवर्ग ४ षष्ठमुक्त ५ अ
 षमास ६ गङ्गांत ७ कर्तरी ८ १२। ८। ६। ६। चन्द्रमा ९ स्त्रीपुरुषको
 अष्टमलगत १० लग्नमाचन्द्रमापापग्रहलये ११ वीषघटि १२ दश
 मुहूर्त १३ वारदोष १४ लता १५ ग्रहगोत्यातलेनूर १६ उत्यातलेनूर १७
 पापग्रहवेच १८ पापग्रहयुक्त १९ पापग्रहोस २० महापात २१ अ
 ह्वेज्यतीयोगकोत्यागगर्तु ॥ ॥ ॥ ॥

दोषलक्षणमाह

लग्नां चंद्रा द्वये द्विस्त्रोपापरवेदो यदातदा ॥ कर्तरी
 वर्जनीया सा विवाहोपगया दीषु ॥ १ ॥ नहिकर्तरीजो
 दोषसोम्ययो र्द्यदि जायेते ॥ मुक्तग्रहयुतं लग्नं नूरको
 नालिकर्तरी ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥
 लग्नेदेषी वा चन्द्रमादेषी १२ स्थातमापापग्रहलये कर्तरी दुह
 तोवीवाह अरुवतमंत्रमात्यागगर्तु मुक्तग्रहको कर्तरी लये दोष
 घन (पांतु) लग्नमा मुक्तग्रहलये अरुघतीया मृहको कर्तरी लये
 पती दोषदेत ॥ ॥ ॥ ॥

अष्टमस्तोत्र

वरावच्छोर्वरोऽपि जन्मरास्येऽस्तोत्रगतः ॥ त्वात्समयम्
 जगुं स्याद्दीवा हवत बन्धयो ॥ १ ॥ ॥ ॥
 स्त्रीपुरुषजन्मरासीदेष्टी अथवा जन्मस्तोत्रदेष्टी अष्टमवीवाह
 व्रतबन्धमात्मागर्तुः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दुष्टमुहूर्तः

तीज्यंशो दीनमातस्य रात्री मातस्वयेव ही ॥ मूहूर्तः
 कर्त्तव्यः तेषु दुर्मुहूर्तं मुनेत्यजेत् ॥ १ ॥ ॥
 दीनकोपेरी रात्रीको १५ भाग दुष्टमुहूर्तं दुष्टोत्पागगर्तुः ॥ ॥

यामार्च

सूर्याद्यामदलं दिवैव विगमाद्युचीषु नागविषत
 संख्या कंकुहिकं दीव्यं दुरवीदिउत्तागर्तुवेददीक ॥
 व्येकेतं निशिषोदशांशं परे तीज्यंशे मूहूर्तं तीतेका
 तं कंतकमेतीधंतसमेरुपज्ञात्स्फुरति द्युक्तात् ॥ १ ॥
 दीनमारवीवारज्यं यामकोजं कदुत्सोतीवती असुप्रवतीको
 अंकपतीको यमास्पष्टदुर् यवाकमले हेर्तुमुलकर्ममात्माग
 गर्तु दीनमारवीवारदेष्टी दीकको १६ भागमा कुलीक असुच
 क्रमा हेर्तुमुलकर्ममात्माग गर्तुको ईडा चार्चकामतमारा
 चीका १६ भागमा कुलीक दुर् (तट) १५ भागत्पागर्तुबुधवा
 रकालदोरवगुस्वारकंतकयोग मुक्तवारले निधितयोग ईच
 धाकमतेचक्रमा हेर्तुमुलकर्ममात्मागर्तु एकदीनमा अर्चयाम



कुलीकादी १६ यस्यैवारत्वेहेजालु (परां) जोवारपुरत्वेदसोचक्रमा
हेतु ॥ ॥ ॥ ॥ जार्जार्जचक्र ॥ ॥ ॥

वार	यामार्जचक्रा			कुलीक	काल	कंठक	स्त्रीयुत
ताम	सरवा	प्रवृत्ति	निवृत्ति	घं २	घं २	घं २	घं २
रवी	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चतु	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	३	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	५	८	१२	४	१२	१०	१४
शनी	६	२०	२४	२	१०	८	१२

लतादोष

तराहुपुर्णोत्पत्ता स्वपदेन सप्र ७ जो र्दजाती २२ शरैर्भि
तंहि ॥ सहतयते ५ र्कशनी ज्यलो मसूर्या १२ व ८ तर्कद्वी
मितपुरसात ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
बुधजो नक्षत्रमादुर्द सतक्षत्रेदपी र्दसतक्षत्रेदपी पदो दो सप्र
नक्षत्रमा लतादोष राहु जर्द नक्षत्रमादते स्को पदो लो नवमनक्ष
त्रलतादोष पुर्णचन्द्रमा जर्द नक्षत्रमादते स्को पदो दो २२ नक्षत्रमा
लतादोष शुक्र जर्द नक्षत्रमादते सेदपी पदो लो ५ नक्षत्रमा लता
यो पृथलता ज्वलत्तलता कहिंद सूर्य जर्द नक्षत्रमादत असतक्ष
त्रेदपी अधी लो १२ नक्षत्रलतादोष शनी जर्द नक्षत्रमादते सेद
पी इतक्षत्रलतादोष मंगल जर्द नक्षत्रमादते सेदपी ३ नक्षत्रमा
लतादोष यो लता जातु बुध कर्म मात्ता गगर्तु ॥ ॥



वेचसाह

वेकेसप्रसताकारेयेनेवेचसर्वकर्मसु॥ वाज्य एववि
बोहेचतपैवपंचरेखजे॥ १॥ ॥ ॥

बाबाहमासप्रसताका असुपंचसताका हेतु परंतु पंचसताका
मोडीबचतमाकचीतदसप्रसताकासम्पूर्णकर्ममाकचीतद्वे
चरबीबाहमाजवस्यबीचारगेरेहेतु॥ ॥ ॥

पंचशताका

रेखाश्रीर्वा पंचतिर्यकचपंचदेवेरेखेकोरायोखचके॥
नाड्योन्यस्पेच्छुकोतदीतियेरेखायान्नाम्यजिभात्वा
मीजिदि॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पंचसताका बुद्धी पाचरेषागर्ततेस्काईपरजादीवातपाचरेषाते
खतु असुतामादोदोरेषाते दारेषातेषतु परंतु ईसातकाकु
तामादोओरेषादेपीकृतीकाआदीलीखतुअहाईसतक्षत्रतक
त्यासगर्त॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सप्तशताका

सप्तसप्तविंशतिपात्येरेखीकास्तिर्यगूर्ध्वसचकतीकादी
क॥ तेषयेदन्तिजितासमन्वितं करेखगमेतनविज्यते॥ १॥
सप्तसताकानक्ररेषासीचागर्ततेकाईपररेषागोदोगर्तुअनी
जीतसहीसम्पूर्णतक्षत्रहार्त्यासगर्तुपरंतु रेखाभालेमेवेच
जातुअसैएकग्रहमृगसीरकोरेषामाईतराषाच्यादलेवेच
हुन्दसोवेचभुलग्रहलेयेभुलजभुलग्रहलेयेअसुनपरंतुवेचीत

मेघेचसींहेचघतेतुहायांक्रांतेचसाम्पराक्षिसुर्ययोगी
 मीयुननगयसा२रासीमाचदुःसूर्यनयेक्रांतिसाम्पहुदुयसा
 रीतीहेककटचभीककलाभीनचषमनकरमेघसींहकुनंतु
 हायोक्रातीसाम्पबुलकर्षमात्पागर्तु॥ ॥ ॥

चक्रकाक्रम

ऊर्ध्वरेखात्रयवैवतिर्यगेखात्रयंतथाक्रातीसाम्प
 बुधैर्ज्ञयंमध्यमीनतुपोजयेत्॥१॥ ॥ ॥
 क्रातीसाम्पकोक्रमरेखासीचागर्तुअहरेखाठादोगर्तुअसम्य
 कोरेषामाभीनतगर्तुदेवीत्पासगर्तुयसा१२रासीमासूर्यचतुको
 साम्पहेतु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जामीत्रदोष

तगेदोतीसजापापसुंत्पीरोषदीस्थीतः॥तदाजामी
 त्रदोषस्यातहीतूतानीकोराक॥१॥कूरोवागदीवा
 सोमोतगताचन्द्राचरेचर॥एकापीगदीजामीत्रेस
 मासेचतदानेवेत्॥२॥जामीत्रंतप्रशंसंतीयर्गकल
 पदेवता॥आयषष्टततीपेषुचतचात्प्रदोरवी३
 तगर्तुदेवीचन्द्रमादेवीपापग्रहवारवरअंशकोदलेसप्रम
 माजामीत्रदोषइजंसजचीकजजवाकमतीदलेताजामीत्र
 दोषहुइअजवापापग्रहवाभुलगहकोईपतीतगर्तुदेवीवा
 चन्द्रमादेवीएकापतीसप्रमासमातासदलेताजामीत्रदोषइ
 यस्तोजामीत्रदोषमाबीबाहृतगर्तुलतीकलगर्तुदेवलेईत्पादीआ
 चार्थलेज्ञतेकोइअह११॥५॥२ईस्वातमानेपेभुलफहदीतेहुद॥ ॥



चरये दोष

कर्मलगेऽथवा मेषघटाभेयदियते तुलायां मकरे च दे
वेच्यं जायेते च वर ॥ १ ॥ ॥

मेष अथवा कर्मलगेऽथवा मेषघटाभेयदियते तुला मकर मानदुमालमे
वेच्यं कारकं हु ॥ तीर्थापत्ते लग्नवर्गे ॥ ॥ ॥

प्रतिपदि तुलामकरोसीं ह मकरो तृतीयायां कसामी
थुने पंचमी सप्तमी चैव चतुः कर्क ॥ १ ॥ तव मी कर्मसी
हो एकादसी तु चतुर्मी तो ॥ त्रयोदसी च षष्ठी नौमी
तु लग्नाति विविधा ॥ २ ॥ ॥

प्रतीपदा कादी त तुला असु मकर लग्न बुध दी तृतीया को दी र
सीं ह असु मकर पंचमी का दी त कसामि असी भुत सप्तमी का दी त
चरण कर्मलगेऽथवा मेषघटाभेयदियते तुला मकर मानदुमालमे
तुला मकर मानदुमालमे ॥ तीर्थापत्ते लग्नवर्गे ॥ ॥ ॥

दूतं निता के तु गते मेरु स्त्री को रागे वापि हित
मेक ॥ ति हति दोषा स्त्रिशतं बुधो वा बुधैरातो पा
पी हि दृश्य मूर्ति ॥ १ ॥ ॥ ॥

गुस्के तुला असु मी को त मा १।४।००। २।५ सप्तमस्या त व जी त न
येता १००००० दोष को ता रा ग र्दद मुक्त ३०० का ता रा ग र्दद असु
व्य १०० दोष को ता रा ग र्दद ॥ ॥ लग्न मूर्ति रा रा पु द्य ॥ ॥



स्त्रीदसदस्मागुणवारादस्त्रावेदान्तरामायनवेद
राम॥ शरद्विरामाशरामरामामेषाक्रमादुल्ल
तस्तुतायाः॥ १॥ ॥ ॥ ॥

जोरासीकोईदपचक्रमाहेतुपरंतु फलामकरासीकामात्रा
लतेकोफलसंख्याकाक्रम॥ ॥ ॥ ॥

मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी
पह २३८	२५	३१०	३३६	३३९	३१८	३३१	३१८	३३६	३१०	२५	२३८

मेकादीक १२ लग्नको प्रमाण घटी असुप्रलयसे क्रमचक्रमाहेतु॥

लग्न	मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पह	५८	३	१०	३६	३९	१८	१८	२९	३६	१०	३	२८

लग्नलोगकाह

मीराजेस प्रषट् पंचपलानि विपलानि तु गोकुंजो
वैयुगशरादि विषातिद्वयुग्मेगे कर्कचोपेनवाः
सूर्यः सिंहालो रुद्रदग्निताः॥ तुलांगेद्वयप्रषट्
त्रिनिहगेवेकीशसंमितिः॥ २॥ ॥ ॥
लग्नलोगकाह) जुनरासीमासूर्यरहदसोहगर्तदपंकहमा
सकदीनकीतलोगगर्दद्वचक्रमाताहुमरुद्ध॥ लोगचक्रम्॥

लग्न	मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी
घटी	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
पह	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नम्



यस्मीतराशौ यदा सूर्ये स हतगं मुदयेते वेत्तस्मा

सं सप्तारि सुअष्ट हतगं तदुच्यते ॥ १॥

जुगएसी मासूर्य दुन्दुसोई दय हतग जो रासी देअष्ट दुन्दुसोसूर्य
देवी सप्तमस्वातए सोई दयेअसुअष्ट जालु ॥ तवां सप्तमह ॥

वृषमी भुगं कला तुला च त्री हष सप्तम ॥ सते भुग

तवां सप्तमसोत्तेक तवां शका ॥ १॥

वृषमी भुगं कला तुला च त्री हष सप्तमको तवां शकी वाह हतग
मा १२ हतगको नये भुग सप्तम देवी वीपरीती अशुन मेषादी १२
हतग असुअसंको वष माघ ईसा जुग असको वर्ग भुगि जा पोर
ई असकात हको वष मा जो हतग दुन्दुसो हीग असुअस घदी ईस्को अष
तां रादी तु असुअसु भुगका हतगलु को वष मा चार अंक दुईस्को
तामरासी अंश कला बी कला जालु राशीको संहा सूप नये
कोष असुअस कले वष नय सारी दिहे १२ रासीको हात क्रमहे
गरीकत आचार गर्नु ॥ ॥ कोषक ॥ ॥ ॥

रासी हतग	वृ	मी	क	क	त	अ	मी
वृष	० ३ २०	० ५ ४०	११ १० ०	१५ १४ ०	२० २० ०	२४ २४ ०	० ० ०
मी भुग	१२ १२ २०	१५ १५ ४०	२० २० ०	२५ २५ ४०	३० ३० ०	३४ ३४ ०	० ० ०
मी भुग	२३ २३ २०	२६ २६ ४०	०० ०० ०	०० ०० ०	०० ०० ०	२६ २६ ४०	२६ २६ ४०
कौर्कर	०० ०० ०	०० ०० ०	२० २० ०	२६ २६ ४०	२० २० ०	२६ २६ ४०	२६ २६ ४०
सींह	२२ २२ २०	२६ २६ ४०	२० २० ०	२६ २६ ४०	२० २० ०	२६ २६ ४०	०० ०० ०



कसा	१३२०	१६४०	३००	१६४०	०००	०००	०००
गुला	६२२०	६२४०	६००	६००	६००	६२४०	१२४०
वशीक	००००	००००	००००	०२४०	०००	०२४०	०२४०
चत	०२४०	०२४०	०२००	०२४०	०२००	०२४०	००००
मकर	०२४०	०२४०	०२००	०२४०	००००	००००	००००
कुंज	१०२०	१०२०	००००	००००	१०००	१०२०	१०२०
मीन	००००	००००	१०००	१०२०	१०२०	१०२०	१०२०

ईष्टकाही कस्यस्य सूर्यवर्तते कोकमहे॥

गतगमदिता हत द्युलुक्त खरसा प्रांशवी युग्मतो
ग्रहः स्यात्॥ ॥ १ ॥ ॥ ॥

पंचाङ्गमाग्राहकोकोष्ठमाञ्जाठदीतकाञ्जवटीकासूर्यघट(परितु)
पुराणाकासूर्यस्य षड्दशोऽर्द्धदीतमाञ्जापुगर्तुद्वेतेसदीत
कोगगुरतेसेदेखीसूर्यकागतीकोष्ठमागुतदीतुअस्तेनाग
दीतुअतलंकशेषाईद्वेसोअंकघदीपलाजातुयोअगादी
कासूर्यजातेप्रकारअवपीदेकासूर्यवर्तताईतुकोष्ठकमा
पुराणाकासूर्यलेयेताआतुपीद्विपाईतुद्वेतेतापंचांगससूर्य
माअंसघदीपलाकंगर्तुअस्तेनागादीसूर्यकावर्तताईतुद्वेते
तालोफुलअंसघदीपलायेतोपंचांगस्वमापीताईताहेत
त्कालसूर्यद्वन्द्वसमन्ताकातीसमन्ताकागीतअगादीईदा
हरतदीयेरस्यषडर्द्ध॥ ॥ नुक्तदीतकाईदाहरत॥ ॥

शके १७६० माघ

चातनकराईदी

सूर्यके

घटी पहा

६६ पगत

६६ इगु

६६ नाव

३३६ १० गु

३३६ ३३६

गुला ६

गुलाक ६

३३६

मा ६०) ३

शके १७६०

तुतेरीती

३५ अलुत

गुलागु

६६ सेष

जोअधि

साअंक

पोफर

शोके १७६० माघ बुक्र ६ बुक्रवार का दीत सूर्य कक्षा सो त्याई ते प्रकार

चाहत करुण इदीत ॥

॥

॥

॥

॥

सूर्य को गती
घटी पह
६६ ५ गती गुत
६ गुण क इदीत दे ले पुर्ण
मा को अंतर ले गुण का

स्पष्ट सूर्य का ईत
पंचाङ्ग सूर्य ६ अं क वी
वाहत करुण ६ १५ २० ३५
अंसातक ६ ६ ३०

३३६ १० गुण फलना ६०
३३६ (६ अं)

रोचरी ६ १० १४ ५
यह स्पष्ट सूर्य जात

गुण ६ वाकी फल
गुण क ६०
३६०
बुक्र ३०
मा ६० ३६० (घटी)

३० वाकी
६० पहे
मा ६० ३६० वाकी

अनुक्र दीत का ईदा हरत

शोके १७६० माघ क इषषी मंगलवार का दीत को पक्ष सूर्य वताई
उतेरी ती पौर्णिमा का स्पष्ट सूर्य राशी ६ अं स १६ कला २० वी कला
३५ अनुक्र दीत ६ अं स सूर्य को गती ६१ ५ योगती का इदीत देखी गु
त सो गुत फल ३३६ ३० सेको ६० ते नागली उजो लछि जा पो सो ज
ल ६ सेषको ६० ले गुत फेरी तलेको अस जोर उफेरी ६० ते नागली उ
जो लछि जा पो सो कला ६ जा उ शेष ३० ले ते स हा ई फेरी ६० ले गुत
सो अंक १००० तहा ई ६० ले नागली उजो लछि जा पो सो वी कला ३०
मा फल पूर्णिमा का सूर्य मा जो डी सो सूर्य राशी ६ अं स २२ कला ३२

वीकला ३१ योरी तीले अलुनदी त को फल जागु ॥ ॥

अयतांशवता उते कोरी ती

शाको वेदा धि वेदो त पक्षी नको ५ यतांश का ॥ दे मा

सोतुर वैस्पष्ट चरु जगदिसिद्धये ॥ १॥ ॥

अयतांशवता उते को प्रकार वर्तमान शाके मा ४४४ कम गर्त अरु ६
होला गदी तु जो अकला को सो अयतांश जागु परतु उ फल स्वयं
यमा दी मे देवी चरस्त्रि दी खला वयो लज्जा सीद्ध हृदय ॥ ॥

उदाहरण चतुर्चात

शाके १७६० ईसा
४४४ यता उते
१३४६

भाग ६० १३४६ (२२ अं ६। ११। ४। ६)

१२०
१४६
१२०
गु २६ वा
६० गु

स्पष्ट १२१ ३२ ३९
अं स २२ २६
१०१९४। ५८ ३५।
यसा सूर्य तसूर्य

६० १५६० (२६ कला जागु ॥ ॥

१२०
३६०
३६०
वा ०

लगले नुक्का हवता उते ॥

स्फुट सायत नागार्क जोग्गांश फल सप्तोत सायतांश

सागे आपी नुक्कांश फल संयुत ॥ १॥ मध्य लग्गो देये

नुक्का पक्षि हृदि खंता दी का ॥ २॥ ॥ ॥

सायत लग्गो देवी जोग्ग अरु सायत लग्गो देवी नुक्का हवता उते

रीती देवे

अरु ६० हे

शाके १७६०

वीकला

हृदय

३० माक

जोग्गा

सायत

भाग ६०

स्फुट

सप्तक

कालव

पुर्वमा

अं ५

१०

२५

४५

१८५

३७४

६०

१०

१०

१०



राती वैको योगगर्गस्य असुतग यस्को वीचको उदये हग युक्तगर्ग
असुतगदी ये देषी सूर्जे को लो ग्ग का त स्पष्ट मा तु म ह्दु
उदाहरण

राके १० माघ कृष्ण ६ नौ म का दी त को सूर्य रासी २ अं स २२ कला २२
वी कला २१ अ म रा ४४४ सूर्य अ सा दो क मी हा ये देषी सायन सूर्य
हुद्द रा ३० क ५८ वी ३१ अं १४ जो कुल का सूर्य यस्को ज रा दी क
३० मा क म गर्ग त कुल उदये हो त स का ती मी त कुल का उदये देषी
जोग्ग रा गुणा दी ३० ले ना ग ही ये सूर्य को लो ग्ग का त हुद्द अ मी
सायन हग के ज रा घ दी प हा सस्को फुड दये देषी गुल असुत
ना ग ही ये ता हग के लुल का त हुद्द सो लुल का त असुत लो ग्ग
स्को र क व गर्ग असुत दये ले ना ग ही ये देषी ई व घ दी स्पष्ट हुद्द
स प्र का र हे पै हे सूर्य पक्ष सायन सूर्य हग सायन हग असुत
का ल व ता र्ग र सा गुला गुल स्पष्ट मा तु म ह्दु हग का लो ग्ग का त
पुर्व मा सो सायन हग के सो की या गो र ता त का त लुग दी २२ १० ६
सायन हग देषी लुल का त व ता र्ग के को र्ग हग

अं रा २१०	कला ५	सायन हग
१८	४४	११९०।४४।६
२५३	२५३	६ वी कला
४५५४	११९३२	२५३ उदय
१८५ गुल का त	२५	१८१८
३९ ४७२५ १५८	९९९५७ १८	१२०
३०	५०	२१८
१७२८	५१५७	३००
१५०	४८०	१८
२२८	३५७	
	३०	



नोग्नकाहअरुलुकाहयस्कोएगहुगर्गुर६० नागहीगुरईष्ट
काहहुन्द ॥ ॥ ॥ ॥

नोग्नकाह
१५२

॥ ईदाहरत ॥

दुईकोयोग

ॐ ३१० (५)

३००

पाकी० गुत्प

६० गुत्प

६० ६०० (१०)

६००

सूर्यजसूरुगएकरसीलेपताईष्टचदी॥

यदीतगुदीतताचावेकरसोतदसातरहतईदयस्यात

स्वागिहविष्टकाह ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

सूर्यजसूरुग १ रासीलेपतादुईकाजसको जेतएगर्जजेतस
रासीकाईदपदेषीगुत्त ३० हेलागहीगुरजोआपोसाईष्टकाह
जात्ररात्रीकोहगजअवाईष्टकाहवताईउतेदुलेतेसूर्यकाएसीता
इसीताईउतररात्रीकोईष्टकाहहुन्द ॥ तगबुद्धिहेते ॥ ॥

तगेचदेखलारीपोराशिसीतोसर्वदुगेरेखनुकोडोपेगु

सुपगेष्टमाकुजसुषाबुकसुतिपेबुचे ॥ लोकसेववगा

बुलाअरिवहगासुषारिगाः स्पः खताअदस्यबुचे

श्रीयेरालदेकेट्स्यात्तुबेदारीग ॥ १ ॥ ॥

वीकाहहगुताजसुपापग्रहषष्टकागमावदसूर्यलेपेआसुत्र
मजागमाकोहीगहगतयेदसमस्यातमाबुजलेप १२ स्वातता



चतुर्थे ४ स्वातन्त्र्यादुल्लेखे स्वातन्त्र्यादुल्लेखे अस्तु अत्र
 हतृतीये स्वातन्त्र्यादुल्लेखे यत्तो वीकाहलग्न अरिष्योक्तका
 रक दुष्ट ११ स्वातन्त्र्यासवग्न हल्लेखे अस्तु अत्र पापुग्न ह ३। १। १। १।
 स्वातन्त्र्यालेखे अस्तु अत्र दुष्टा ३। ४। २। स्वातन्त्र्यालेखे यत्तो वीका
 हलग्न अस्तु अत्र दुष्टा ३। ४। २। स्वातन्त्र्यालेखे यत्तो वीका
 नी देवकारास्वाती अष्ट अस्तु अत्र स्वातन्त्र्यालेखे यत्तो वीका
 पंचनी रीष्टे रीष्टे पुष्टमतिष्टे रीष्टे मादेशपी ॥ स्वात
 दी फलसमदी अस्तु अत्र रीष्टे कच्यते यवने ॥ १॥ ॥

वीकाहलग्न देपी ५ ग्न अस्तु अत्र स्वातन्त्र्यालेखे पुष्टीकारक अस्तु अत्र
 हल्लेखे अरिष्यकारक अस्तु अत्र कामतमा ४ ग्न अस्तु अत्र ॥ ॥

विशंशादिकचतु

विशंशागात्तकं हं गं होरा तस्यार्चमुच्यते ॥ तग्नान्निना
 गादेकारो गवौ शोनवमी सक ॥ दादशांशो दादशांश
 स्त्रिशंशस्त्रिशदंशक ॥ १॥ ॥

अंसको हग्न १५ अंसको होरा तग्नको वीलागे देवकारा हग्न
 कारुवांशो सोत वांसा जुग दादशांशो दादशांश अस्तु अत्र जुग
 विशंशो शो विशंशो जातु ॥ ॥ आशिग्रहहर्ते ॥

यस्य ग्रहस्य योराशीतस्य तदग्रमुच्यते ॥ १॥

जुगग्रहको जुगसो हते स्वात्तो ग्र पुर्वजातकमास्वाती कहीन्व
 सोचक्रदेषतोह संपुरा सुजतलोक हाई मातुमहवसु ॥ ॥

रासीस्वामी

रा	मि	र	मी	क	सी	कै	रु	र	व	म	कुं	मी	०
ग्र	मै	शु	व	च	सू	वु	शु	मै	गु	श	श	गु	०

होएकचत

हारपोराजराशोतरवीन्दु क्रमसः पतीः॥ सप्तएसी
 लुचै द्युर्को होरे सो क्रम तो नवेत ॥१॥ ॥ ॥
 वीषमरासीमा प्रचमसूर्यका होरा न तारचन्द्रका सप्तरासीमा प्रच
 मचन्द्रको होरा न तारसूर्यको चक्रवांसख मा तुम हुन्छ ॥ ॥

लग्न	मे	र	मी	क	सी	कै	रु	र	व	म	कुं	मी	रा
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
अस	र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	१२
अस	च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	च	र	११
													३०

दुष्कारकचत

दुष्काराणां द्यौः लग्नस्पष्टिती पः पंचमस्पच ॥ दुष्कारा
 अतितियसु लग्नी तवमरासी प ॥१॥ ॥ ॥
 दुष्कारा प्रकार लग्नका ३० असमा प्रचम १० अस तक दुष्कारा सो
 लेये लग्नस्वामी दुष्काराची पती हुन्छ दोओ दुष्कारा २० अस
 तक लेये पचमस्वातका स्वामी दुष्काराची पती हुन्छ तेओ दुष्कारा
 ३० अस तक लेये तमस्वातमा स्वामी दुष्काराची पती हुन्छ परलु रा
 नी सूर्य मंगल ई ग्रह लेये त्याग गर्नु यस्को क्रम चक्रमा हेर्नु ॥ ॥

लग्न	मे	र	मी	क	सी	कै	रु	र	व	म	कुं	मी	
१अ १० १मै	२शु	३व	४च	५र	६दु	७शु	८मै	९गु	१०शु	११श	१२गु		
२अ १० ५र	६दु	७शु	८मै	९गु	१०श	११श	१२गु	१३मै	१४शु	१५गु	१६च		
३अ १० ८गु	१०श	११श	१२गु	१३मै	१४शु	१५गु	१६च	१७र	१८दु	१९शु	२०मै		

कुज

स्पष्टि

मंगल

देखीनी

मंगल

चम ३०

मे व

५मै ५०

५व ५०

५गु ५०

५श ५०

५मै ५०

५र ५०

५दु ५०

५शु ५०

५मै ५०

५गु ५०

५श ५०

५मै ५०

५गु ५०

५श ५०

५मै ५०

५गु ५०

५श ५०

५मै ५०

५गु ५०

५श ५०

५मै ५०

५गु ५०

५श ५०



कुजाकिं ज्येष्ठशुक्राणां वारोषं दृष्टिमां गणा ॥ नाग

स्पृविषेते तु स मरा रो वी प र्ग या त ॥ १ ॥ ॥ ॥

मंगल राती वृहस्पती बुध शुक्र ५ गृह वीषमरा सीमा मंगल
देखी श्रीशंश असमरा सीमा ईत तो बुक्र दे पी श्रीशंश जान
मंगल ५ राती ५ बुध ८ गृह ९ शुक्र ५ अंश चक्र माहेतु अगादी वी
षम असु श्रीशंश रोख लेषे कोट ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीशंशचक्र

मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०

यास प्रासचक्र कास प्रास प्रास प्रयोजन जानु अयस प्रासचक्र

तु	मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी
१	१	८	३	१०	५	१२	७	२	८	४	११	६
२	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
३	३	१०	५	१२	७	१	९	४	११	६	१	८
४	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
५	५	१२	७	१	८	३	११	६	१	८	३	१०
६	६	१	८	१	१०	५	१२	७	२	९	४	११
७	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

दादशांशकचक्र

लग्नस्य दादशांशसु स्वरांशैर्वकृतीतः ॥ १ ॥ ॥ ॥

लग्नकाजं स ईस्कावार दे पी दादशांश ईस्को न वार रा सी का सा
मी सो दादशा पती मंगल राती सूर्य न ये न जुल जालु माफु
रा सी दे पी दादशा रा जो ह सो दादशा रा पती जातु ॥ कोष्टकम् ॥

०	मे	व	मी	क	सा	दं	उ	व	ज	म	कुं	मी
२३०	म	१	७	२	६	४	४	५	६	७	८	९
५०	७	२	६	४	४	५	६	७	८	९	१०	११
७२०	६	४	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
९००	४	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१२३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१५००	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१७२०	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
२०००	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२२३०	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२५००	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२७२०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
३०००	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
३२३०	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३५००	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
३७२०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
४०००	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
४२३०	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
४५००	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
४७२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५०००	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१

वीषमन्त्रीशांशा

कुजाकी गुरुविन्दुका त्रिशांशापतयः कदातः॥ पंचपंचा
 दशैते पुनागाता विषमग्रहे॥ १॥ ॥
 योऽस्य वीषमन्त्रीशांशां गले देषी संस-
 पा॥ ५॥ ७॥ १५॥ स हि तजालु॥ ॥ ॥

समन्त्रीशांशा

अने हेऽस्माकी नुपुत्रात्रीशांशापतयः
 शाने॥ पंचागादे पुपंचाता नागा
 तौ कठीटा बुजे॥ १॥ ॥ ॥
 योऽस्य समन्त्रीशांशां गले देषी संस पा॥ ७॥ १५॥ स हि तजालु जग
 डीको देषी ताले पुता सामा तु म होता॥ ॥ ॥

०	व
५०	४
१००	७
१५०	७
२००	७
२५०	७
३००	७

शशां

०	मे	व	मी	क
५०	मे	मे	मे	मे
१००	श	श	श	श
१५०	उ	उ	उ	उ
२५०	ग	ग	ग	ग
३००	अ	अ	अ	अ
३५०	०	०	०	०
४००	०	०	०	०

वीवा
हीत

सप्तगीशांशकोषके

षड्वर्ग

०	व	क	क	व	मी	मी
१	श	श	श	श	श	श
२	व	व	व	व	व	व
३	ग	ग	ग	ग	ग	ग
४	र	र	र	र	र	र
५	म	म	म	म	म	म

गहरोरावदे प्कोसोतवांशो
 दादसांशकः श्रीशांशश्चेतिष
 डवर्गस्तेसौ स्यागहजाः शुभौ ॥ १ ॥
 लगहोरादे प्काराः तवांशश्रीशांश
 मोर्डकांश षड्वर्गजाः ॥ दादशां

शरापेतमुनग्रहकोमुनः अमुनगहकोमुनः ॥ ॥

ईकांश

लग्न	होरा	दिक्का	तवा	दाद	श्रीशा
वर्ग	१	१	१	१	१

नेषेषषघटोरषेजिदगीगीद्वेद्रीगोकगियः ॥
 कीटे ध्यंगतवाद्रयोर्कलवेतगाश्चास्त्रिपीचर्कषट् ॥
 जूकेर्काद्रीखगाजलोगवगषट्चापेचिषट्गोद्रयो
 नेकेरास्त्रमराणीघटेसुषवषामीनैद्रीगोषट्मुना ॥ १ ॥
 ईकांशग्रहकोककतलकोकहेर्तलेमालुपुहोला ॥ ४ ॥

राई	मे	व	मी	क	सी	क	तु	व	व	म	कु	मी
अंश	५	२	७	४	५	३	१२	५	३	३	१२	७
०	७	३	८	७	५	१२	७	७	५	१२	२	५
०	०	१२	१२	५	०	५	५	५	५	०	०	७
०	०	१	२	७	०	०	०	०	०	०	०	०

वर्गवीचार

षड्वर्गपंचवर्गवाचतुर्वर्गमन्वापीवा ॥ कैश्चिन्नि
 वर्गसिन्धोर्कंदेकवर्गितुंमजेत् ॥ १ ॥ ॥ ॥
 वीवाहवर्गको ५ लग्नजोयेईतम ५ अचवा ४ सोपेमन्वापुको
 हीता श्रीवर्गपतीमन्वामहोतस्त्रुतजुतलग्नमादो अचवा



१८ कवर्ग आपेता पोह गता गर्त ॥ ॥ हगौश फल ॥ ॥ ॥

हगौ चतुर्दशेलागे वषस्पमकरस्पच ॥ कत्पा कर्कट मी

ताच मष्टमे द्वादशे लीत ॥ १॥ ॥ ॥ ॥

बीवाहलग्नमा वष अचवा मकर यस्को १४ अंश भुन कत्पा कर्कट

को ७ अंश भुन वषी केको १२ अंश भुन पोह लग्न बीवाह ला लीत

लेपे अंस हेतु ॥ ॥ अन्य मत् ॥ ॥ ॥

एकवींशती मेलागे मेष स्वाष्टादशे हरे ॥ संपूर्ण

फलदं चादौ मव्ये मव्य फल प्रद म ॥ १॥ ॥

बीवाहलग्नमा २१ अंश सीह लग्नमा १० अंस पो संपूर्ण उ

त मफलकारी मव्य मलेपेता मव्य मे फल जानु ॥ ॥

कुल स्या शेच प्रदुवीं शेचतुर्वीं शेचतौ लीत नमुका

मुकपोल गंभुन स प्रदशा शके ॥ १॥ ॥ ॥

बीवाहलग्नमा कुल २६ अंस भुन तुला २४ अंस भुन मी भुन चत

१७ अंस भुन जानु सो भुन कार्य माली ताले भुन प्रद दृष्ट ॥ ॥

वर्गोत मलक्षणा

अंते तु च फलं लग्नं यदीवर्गान्न मंत चेत् ॥ लग्न स्प स्वतवा

शोय रावर्गोत मउं चेत ॥ १॥ ॥ ॥

लग्न वर्गोत मंत लेपे अन्य मानो रे फल कार कहु दृष्ट लग्न आपुत

वाश कलेपेता पो वर्गोत महु दृष्ट सो अं भुन जानु ॥ ॥ ॥

जोबुली कलग्न कच मत्

जोबुले पदजा दीगे भुन कर पंचांग भुदोर वे रव्या सा मर

पुर्वतोर्चघटी कांतने दुमदारी गौसो गोगं कुजमव

मै गुसुपता हः पातमर्कक संज ह्यादी प्रमुखेति शंकट

ईदं राद्यो वगाद्ये क्वचित् ॥ १॥ ॥ ॥ ॥

गोचुली लगतु दुहसुला ईभुलहुत्पचादु बुद्धि हेरी गोचुली का

हसुर्ग असलने पे से के पद् १५१ अर्च असल को पे हे १५५ पला गोचु

ली यस्ता पती वी चार गरी चद्रमा जय म चव म लगत सा पाप

गह अष्टम स्यात् मा मै गत रहसती राती आ ईवार मार म हा

पात सूर्य संक्रांति ई दुष्ट योग लाई त्याग गर्त ब्राह्मण लाई सं

कष्ट प्राप्नुहुत् अचवा कलाये वत वती ले पे देखी वी चार ग

री गोचुली मा पती वी वाह गर्त स्रो दो पे देत ॥ वच प्रवेस ॥

वी वाह मार ल्य वच प्रवेशो युग्मे ५ च बाषा डश वाशरी

तात् ॥ त दुर्ज म वे युजी पंच मा ता दतः पर सानि

य मोत चाष्टी ॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वी वाह दे पी सप्त दी त मा वचु वे स गर्त अचवा १६ दी त मा प्रव

म प्रवे स गर्त अर्त नार ५ वर्ष सप्त २ वर्ष अर्थात् २ वर्ष ४ वर्ष मा

गर्त त हा दे पी पे हे त गर्त ॥ ॥ ई न मा सादि ॥ ॥

मा च फा लु रा वे सा र्धे शुक्र पक्ष शुक्ल दी ते गुर्वा दी त्य

वी शुद्धो स्यात् तिल पति द्वी रा ग मा ॥ १॥ ॥

मा च फा लु रा वे सा च को शुक्र पक्ष मा शुक्ल दी त गुर्वा शुद्धी शुर्षे

सुर्षे शुद्धी मा वच प्रवे स द्वी रा ग मा त गर्त शुक्ल दुष्ट ॥ ॥

ती हार सुपु ग शरा दी ति गुरु ब्राह्मण राजा श्री ती शा

कला स्कर वा पु वी हुर म सा ता व प्र श से ती नो ॥ ॥

कुलाजा ही गते रवौ बुल को प्राप्ता दये लागे जीव ज्ञासु
जाता दी ते तव वल्लु वे रस प्रवे सः बुल ॥ १ ॥ ॥ ॥
मग सीरा इत रा पुत र्व सु ती प्य अग रा व्या अमी ती जे प्य हस्त
स्वाती अवन रात तार का चीत्रा ई तक्ष न मार बुल ती बी कुल
दक्षी के मे प ई रा सी सूर्ये बुको दय व ह स्प ती बुक बुच ई वार
ता वल्लु प्रवे स बुल हुद ॥ ॥ अत्य मर ॥ ॥ ॥

हस्ता दी पंच मग पूष न द सने पुवी सु द म बुच दी ते गुरु
बुक वारे ॥ स्त्री ती बुल प्रच म पल्ल व चारे ते स्या त्या ती
अ हो त स म पे र व हु पी त व स्त्रे ॥ १ ॥ ॥ ॥
हस्त चीत्रा स्वाती बी सा पा अग रा व्या मग सी रा रे व ती अमी ती अ
व न ल्ये ते व ई त क्ष न व ल्य व ह स्प ती बुक ई वार बी वा ह त क्ष
त्र मा स्त्री हा ई पे रे पे हे हो व स चार मग रा ई त बुल हुद ॥ ॥
शुद्धा दी को का पुत र्वी वा ह

शुद्धा सि पु पुत र्व वा परी रा पः प्रोक्तो वी को हो न न ले र्गो
क्य ति चि मा स बे च न गु जे ज्ञा सा दी त वा क ला त ॥ पी
अर्धे पु म ती र्व तं म ती म ती पु नो म ति दु न ग श्री रो
त त म न्यो च ती सक त त त्वे र्द त य सा ती जी त ॥ १ ॥
शुद्धा दी जाती को पुत र्वी वा ह ग र्ते प्रकार वी वा ह का त क्ष म मा
म र्ग तार ती ची मे क्ति ने च गु र्मु क्ते को अ वे द य य स्को वी चार
ग र्ग ते ही सु र्ज त क्ष न दे वी दी त त क्ष न त क ग र्ग र प्र च म इ म र त
दो ओ इ च त ते ओ इ म र त बो बो इ म र त पां चो नो इ पु न हा न ल व व
इ म र त सा दी इ दु र्ग ग आ ठो इ ह क्षी कार क त व म इ अ व टा ये से

प्रकार से जा
ईन्द्रा
वसुदे
ज्येष्ठा पुत
नक्षत्रा ई त
हस्त
ला
जेत
हस्त चित्र
ई त क्ष न
काती वी
इ वृष ई
अ
दी
चरवत
शुद्धा
अ
व
गुरु

प्रकारेण जातु सूर्येन नक्षत्रेण १०१११४१२५ यो नक्षत्रकोत्पागर्तुः ॥ अस्य मतः ॥

इन्द्रादीतीति वा शेषा आग्नेयं वासुदेवता आम्बीनी

वसुदेवत्पदकाले भुते स्मृतम् ॥ १॥ ॥ ॥

उपस्थापुनर्वसुः आद्राः मेषाः कृती काराततारकाः अम्बीनी च
नक्षत्राः इतस्तमा भुद्रुहेवीवाहगर्तुः सोम्यीका पुनर्वीवाहदुह
दत्तपुनर्वसुर्दत्त

हस्तादीपंचकलीषकवसुपुष्यनेषु सूर्ये क्षताजगुरु
नार्जववासरेषु रीक्षावीवर्जीततीचीष्वहीकुलह
जेसी हे वृषे नवती दत्तपरीग होय ॥ १॥ ॥

हस्तचित्रा स्वाती वीसाषा अतुराया अम्बीनी चेत्यापुष्य
इतस्तमा आर्द्रा मृगशिरा मृगशिरा अश्लेषा अश्लेषा अश्लेषा
काती वीसाषा गरी दशमिक कुलह इतस्तमा पतीत्यागगर्तुः सी
हृष ईतस्तमा चर्मपुनर्वी ॥ ॥ इती प्रवसन्ता गस्तमापत ॥ ॥

अथवास्तुप्रकरणम्
ग्रामादी अठकुल

ग्रामादेरठकुलत्वं दीप्तो नक्षत्रहस्पच ॥ आसव्यीषाया

दीप्तिं च वीक्ष्याम्यमयन्तां शकात् ॥ ॥ ॥

धारवता उदलेते पही हे गाम हेर्दीशा लुमी मैहानक्षत्र

भुदीलाल चम हग्नस ईको वीवारगरी धारवता उ ॥ अरुवत ॥

अरुवतार्क अरुवतार्क चन्द्रे पुः स्वाद्यादी बल साही पु ॥ गु

केकेदुवलह ध्याय हारल प्रसरोते ॥ १॥ ॥

गुरु अरुवतार्क चन्द्रे ईआमार्क चव्यागमानये बहवात नये

यस्योकाह मागुसूर्यचन्द्रकोवलदेशीवरावताने आरलग
॥ ॥ ॥ गृहेवर्ज ॥ ॥

वीवाहोताकागहोदोषान्तेजामीनप्रदीतरीकाः
कुजार्कवोरेचरहर्गंवांशकं ॥ १ ॥ ॥ ॥

वीवाहमाजोमादोषकवीतद्वेतेसकोजामीनदोदीत्याग
गर्तरीकातीजीमंहरवीईवारचरहर्गकोशईघरवरा
उन्दात्यागगर्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तत्काकुजार्कयोआंशषडेचागस्थितवीज्यु ॥ व
जेजगशीगंनार्ककुर्पादेहपुलाप्रदे ॥ १ ॥ ॥
मंगलपुनकोअंशषडेचन्द्रसन्तुषचन्द्रईकोत्यागगर्त
पीचुतकत्ताव्यतत्तसमीतईरासीमासूर्यनयेकोकाहत्त
मेतेस्ताघरवताईगुपुनदायकद ॥ ॥ दारपुदी ॥ ॥

दारपुदीमिरीदादोनक्षत्रपुदीवृषचक्रत ॥ तीप्पी
चकेस्थिरेहगेदांगेचाहयमारमेह ॥ १ ॥ ॥
प्रथमदारपुदीहेर्तुतक्षत्रपुदीवृषचक्रईकोवीचारगेरूप
चककोत्यागगर्तसूर्यीरहर्गमाअववादीखलावहर्गमा
घरवताईगुप्रा^मगर्त ॥ आमअतुकुह ॥ ॥ ॥

स्वतामराशेर्यदुशीदीशराकेशदृष्टिता ॥ संग्र
मःपुनदःप्रोक्तास्वपुनःस्पाततोमया ॥ १ ॥ ॥
आफ्रतामराशीदेपीजामराशीशपा॥ ५१११००कोलेतेता
जामपुनजानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

एकनेसप्रेमकोमगहहातीस्त्रीषडेगे ॥ तुर्पाद

दादशे
आफ्राएशी
रकोहाती
वमाहेखेत
अव
पुव
स्वरा
गे ॥ १
अवर्गदिपी
जपचवर्ग
स्वमास्व
तार्दी
क्रमे
अवर्गकास्व
कुक्रतव
करयस्तान
तामादर
स्ववर्ग
तन्ता
आफ्राता
तस्तामी



सादशेरेगा शेषस्यतेनेवेतसुर्ष ॥ १॥ ॥ ॥

आफ्रागशीदेपीगामरासी १॥ नयताभुपजालु ३॥ नयेताध
रकोहागीजालु ४॥ १२॥ नयेतागेगकोकारकजालु पसोजो (प
र्वमाहेरेता ६॥) शेषस्यतरहेसोभुजजालु ॥ ग्रहजातकताह ॥ ॥

अकचटतपयसवर्गारीदोचमत्तःस्तताः ॥ एकोतवे
पुवर्गगांस्वरसाम्बिशारदैः ॥ १॥ अवर्गीषोश्रुयाः
स्वराकादीपुपंचसु ॥ पंचपंचैववर्गस्मियेशोतुचतुरक्ष

रो ॥ १॥

॥

॥

॥

॥

॥

अवर्गदिपीशवर्गतकअक्षर ४॥ तेसताअवरगकोस्वर १६कव
र्गपंचवर्गपटवर्गपतवर्गपपवर्गपयवर्गपशवर्ग ४यासोयसो
स्वरसाम्बिशारदैः ॥ वर्गसामी ॥ ॥

तार्द्धताजारीसीहश्चासपरिगुजजुकराः ॥ वर्गेशाः

क्रमेताशेयः स्ववर्गत्पंचेतारिपुः ॥ १॥

अवर्गकास्वामीगसुदकवर्गकासाजारीचवर्गकोसीहटवर्गको
कुक्कुरतवर्गकोसर्पपवर्गकोमुसायवर्गकोहाचीशवर्गकाशु
करयस्ताक्रमतेअवर्गदीकोश्वामीजालु ३॥ तवर्गमाआफ्रा
ताताक्षर ६॥ तेसवर्गदेरवीपंचतसत्रुहुदसोपतीजालु ॥ काकीशी ॥

स्ववर्गदीगुरांकृत्तापरवर्गगायोजयत ॥ अक्षनीअक्षरे

तलागंशेषादीर्षकंक्रुरागिनेवेत ॥ १॥

॥

॥

आफ्राताताक्षरकावर्गदीगुरागर्तग्रहकाताताक्षरकावर्ग
तस्तामीहाईतुआठहेनागलीतुरजोअचीकहुदसोक्रुरागि ६॥

चन्द्रकामुषदेष्टा



अपानेनानमर्षस्वेनदेमाप्तेतरातपीप्सादाश
वतसादत्तागपरास्माह हेमुनी ॥ १ ॥ ॥ ॥
कतीकाभगुराजामघाव्यनीदाईतक्षत्रदेपी७तक्षत्रमाच
दुमानेयेताचरकोमुषकमलेदक्षीराउतरपुर्वअसुपुत्री
दीसाकोवताईतु ॥ आयादीशाव्यत ॥ ॥ ॥ ॥

गृहेशकारातेतगृहस्यायादीशाव्ययत ॥ ततपुत्र
गवमुनीर्ननंशेषमायव्यजादीक ॥ १ ॥ ॥
जोघरवताईतुईस्काहायेघरवताईतुअसुलानपर्वपस्को
साव्यतागर्तकदावीतहाठलेअरीवनपोलेतअईलाहेशाव्यता
गर्त ॥ ॥ क्षेत्रफलम् ॥ ॥ ॥ ॥

बीसारगुरातेदेव्यगृहक्षत्रफलंनवेत ॥ ततपुत्र
वमुनीर्ननंशेषमायव्यजादीक ॥ १ ॥ ॥ ॥
स्वातकाचोडाईतम्वाईगुठरजोषरहहसोव्यजादीकहेआ
यहुदसोग्रहकोक्षेत्रकोफलजातु ॥ आयादीकताम ॥ ॥
व्यजोव्यजोऽयसींइसासोरनेयःखरोगजव्यांअश्वैव
क्रमेणोतदायाचकमुदीरीतं ॥ १ ॥ ॥ ॥

व्यजोव्यजोसीहकुकुर्वैलगददाहाहातीव्यांअयःआयद ॥
वरपरतेईतुआय

ब्राह्मणस्पव्यजोहेयोसीहोवेक्षत्रीमस्पच ॥ वषत
श्रैवेवैश्वस्पसर्वसंतुगजःसुतो ॥ १ ॥ ॥ ॥
ब्राह्मणकोव्यजाआयमुलक्षत्रीकोसीहआयमुलवैश्वकोवैह
आयअसंपुर्णजातीकोहातीआयेमुलद ॥ फलम् ॥ ॥

कीर्तिशोकोजयोवैरव्यतैतिव्यततासुष ॥ रोगश्र

तिग
व्यजो
कुरलेमे
नेपेरोग
पुर्व
वा
व्य
घरकोप
अवप
शुहेना
त्रकोफ
हेमुन
अ
तो
घरको
राशीज
डाईतर
महेश
तगर्त
गह
द
घरका

तिगहारलेज्जजादीताफलंक्रमात् ॥ १ ॥ ॥ ॥

ज्जजायेनयेकीतीव्युमजायनयेशोकसीहनेपजयकु
कुरनेमेवेरवेहनयेनगदहानयेतीननहातीनयबुषजाक्ष
नेपेरागमेकोऽजायेकोफलजालु ॥ तस्मिन्नपरत्वेवमपराजत ॥

पुर्वदारेवषमेपातगजः प्राग्गपमदीशुषः ॥ क्षत्रम
वाहंतविषोयेवीनर्तस्पाद्दहस्पलम् ॥ १ ॥ नेवनके
वपदेशः पापादलोकायः पुनः ॥ २ ॥ ॥ ॥

घरकोपुर्वदारवतान्दावषजायेमेवदक्षीणादामागजजाये
अवपरलुजगादीजोक्षेत्रफलवतायेकोहतेस्कोऽहगुलुर
अहेनागलीतुजोशेषरहदसोघरकोतस्मिन्नजालुतेसतस
त्रकोफेरीहनेनागलीतुघरकोवयहदसोभापदेवीबोरैत
हेमुनज्जवीकनयेज्जवीकजालु ॥ गृहगारी ॥ ॥

अम्भीत्यादीत्रयोमेषोमघादीत्रीतयेहरीमुहादीत्री
तयोचवीनदयंशेषराशीषु ॥ १ ॥ ॥ ॥

घरकोअम्भीतीन्तरतीकतीकाईइतस्मिन्नकोनयेघरकोमेष
राशीजालुमघापूर्वाइतराईइतस्मिन्नमासीहगसीजालुमुहपूर्वा
दाईतराषादाईइतस्मिन्नचतुसीजालुजईततस्मिन्नवरासीहतेस्माक
महेशरतस्मिन्नरासीजालुययकमहेघरकोतस्मिन्नअसुरासीईकोण
तगर्त ॥ ॥ ॥ ॥ घरकोतातलीतु ॥ ॥ ॥

गहस्पपुर्वतोदीशुक्रमात्कक्षादिदंतीतसंस्थाप्याही

दजार्तकासमित्ताषाडुसग्रीहा ॥ १ ॥ ॥ ॥

घरकाचारेदीशामापूर्वादीक्रमहेअंकदेर्गजवेपुर्वमागदक्षीणमा



पञ्ची ४३ तारमा जसा प्रकार ले झंको बापतागर्त घरको मुषज
 उतदी सामा दते ही झंको ही उ घरको उतदी सामा दता त १॥२॥३
 अचवा जई त द सो संरमा को झंको ही उ य सारी ती ले दु बै झंको क र ग र्ग र
 ते सं रमा मा १ सी हाई उ र जो सं रमा हु द सो सो द ता म मा ता म रा ष ॥
गहको नाम

अबं ब्या लं जय नै दी र व रं कां तं म तो र म म ॥ सु मु षं दु र्मु षं क
 रं री पु दं च न दं न म म ॥ १ ॥ आ कं दं बी पु लं जे यं ता म तु ल म
 त प्र द म ॥ ग हं क वा दी कं जे यं ता म तु ल म फ ल प्र द म ॥ २ ॥
 घरको १६ नाम हो की अब बाप ज म त न र व रं कां तं म तो ह र सु मु षं दु र्मु
 षं क र री पु दं च न दं न म म आ कं दं बी पु लं बी उ यं ई १ नाम को फ ल ता मा
 र्ज तु लं जानु ॥ ॥ अंश सार्त गा ले प्रकार ॥ ॥

अपे त शं पु ते धे ने ग हं ता मा वि त्पु रे ॥ नी नी र्त्तं ता
 श का दे षी दि ती यां सो त शो ल त ॥ १ ॥
 पु र्ब मा लान र व न जो क हे को द ल सी का फ ल मा सी हाई उ घर को ता मा
 क्ष मा हाई उ र ३ ले ला ग ली तु शेष श्व ने अ मु ल वा की शं वै मु ल ॥ ॥
गह यो ज न

सा ता गा रं दी श प्रा न्ता मा जे यां प न ता ह य म ॥ पा म्पी
 जी श य ता गा रे नै र्त्तं ता श ल म दी रं ॥ १ ॥ प्र ती न्तां तो
 ज ता गा रं बा य व्वा प सु मं दी रं लां दे को शं वो त र र्पा ई शा
 लां दे व मं दी रं म ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सा त ग र्ग स्या त पु र्ब दी मा ग र्ग सा जे य दी श मा पा क स्या त द क्षी ण
 दी श मा श य त स्या त नै र्त्तं ता म स स्या त पञ्ची म्मा नो ज न स्या त



वायव्यमापयुस्यातर्त्तमापरागारज्जुद्वयस्यातर्त्तमापरादेव
श्चातपसप्रकारहे ८ दीशमाघकेजोगागर्तु ॥ अहदोष ॥

अहदोषीगुणमेव दोषायतलनेदुह ॥ आयव्यप्रय

तेनवीरुचनचवर्जयत् ॥ १॥ ॥ ॥

घरवताईदादोषकोरेगुणानेरेजापोतेतेतोघरदोषकारकहुं
हुपारंगजायेताव्यज्जुद्वयोपतश्चकोवीचारगगित्तागगर्तु ॥

वासुचक्रकोताम

आरेलेवपलनचक्रसैलेजेभंतुकूर्मके ॥ प्रवेशकहशं

चक्रंवांसुचक्रंवेवेमुलम ॥ १॥ ॥

घरेकोआरेलमावषचक्रहेर्त्तुसंनस्यापत्ताकूर्मचक्रहेर्त्तुप्रवेश

काहमावासुचक्रहेर्त्तु ॥ ॥ गृहारेलमाश ॥ ॥

सोमफालगुणवैशाखलादेआवतकार्तिका ॥ माश

स्पृग्दृतीर्त्तारोपुत्रारोग्यवतप्रदम् ॥ १॥ ॥

पुषफालगुणवैशाखलादेसावतकार्तिकईमईहामाघ

वताईतजारेलगरेपुचलानजारागपतावतप्रदहुम् ॥ ॥

मासपट

शेकोजाखपंचतातीपमुत्तमातीतैमसंगारुत्त

ताशं ॥ शकीप्राप्तीवहीनीत्यावहृतीकुर्युं औवाद्या

गृहारेलकाहे ॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१२मैहामाघवताईतेपुलेवैवमाघोकेवैशाखमाघासुजे

ठमात्तुजाषाटमापजुहातीआवतमादुअप्राप्तीमादौ

मादरीदुआमीतमाहडाईकार्तिकमाघोवककोताशंभीर



मा. जात प्राप्ति. पुष. मा. प. ती. च. त. प्राप्ति. मा. य. मा. अ. जी. न. ये.
 का. लु. रा. मा. ह. द्वा. जी. प्रा. प्री. ई. मै. हा. का. फ. हा. जा. लु. ॥ घरको नाग ॥
 त. व. ना. ग. ग. ह. कु. र्पा. ल. च. ना. ग. ग. र. द. क्षी. रो. ॥ श्री. ना. गे. वा.
 म. त. कु. र्पा. न्दे. स. दार. प्र. क. ह. ये. त. ॥ १॥ ॥ ॥
 घरको ई. ना. ग. ग. र्नु. ई. स्मा. पा. च. ना. ग. र. द. क्षी. रा. दी. शा. मा. घर. वृ. ज.
 ७. ३. ना. ग. र्नु. त. र. मा. शेष. म. ज. म. मा. दार. को. यो. ज. ता. ग. र्नु. ॥ ॥
गहदार

दार. स्मा. प. री. य. द्वा. र. दार. स्मा. ल. च. स. मु. र्ण. ॥ अ. प. द. न. त.
 दा. त. च. न. क. र्त. वं. मु. ले. सु. ली. ॥ १॥ ॥ ॥
 आ. फ. र. का. टो. का. का. मा. जी. आ. र्को. टो. का. त. ग. र्नु. आ. र्को. का. टो. का.
 का. अ. पी. ल. ती. र. आ. फ. र. टो. का. त. प. र्नु. की. त. ले. त. लो. ता. श. का. र. क.
 हु. न्द. ॥ ॥ ॥ पुषदीशापते ॥ ॥ ॥

क. क. त. न. ह. री. कुं. ल. गे. ते. र्क. पु. र्व. प. श्री. म. पु. र. वा. ती. ग. हा. ली. ॥
 तो. हि. मे. ष. र. ष. व. श्री. क. य. र्ता. र्द. क्षी. रो. त. र. पु. ष. ती. व. र्द. ती. १
 क. र्क. ट. म. का. सी. ह. कु. ल. ई. रा. शी. का. पु. र्य. मा. घर. को. मु. ष. पु. र्व. प.
 श्री. म. ग. र्नु. तु. ला. मे. ष. व. श्री. क. ई. रा. शी. मा. र. व. प्र. रा. की. मा. सु. र्य.
 घर. को. पु. ष. द. क्षी. रा. र. र्नु. त. र. मा. ग. र्नु. ॥ गहारीले नक्षत्र ॥ ॥
 अ. त. रा. म. ग. री. ही. ली. पु. ष. मे. च. कर. ती. ये. ॥ अ. नी. वा. दी. ती. ये.
 पो. षो. ग. ह. री. ल. प्र. रा. स. ते. ॥ १॥ आ. दी. ल. लो. म. व. र्द. त. पु. स. र्व.
 बा. र. सु. र्य. ल. ला. व. हा. ॥ च. द्वा. दी. ल. व. त. त. आ. हो. ग. पु. न.
 ती. री. द्वा. ते. ॥ २॥ स. लो. च. य. स. क. र्त. वो. अ. ल. प. री. व. र्ज.

येतः॥ प्राणादेष्वेवमेव शपात्कूपवापीषु चैव ही॥३॥

तितईतग मगरोहीती पुष्प जगुएजा हस्त नीचा स्वाती बीतीया
 शततारकोरेवती ईनसत्रमागहारंलगर्तु मुलद असुरवीवारहं
 गहवार द्वादीसंपूर्णवारमा मुलद चन्द्रवलर वीवलप्राप्तिहग
 मुलहोरसर्ववाषदागर्तु असेअनेत्रमागगरे एकारकवातहाईवका
 ईतु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वषचक्र ॥ ॥ ॥

जीवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वितीये ष्वर्कतः शशी ॥ कुर्या

हृषीकेशसुखसखे र्घरक्षणी दहद्रुता ॥ १॥ चतुर्वर्णी

ॐ नमः शिवाय प्रवृत्तान्तरावपः ॥ ११ ॥

सूर्य नक्षत्रे दीप्त नक्षत्रतक गन्ते नक्षत्र प्रवृत्त ३ नक्षत्रमाह
क्षी दीप्ति ४ नक्षत्रमाह दश नक्षत्रे ४ नक्षत्रमाह वीरता चतुर्थ
३ नक्षत्रमाह क्षीर्ष चतुर्थ ४ नक्षत्रमाह दीप्ति पञ्च ४ नक्षत्रमाह चतुर्थ
सप्तमलागको २ नक्षत्रमाह रोग अष्टमलागको ३ नक्षत्रमाह तु
यसा प्रकाशे वषट् नक्षत्रे हेतु जु न दीप्त नक्षत्रमाह अर्द्ध दीप्त
चारवर्ताई ते नक्षत्रां लगर्तु ॥ ॥ शिलाया ॥ ॥ ॥

दक्षिणपूर्व कोण कृष्णपुञ्जशीलात्प्रशेत्प्रथमशेषा

शेषाप्रदक्षीणोत्तरेणाश्वेवप्रतीक्षायाः॥१॥

पहीले पुजागोरे प्रथम पुर्व र दक्षीण काची च माझा गये दीक्षा
मा प्रथम पाषाण राषट्ट दत्त र दक्षीण मा कल्ले नर्तु यस्तारी
तले स्तन स्थापन पत्नी गर्तु ॥ शीला त्या शत क्षत्र पाल्वे ॥

शीताम्पारा प्रकर्तको गहात अवरो मजे ॥ पौषो ह
 से चोरो ही लोपुष्पाभी गुराचये ॥ १ ॥ ॥ ॥

जगमापचराषदा अवत मजरे वती हसारे ही ती पुष्प अशी
 ती ती तर्तत ए ई त दृव मा सी हा को मा रा गर्तु ॥ शेष को मुष ॥
 कैलासी हे तुला यालु जगपती मुषे शं लु को रोजी
 खात ॥ वायव्ये रपात दाष्प त्व लिच त क करे ई श पा
 तै व दं ती कुने ती ते चे मे पे ती कु ती दी शी मुषे कात
 वायव्य को रो चा रे को रो मुषे वै र प सी चुत गते क
 र्क टेर ह्म पाट ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

कैलासी हे तुला ई लग मा शेष को मुष ई शात को त मा हुन्द
 त व जा गे य को न कार वा ड ह मा प थ र ल र्क कुल सी त ते प ई लग
 मा शेष को मुष ते कु ति को रा मा वायु को रा का षा ड ह मा ल र्क
 वृक्षी क च त म कर ई लग मा शे का मुष वायु को रा मा हुन्द ई शात
 को रा को षा ड ह ल र्क वेष सी चुत क र्क ई लग मा शेष को मुष आ
 जे प मा हुन्द ते कु ति को रा को रा वा ड ह प थ र ले न र्क र अ न दाय क
 हुन्द ॥ ॥ ॥ दुष्योग ॥ ॥ ॥

वज्र व्याघात मुहा म्य ती पात अ गंड क बी ॥ ॥
 ल परि धौ व र्जो वारो मंगल ना करे ॥ १ ॥ ॥
 वज्र व्याघात मुहा म्य ती पात वीष्कल परि ध यो यो ग मार
 मंगल र वी वार मा घ र व ता ई तु ॥ कु र्म चक्र ॥ ॥ ॥
 ती वी ठ पंच गुणी ता कु ती का द क्ष सं यु ता त व्या दा द
 रा मी आ न च त व ना गे त ना जी ता ॥ १ ॥ फल ॥ जल व



दातुगीश्वरस्य हे पंचदशेवम् ॥ त्रिषट्कठकचा
काशेयीवीजं कर्तुं हस्तं ॥ १ ॥ जले लानः स्यात् प्रोक्तः
स्यलहागीसोचैव च ॥ आकाशे शरत् प्रोक्तं सीदं कर्म
स्य चक्रकम् ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

जुगतीची जाग हारं लगार्तुं दत्ते स्मा कर्म चक्रे हर्तुं जुगतीची द
ते स्को पले ला गली तु कृती का दी दे पी जुग त द्वा च द सो युक्त
गरे रे ते स्मा १२ सी लाई तु त द न र द ले ला गली तु शेष ४। ११ रे ह्य
कर्म जल स्यात् मा जानु फल लान ५। १२ रे हे ता कर्म लूनी मा
जानु फल हाती शेष ३। १३ रे हे ता कर्म आकास मा जानु फ
ल मा रण य सो ३ प्रकार को कर्म चक्र जानु ॥ संज्ञ चक्र ॥ ॥

सूर्यादी दीतल द्वा प्रच मतो मन्त्रे तु या वीं शती ॥ सी
लागे रस संख्यया मुती वरे सुक्तं मुदु मुत्तं ॥ फल ॥ सी
लागे रस तं न वे द्वा ह पते मूले च तार्च क्षयो रा ज्ये च
वत् सर्व शौरव्य मत्तु ल प्राप्नोति कर्ता शया ॥ १ ॥ ॥

सूर्य तक्षत्रे दी दीत तक्षत्र त क हे र्ते क म प्रच म दुई तक्षत्र सीत का
मूल मा फल ज्य त ता श दो ओ २० तक्षत्र सीत का मन्त्र मा फल
सर्व शौरव्य कार क त ती ये इत क्षत्र संज्ञ को अंग फल मा रत जुग
तक्षत्र मा भुल फल जाई त् दुई स्मा संज्ञ ख डा गर्तु ॥ दली त रा षे ते मुहूर्त ॥

मूले यो ले विरह ग द्वा पती मरत पंच गर्ते मुष स्यात् ॥ म
ज्ये दे या रक्षि क्रुक्षं ज्य त सुत सुष दं पुच्छे देशे व हाती ॥
पञ्चादयं त्रिंशं ग द्वा पती सुष दं ता ग्प पुत्रार्च दे यं ॥
सूर्य भविष्यं कुक्षं प्रती दीत गौ ये यो न च के वी लो म ॥ १ ॥



सूर्यनक्षत्रदेवी दीनतक्षत्रकहेर्तेक्रमदहीनगणतातीमीनहेर्ते
कीप्रथमतीनतक्षत्रदहीनकोमूलस्वातीहेजालुफलवताईतेवा
लेकोताशदोओ ५ तक्षत्रगर्नप्रसूतेओ ८ तक्षत्रमासमज्यमचतसुष
चौओ ८ तक्षत्रमापुच्छफलमीनताशपाचौ ३ तक्षत्रमाघरवताईते
वालेकोसुषमागपुत्रचतदायकजालुयसाप्रकारलेस्वातीनक्ष
त्रदेवीअंनचक्रहेर्ते ॥ ॥ दारचक्र ॥ ॥ ॥ ॥

अर्काचत्वारिंश्रुद्धारीकुर्वन्नेवप्रदापयेत् ॥ दौदौकोणे
पुदयादौशाषायांचतुश्चतुः ॥ अचत्वारिदेयाती
मज्येतीतीप्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेतिहलतेराजमुद्गारांको
गाकोराकेषुच ॥ २ ॥ शाषायांतलतेहृदीर्मज्येराजं
पदंतया ॥ अस्तिमार्तप्रोक्तं दारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ३ ॥
दारचक्रवताईतेप्रकारसूर्यनक्षत्रदेवी दीनतक्षत्रहेर्तेप्रच
म ४ तक्षत्रमा दारकोईवर्त्तनागफलराज्यप्राप्तीदाका ४ कुतामा
२ तक्षत्रकोरा मालयेतेस्कोफलई दारा दारकाशाषा २ देवतीर
४ तक्षत्रमालहृदीप्राप्ती दारकामज्य ३ तक्षत्रकोफलराज्यप्राप्ती
दारका धोका माला नक्षत्रकोफलमार्तयसो दारचक्रजालु
गृहकोप्रवेशकोचक्र

अथप्रवेशेनवमंदीरस्पयावातीवतातचमुपतीता
म ॥ सोमपायेनेपुर्वदीनेवीज्येवास्वर्चंतुतवली
असम्पक ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मानाकोवादरुजाघरमाप्रवेशगर्तुगजाकोदर्शितगर्तुतापही
लेवासुपुजा नुतवलीआदीईतरामतमागर्तु ॥ ॥

चीनागुराज्यामगपौरपुष्पस्वातीअवीद्याअवगांन
मूल॥गोरषसूर्यजित्तिजेअरीकातीमोप्रशसौनव
तप्रवेश॥१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चीनागुराज्यामगरेवतीपुष्पस्वातीज्येष्ठाअवगांमूलईत
अचमागहप्रवेशगर्तुआईतमंगलईवाररीकातीवीदोदु॥॥
गहायुः

सुतेजीवमुषेमुक्रोबुजकर्मरागौरवीरवीजसहजे
नृशतायुस्यातदागृह॥१॥ ॥ ॥ ॥

घरवताईनेवषतमा (अर्घातलग्नमा) १ स्वातमा २ हस्पती ३ स्वा
तमा ४ मुक्र १० स्वातमा बुज ६ स्वातमा सूर्य ३ शती यस्तारीती
ले घरवनेकोलोपतीमय १०० वर्ष घरकोआयुष्यजालु॥अथमत॥
अगुर्तजेबुजोयोमीलानेक केन्दुगोगुरुसम्पारले
चतस्पायुर्वतरारागाशतद्वयम्॥१॥ ॥ ॥
घरकोआरंलकालमा मुक्र १० स्वातमा बुज ११ सूर्य केन्दुमा २६
स्पती यस्तोग्रहयोगलेपेदेवी घरकोआयु २०० वर्षजालु॥अथमत॥
सोअवतीतीलगेवीहगतेकेदेवमंत्रीगीरसातलेऽधवा॥
सोअगेरवीसुतेऽधवायोगेसातस्वित्तीअसुवीरसहस्रिया॥१॥

घरकोआरंलकालमा मुक्र ११ स्वातमा १२ सूर्य केन्दुमा २६
माहोसशती ३१ स्वातमा होसयस्तालग्नमुदिमा घरवताईनाल
ईआरंनगरेदेवीहस्मीयुक्तयेरेकालरुद॥प्रभ्राक्षरफलम्॥
पूर्व॥पूर्वायांयदीअप्राज्यातरशाल्यतदानवेत॥साव्य
हस्तप्रमाणतस्ममातुष्यमत्युक्त॥१॥आगेमे॥आ
मेपांदीशीकप्रसोखरशाल्यकरद्वये॥राजदंदोअवेतव

नमतेवतिवर्तते ॥ २ ॥ दहीला ॥ मायापां दीशिनः प्रमेतदा
 स्यात्कटिसंस्थित ॥ तस्य सगृहीतस्य सारतवीररोगात्
 ॥ ३ ॥ नैकुल ॥ नैरीत्ताये दीशः प्रभु सार्द्धहस्ता द्यस्यते ॥
 अतोस्मिन्नायते तत्र वाताता जयेते मती ॥ ४ ॥ पशुम ॥
 तः प्रभु पशुमांशुशोकोः शस्यं प्रजायते ॥ साद्वहमे
 गृहस्वामी नृतीक्ष्णी सदा गृहे ॥ ५ ॥ वायव्य ॥ वायव्या
 दिशि पः प्रभु तुषांगा राशु अतुषकेः कुर्वती ति त्रताशं चतुः
 स्वप्रदर्शिते तदा ॥ ६ ॥ इतर ॥ ईदीच्या दिशि पः प्रभु वीप्र
 शस्यं कदा द्य ॥ तन्कीष्टं तिर्वगता यकुवेर सदृशमशीः
 ॥ ७ ॥ ईसा ॥ ईशायां यदी सः प्रभु अतो सत्यं साद्वहसा
 त ॥ दहो जतस्य ताशा यजायते गृहे मेचीतः ॥ ८ ॥ मज्ज
 हपयामज्जकोषे च बहो माचं नवेतज्ज ॥ ९ ॥ पालकम
 जोनस्मलो हकुलताशकृत ॥ १० ॥ ॥ ॥

प्रभु काहता एव कका मुषदेपी प्रचमज्जवर्गको जसार्द्धचारनये
 पर्वतको तर्पडे टहात मती मनुष्यको हादह सलो जालु उतनीका
 लेता मनुकारक जालु प्रभु कवर्गको जसार्द्धचारनये जगदीश
 शासा १ हात मती गज्याको हादह सलो जालु त्यातनी कोहेत जने
 राउंददह सलो जालु २ चवर्गको जसार्द्धचारनये दहीरादी शासा
 कमाज्जको मती घने देपी मनुष्यको हादती कलीह सलो नये देपी
 त्यामातुल्यवेरै काहरीगी जालु ३ हवर्गको जसार्द्धचारनये ता
 ते कुलदी शासा दे टहात मती खने देपी कुकुरका हातको हादती
 कहह त्यातनी काहेता पुत्रको ता राजालु ४ तवर्गको जसार्द्ध
 चारनये मश्री सासा हदीकाको हादह त्यातति कोहेता सासा

लीककोवास हुन्दे ५ ववर्गको ज्ञानार्थ चार नले ये वा य अ दीशामा
 ४ हातमगी मूस कोई हाद सो नती को है मी चनाश दुख स्वप्ना हुन्द
 ६ यवर्गको ज्ञानार्थ चार नले ये ईतर दीशामा १ हातमगी बालरा
 को हाद दु सो नती को है दे पी कुवा जे सो लगी ले ये पती दरी दु हुन्द
 ७ शवर्गको ज्ञानार्थ चार नले ये ईसा त्प दीशामा १॥ हातमगी गा
 ई को हाद दु सो नती को है तागा ई चत को ताश जानु ८ ह प य यो
 मज्जमा जानु यसा क मर नार प ता है म नु ष को क पाल न ल स म प
 लाम दु सो नती को है कुल को ताश जानु ९ ए सो वर्ग दीशाय सो बी
 चार गोर शस्त्र हेतु ॥ ॥ ईती वासु प्रकर ॥ ॥ ॥

अथ यात्रा प्रकार माहः ॥ ॥ ॥

बुक्क सन्मुख ॥ एक गामे पुरे वा पी दुर्ली क्षरा छि प्रवे ॥
 वीवा हे ती र्ज यात्रा यां प्रती बुक्को त विद्यते ॥ १ ॥ ॥
 गाई को ताई मा सहर को सहर मा दुली ह्म हो स ए म न्न य हो स
 यलो कात प्रा प्र न ये वीवा हर ती र्ज यात्रा मा सन्मुख बुक्को दोष
 हेत ॥ ॥ ॥ ॥ अथ मत ॥ ॥ ॥ ॥
 पोषा दा वागी पादां त यावती य च दु मा ता व च्छु को
 न वे द्य सन्मुख गाम त बुल म ॥ १ ॥ ॥ ॥
 रेवती ज्ञप्ती ती नर ती कृती का ई त द्वात्र का प्र य म चार त मा बुक्क ज्ञप्ति
 र हुन्द ता प ती सन्मुख बुक्क या यात्रा गर्दी दोष हेत ॥ यात्रा को त द्वात्र ॥
 ह सो न्दु मे त्र अवगा धिति पुष्प पोषा अवी द्वा च पुं त र्व सु
 च ॥ प्रोक्ता ती वी षा या ती त व प्र यो ते त्पत्का वि पं चा
 दी म स प्र ता रा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



हस्तमग्नानुराचाः प्रवराः तोष्णः अश्वीतीरेवतीचतीषाः पुनर्व
सुईदितनत्रयात्रागतलाई प्रससाद्वजस्ताएवीचारः ३५ ॥ ईता
राकोयात्रागर्दामातागगतु ॥ गर्गाचार्यमुहूर्तम् ॥ ॥

ईषः प्रशस्ते ~~गर्ग~~ शकुनचव हस्ततीः ॥ अंजीराम
नईताहोवी प्रवाक्योजतादतः ॥ १॥ ॥ ॥
गर्गकोवचनः प्रातःकालमायात्रागर्तुच हस्ततीकोवचनः पही
लेशकुनवीचारः गोरयात्रागर्तु अङ्गिराकोवचनः सतोतसाहमाया
त्रागर्तु ब्राह्मणकोवचनः लेपनीयात्रा मुलद्व ॥ वारपरत्वेसारशकुनप्र
गुरेशतौरवीनोमेमुनोवैदक्षीराश्वरः अन्नावारे पुवा
मस्तुस्वरः श्वेवमुनस्ततः ॥ १॥ तिर्गिमेवामतः अक्षप्र
वेशेदक्षीराः मुनः यः स्वरः सेवताशा जेयोगीतां प्रतमी
दृशम् ॥ २॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुरुशतीमंगलरवीः ई४ वारमाः आक्रुदक्षीराश्वरः चलोतनने प्रवेश
मा मुनः अस्तोमबुजः मुक ई३ वारमाः आक्रुवामस्वरः चलोतनने गम
नकालमाः मुनः योस्वरयोगी हस्तो ज ४ मावता योकोद्व ॥ पहीपततः ॥

राज्यं तु सिरसि हं सहाते वचुदशतम् ॥ अक्षयेराज
सत्मातमुतरोद्वेचनश्च यं ॥ १॥ अचरोद्वेचनैश्च यं ता
रागेर्याजीपीडतः ॥ आयुष्यं दक्षीराकोर्गवदुलानस्तुवा
मके ॥ २॥ अक्षयोस्तुवचनं जेयनुजेनुपतीतुत्यतः ॥ रा
जहोततयावामेकं ठे सनुवीताशतं ॥ ३॥ सतद्वयचदुर्गा
गपमुदरे मंडतं मुनम् ॥ प्रशाताशः पृथदेरो जातु जघेषुना
वहं ॥ ४॥ कारद्वयेवस्तुताहः स्कचयोर्जीजयीनवेत् ॥ ४॥

१	शीरा
२	तहात
३	आपी
४	मापी
५	तलो
६	घात
७	दक्षीरा
८	वापन
९	तेन
१०	मुज



तालौ बहुचतप्रोक्तपूर्वश्रौतदृष्टादिकं ॥ ५ ॥ दक्षीणो मनीवंचेन
 मगसापंचनक्षत्रं ॥ मतिवंचेतद्यावासे कीर्तिवृद्धिचतुष्टयं
 दं ॥ ६ ॥ तपेष्वात्पतानचवके श्रीशाललो जगं ॥ गुल्फयोर्व
 श्वतं हे ये केशांते मरणां च वम ॥ ७ ॥ अन्वातं दक्षीते पादे वा
 मे वंचु वीताशतं ॥ स्त्रीताशस्यात्पाद मन्वे पादांते मरणां
 वेत ॥ ८ ॥ पत्या प्रपतये हे यं सरतस्या चीरो हरो ॥ यत्रोद्यु
 क्तं मगुष्प स्पृशुनां बुला ही सूचकं ॥ ९ ॥ तिह माषादिदार्त
 चलात्पादे मं दी जन्मते ॥ पीता कीतं तमस्कृत्प जेप मन्त्र
 षडक्षरं ॥ १० ॥ शतं सहस्रमचक्षुः सर्वदोष तीवर्हणम् ॥ शी
 वाहये प्रपद्या द्वे दीपदोषो पशंते ये ॥ ११ ॥ ॥ ॥

पुरुष अथवा स्त्री ईकांशरीरपरमात्राकाह माप ह्यो पतत तलये असु
 शीरमाशरतच हो नते बुला बुला जानु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 शरीरस्थान पर्व बुला बुला तथा फल ॥ ॥ ॥

१ शीरराजप्राप्तिः	११ वामनूजाराजको	२१ कटीलागजुप्रप्राप्ति
२ ललातवंचुदर्शन	१२ कंठशत्रुताश	२२ दक्षीणतारीलक्ष्य
३ आभीक्ष्णो राजमात्र	१३ सतदुर्लाभ	२३ वामतारी कीर्ति
४ माक्षीक्षो ज्योत्स्नस्य	१४ पेटभुजतया मंद	२४ तडुब्बात्पलाल
५ तल्लो ज्योत्स्नस्य	१५ पीठुनीताश	२५ शुष्मपीवा नलो ज
६ छात्रमाक्षी पीदा	१६ जातु भुज	२६ शुल्फवंचन
७ दक्षीतकात्रजायु	१७ जंघा भुज	२७ केश मरणा
८ वामकात्रचैरैलाल	१८ हातवस्त्रलाल	२८ दक्षीणपादगमन
९ तेजवस्त्र	१९ स्कंध बीजय	२९ वामपादवंचुतास
१० भुजाराजसमात्र	२० ताली टेरे चतुस्त	३० पादकामज्जस्त्रीताश



पहली अर्धात माई सुही पतनहुनु शरीरमा सातच छोननेतकाह
सबैललाकगरी ब्राह्मणलाई तीलमा सदा गदीउ महादेवको दर्शन
गरीषदाक्षर मंत्र १०० अथवा १००० जप गर्नु दोषमातीको ती पीत
शीवासेमा वती वाहनु ॥ अंगस्फुरण ॥ ॥ ॥

बुद्धिमेवं ती पीताती अथवा अनाती अनाती च सर्वचर्म

नृतनेव त्वं ही सर्ववी वृज्यस्य ॥ १॥ ॥ ॥ ॥

मनुजी मास्य संग अमृगदंष्ट्र त्वं हे सर्वचर्म नृत ती पी सपुर्णचर्म

जान्दो पस्कारन अङ्ग फुरत को अना अना कचन गरे ॥ ॥ ॥ ॥

अंगस्फुरती गोलोनागे प्रशस्त स्फुरन वेत ॥ अथवा अना

आवासे पृथक् पृथक् च ॥ १॥ ॥ ॥ ॥

पुरुषका शरीरको दक्षीणालाग ^{मा} फुरत नये अना वा मलागला पृथ

हृदय स्फुरत नये अथवा अना जानु ॥ अंगस्फुरतको फल ॥

अंगाता स्पंद तं चैव अना अना वीचे दिते तस्मै वीरतो

बुद्धि येन स्यात्तदी च नुवी ॥ १॥ पृथ्वी लोले न वेत्सुर्धि

सहादे रवी तं दत्त ॥ स्वातं नी वीदी लायां ती अत सोः प्री

य संगम ॥ २॥ इत्कं ठो पगमा मने पृथं राजन वीच अ

नै ॥ नत्पल न्निश्चा सिदेशे दृगुपां ते च नागमः ॥ ३॥ द

ग्वं च ते संगे च जय शीघ्र मवाप्नुयात् ॥ यो पितृणां नो

पांग देशे अवरां ते प्रिय भुती ॥ ४॥ तासी कायां प्रीती

शौष्णं प्रिया शीर च रेखयो ॥ कंठे तु लो गहान स्याद्गो

वृक्षी रक्षां शयो ॥ ५॥ सुदूत अथ च बाहुन्यां हस्ते चैव च

तांगमः ॥ पृथे पराजयो मुदे जयो बहस्य ते न वेत ॥ ६॥

कुक्षी न्ना प्रीती रुद्दी या प्रीयाः प्रजगुं तं नो ॥ स्वात अ

शा ता नी देशे अथ चैव च नागमः ॥ ७॥ जागु संवो परैः



संवीरवद्विर्नवेत्पः॥ एकदेशेनेवेतस्वामीजघान्पा

रवीतद्वत्॥ पाईतमस्वातमातेतीपद्व्याप्रस्फुरोत्प॥

अतानंवाच्यगमंतनेवेत्पादतलेत्प॥ ६॥ ॥ ॥

अंगस्फुरतकोमुनामुनपुल्लजेकहीयेकोहसोबीसारगरीसरी
कास्वातमातलेहीयवमोसजानु॥ ॥ ॥ ॥

१ मकरद्वीलान	२ कागप्रीयवाती	१८ कापी प्रीति
२ लालास्वातवची	१० ताकप्रीतीशौष्य	१९ जगप्रमुती
३ ओपीलू मीत्रलेत	११ भोग प्रीयवस्तुलान	२० हींगस्त्री प्राप्ती
४ तेनससुषमीत्रके	१२ कंडेष्टमृषप्राप्ती	२१ तानीस्वातनृष
५ तेनच्यतप्राप्ती	१३ स्कंदमोगरही	२२ तलाच्यतप्राप्ती
६ आषाकागरेतागप्राप्ती	१४ वादुप्रीत्रप्राप्ती	२३ गेदाकोसंवीवतप्रद
७ आषाकोदाओपरे	१५ हाच्यतप्राप्ती	२४ जंघाएकदेशस्वामी
८ हासंगाममाजय	१६ कीठीई दोआरेपीत्र	२५ पाईतमस्वात
९ तेनकोसनेवीलान	१७ हातीरुपेप्राप्ती	२६ पाईकोसगमग

स्त्रीकोजंगस्फुरत

लहतेपीठकंचैव जेयस्फुरतवतया॥ वीषययेतवीही

तसर्वस्त्रीणां वीषययद्विहीणकीप्रसन्नगप्रसंसा

दीशेषतः॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥

माहीतपीरेवमोजीमजानुतरस्त्रीकोवाजजंगपुसूषकोद

हीणजंगजुनस्त्रीकोदहीगाजंगपुसूषकोवाजजंगजुन

जानु॥ ॥ ॥ ॥ इतीस्त्रीपुसूषजंगस्फुरा॥ ॥

अचनेत्रस्फुरणः

तेनस्त्रीर्वाहतीसकलमातसंदुखजाततेत्रोपा

तेदीशतोचयनं ताशीकोतेचमत्तु तेन स्याच्च स्फुरतम
सकृत्संगारेनंगहेतुवाभेचैतत्फलं प्रवीफलं दक्षीणोवैप
रित्यं ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तेन फुरतको फल तेन काई परस्फुरतलये मरको दुखताशते
त्रका दुई कुतामा स्फुरतलये न प्रो प्री ता क काज गलाग को स्फुरत
लये मत्तु जाषा कात हती स्फुरतलये नये संग्राम माष दुहोस
यो पुत्तु को बासनाग मा जानु दक्षीणामा मजुल स्त्री का दक्षी
तमा मजुल बासनावी परीती अर्थात् पुजातु ॥ अथ प्रश्न प्रकरण ॥

तीष्णादीमुन प्रश्नमाह

तीक्ष्ण प्रहरं युक्ता ताका वारपी श्रीता ॥ अग्नीनी सुहरे
द्रागं शेषं सत्वरजसम् ॥ १ ॥ फल ॥ तीक्ष्ण स्नात्कारिके सत्त्वा
जसा तु वीरवता ॥ तस्य सा तीष्णं कार्यं शातं प्रश्नको नीदै ॥ १ ॥

प्रश्नपश्चात्कात्मा जो तीक्ष्ण वार तश्च प्रहरं तेस्को एकत्रागरे
इहेलागती गती तु शेषमा सत्वरजत प्रयो फसेल सहीत जालं
उंदाहरं तीक्ष्ण ५ वार ३ तश्च प्रहरं २ स्को एकत्रागर्तले १
मयोर्दस्को ३ तीगर्तले शेष २ हे सोरजोगुण फल कार्यमादी हो
हुन्द ३ रेहेता तस्य गुण फल कार्य तीष्ण फल एकारहेतो सत्त्वगुण
फल तत्कार्य सीद्धि यस्य प्रकारे प्रश्न फल जातु ॥ दासचक्र ॥

तण्कारिषे चक्रं सेवा र्थं न त्प संग्रहे ॥ तीर्षे त्रिष्वर्थ
लान्न स्यात्सुखे त्रिती वीता शते ॥ १ ॥ दृष्टी पैव च न चान्नी
पादेष दुदरी द्रुता ॥ पृथ्वे प्रागं देहो नानो वेदा शुभा
बह ॥ २ ॥ गुदे देन मपी डाच दस दसैक मर्चक ॥ एवं वा
मेताशकारं लपनात्वा श्रीता त कम् ॥ ३ ॥ ॥ ॥

ताकराकराषतातीतत मूर्त मरुष
 काचक्रहेषतुतेस्काईपरतक्षत्रकोत्पास
 गर्तुतोकरकातक्षत्रदेष्टीमाहीकातक्ष
 त्रतकगर्तुप्रथमश्चक्षत्रमस्तकपरफुल
 दुम्भलालमुषमाश्चक्षत्रपुलताशहृदय
 मापतक्षत्रपुलचक्रव्यासपादमाइतक्ष
 चपुलदरीदुपीचीमाश्चक्षत्रपुलप्राण
 कोशदेहतालीमाश्चक्षत्रपुलशुभगुह्यमाश्चक्षत्रपुलच
 येतवापीडादक्षीतहातमाश्चक्षत्रपुलदुष्प्राप्तीकामहा
 माश्चक्षत्रपुलतासकारकपेलोदाशचक्रजानु ॥ ॥ ॥

दास



दासीचक्र

दासीचक्रप्रवक्ष्यामीदासीनात्वाप्तीनांतकम् ॥ शी
 र्षत्रीणीमुषेत्रीणिस्वस्थपोश्चदयंमृतम् ॥ १ ॥ हृदये
 पंचवक्ष्यामीतालौपचक्रौकेकम् ॥ जातुद्वयेद्वये
 हेमपादयोश्चयंत्रयं ॥ २ ॥ फल ॥ शीरस्वातेनव
 ह्तालौमुषेहातीप्रजापते ॥ सकलेचस्वामीतो
 मत्पुहृदयेपुष्टीवर्जते ॥ ३ ॥ तालौहातीप्रद्वोक्तं
 भोगैवपलायनम् ॥ जानोशेवा
 ह्तालेलेनित्यंपादयोस्तुल्यतक्षप ॥ ४ ॥
 दाशीराषतेमूर्तबीकोजाकारचक्रले
 षतुतेस्कातक्षत्रकोत्पाशगर्तुदासीका
 तक्षत्रदेष्टीस्वामीकातत्रतकदेर्त्तुक्रम

दासी





मधुकमाप्रचम ३ तक्षत्र फललान मुषमा ३ फलहाती दुईका
तमा २ तक्षत्र फलस्वामी कोम्पु पु हृदपमा ५ फलशरीर मुष
तानीमा ५ फलहाती नगमा १ फललागुदी गोदाकाम
ईहामा २ तक्षत्र फलसेवाप्राप्ती पाईमा ६ तक्षत्र फलध
तक्षप यस्ता प्रकारे दाशी चक्रे हेतु ॥ ॥ ॥ ॥

गो वष मही पीक

शीर्षत्रयं मुखे देवपादेष्वेव वितीर्क्ष्यते ॥ हृयेपं
चक्रमुपासीते तेष्वेव नौके कर्क ॥ १ ॥ शीरस्योत्त
वेतु हस्तानो मुखे हाती प्रजायते ॥ पादयोर्वर्ततां
नस्यात् हृदये सोऽप्यवर्जतम् ॥ २ ॥ सतयोत्तुमाहा
तानो गुह्यस्योत्तम हृदम् ॥ अर्धमादीवां जे मं मा
ही प्यासूर्यनात्येता ॥ ३ ॥ ईषे मववेषे संयं की
शेषः पत्तु जाडश ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गाई गोसू के सी कीने मूर्त गाई को भाकारे लेषतु ईरा फालु
तो दे पी दीत तक्षत्र सहेतु क्रम प्रथम मधुकमा ३ फललान
मुषमा ३ फलहाती पाईमा ८ फल दुष्मलान हृदपमा ५ फल
मुषवृद्धि सतमा ८ फल महलान नगमा १ फलमाहाने पेपर
गोसू काचक्रमा पाईमा १ तक्षत्र जानु ले शीवक्रमा तक्षत्र साश
सूर्यका तक्षत्रे दे पी दीत तक्षत्र सप्तम पसे गाई गोसू के सी को का
का (चक्र जानु) ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



गाई



गोर



नेली



बोदा

अश्वचक्र

अश्वचक्रसूर्यलाञ्छेवसानो जीद्रातीवीर्यसेतः॥ पंचस
 कंचेजललातपृष्ठे तु दशकंसरोतः॥ १॥ पुच्छे शंखे द
 यप्राज्ञे चतुष्पादे चतुष्टयं॥ ईदरे पंचचीषायतीमुषधे
 च प्रकीर्तिते॥ २॥ फलं॥ सोलाप मर्चलान् अस्वीताशो
 रगानं गता॥ ताशश्च अर्चलान् अफलप्रोक्तं मतीषी
 ली॥ ३॥ ॥ ॥ ॥ ॥



पुत्रवतनसुताती

अवगासकर पुत्रवसुती कृतनचस पुष्पको मगरवी कुल
सुतजीववासरा कवीता पुंसवतादी कर्मसु ॥ १ ॥

अवगाहस पुत्रवसु मूल पुष्प मगरसीरा ईत अत्र मारवी मंगल गुप्त
ईवारमा लग्न मुदी हेरी पुसवत अर्थात् गर्ल मा पुरुष दोस य सका
रन प्रमगर्ल मा पोस स्कार गर्त दो आगल मा पोस स्कार कृता कृत ह
छो कर्म ३ मेरु को गर्ल न पक्षि गर्त ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ सात सीतीना दुवही ॥ रोज रोज मा जोती साको कीता पधीर्ज
मान ले जी रजु डाच बुद्ध स मेत गरी देवी दास हाई दीन पुष्प को ताप मा वीर को ठहरे
लेसा दोन को जी न बुद्धा ई लाली नीज जीर्ज मान ले पाता पाता मा मही वप गरी
नीज देवी दास हाई दीन को पो कीता प



आयाती जी मा पुद्गल च वेदा सजांती तो पा तदी रेच योज्या म् हु विनी लका

बही पच क म्पोरा म् म्मा जी वप स चर्डा म् म्पु ॥ ॥ बया १५ गत् १९ ६८ १०

अथ वि ५४ ऐलला ई सि गीती गाय का दिन ले मुन्दु तेला ५
५ नुँदो ना गल निरु पई का था डिमा ५ प वाकी ऐ म न्मा गे गे
को न य हई २ लता १२ को था डिमा सो हा ५ वाकी ऐ म
न्मा अज्ज को न य हई ३ लता ५ ऐ म न्मा लता को म
य ४ लता था डिमा सो हा वाकी ऐ म न्मा को म य ५ यो
था डिमा सो हा ५ यो वाकी ऐ म न्मा ऐ लता कल जा नु

नो

ममगामादहा/मा/क

वे/मि/न/वी/वा/द/वी/गा/सं/वा/ह/गा/दी/व/हु/ल/हा/न/हा/का/मी/नी
पु/न/हा/दी/हा/स/दा/मै/ग/हा/मै/ग/तो/द/हा/॥१॥ ॥ ॥ ॥

निका

म/नु/वी/वा/द/हो/ई/वा/ह/गा/दी/वी/गा/स/हा/ई/ल/हा/न/हा/ह/नी/प/न
म/ह/का/क/वी/हा/स/हा/ई/वा/स/क/ह/मै/ग/हा/द/व/हा/ई/य/ह/मै/ग
हा/र/हा/का/क/ह/जा/नी/य/॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

मै/ग/हा/न/हा/

उ/प/लो/क/कु/ल/लो/ग/व/पी/ना/वे/ग/ता/न/व/क/ल/ह/ल/ज/न/ने/भ/उ/ने/मा/ग/फ/ल/ह/॥
क/थि/ना/ने/प/ल/ना/व/वी/उ/वा/ल/व/व/दे/॥२॥ ॥ ॥

पी/का

पी/का

उ/व/ल/व/कु/ल/लो/ग/हो/ई/वे/ग/ता/हो/ई/लो/ज/न/ले/क/ल/ह/हो/ई/प/ल/ना/ज/न/॥
भा/ग/मे/क/ल/ज/ाने/ओ/आ/दि/ल/व/दे/ती/है/पी/दि/न/क/ह/ते/है/है/ह/क/ल/पि
ज/ना/को/है/॥२॥

प/न/ना/को/भो/क

प/न/प/न/न/म/प/र/वि/प/न/ना/य/मा/न/ने/ल/व/ल/व/क/ल/मो/ज/प/वे/क/॥
प/न/ल/न/ग/ना/न/ल/व/पी/न/व/ले/पु/दी/ने/का/का/ल/व/क/ल/॥३॥

पी/का

प/न/प/न/के/प/र/वि/क/ल/प/न/ना/म/म/क/ल/ओ/पु/न/मे/ज/य/क/ल/प/न/को
ल/को/ल/व/क/ल/पी/न/वी/पी/न/व/ल/से/उ/ल/क/ल/प/न/की/प/र/वि/क/ल/प/न/॥
प/न/प/न/को/क/ल/है/॥३॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

...
 ...
 ...
 ...
 ...

2454

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...

...
 ...
 ...